

॥ नमः श्रीपूज्यपादाय ॥

सनातनजैनग्रंथमाला ।
१२

काव्यतीर्थ व्याकरणशास्त्रि–श्रीश्रीलालजैनकृत

संस्कृतप्रवेशिनी

प्रथमभाग ।

जिसको
गांधीहरिभाईदेवकरण एंड सन्स द्वारा सरक्षित
भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाके महामंत्री
श्रीपन्नालाल बाकलीवालने
आकलूजनिवासी स्वर्गीय श्रेष्ठिवर्य–
नाथारंगजी गांधीके स्मरणार्थ
कलिकाताके
९, विश्वकोष लेन बागबाजार विश्वकोष प्रेसमें,
श्रीराखालचंद्र मित्रके प्रबंधसे छपाकर प्रकाशित किया ।

वीर निर्वाण संवत् २४४२

प्रथमावृत्ति | ईशवीय सन् १९१६ | मूल्य १) रुपया ।

वक्तव्य।

महाशय!

इस पुस्तकके लिखे जानेमें दो प्रधान कारण हैं एकतो आजकल अंग्रेजी स्कूलोंमें जो संस्कृत सिखानेवाली पुस्तकें पढाई जाती हैं उनसे अधिक परिश्रम करनेपर भी फल कम होता है विद्यार्थी रात्रि दिन रूप रटते २ थक जाते हैं पर उनका ज्ञान नहीं होता यदि किसी अपरिचित शब्दके रूप बनाने होते हैं तो पहिले कठ किये हुये शब्दके रूप बनाते हैं और फिर उस शब्दके। इस तरह एकता अनुवाद करनेमें अधिक समय लगता है और दूसरे कठ किये हुये शब्दके रूपमें भ्रम होनेसे उसके समान अन्य शब्दके रूपमें भी भ्रांति हो जाती है इत्यादि कठिनाइयोंके वशीभूत हो हमारे नव युवक संस्कृतको अतिक्लिष्ट और अगम्य समझकर पढना छोड बैठते हैं जिससे कि इस पवित्र विद्याका प्रतिदिन ह्रास होता चला जाता है। दूसरा कारण यह है कि हमारे पुरातन पद्धतिसे पढने वाले महाशय व्याकरणादि विषयोंमें तो अति निष्णात हो जाते हैं परन्तु उनको अनुवाद करना बिलकुल नहीं आता यदि कभी संस्कृतमें वार्तालापादि करनेका काम पड जाता है तो दो चार शब्द भी नहीं बोल सकते। जिससे कि परीक्षार्थीगण उत्साह हीन हो जाते हैं और पढना छोड बैठते हैं। बस इन्हीं दो कारणोंके वशीभूत हो हम इस पुस्तकके निर्माण और प्रकाशनमें बाध्य हुये हैं। इस पुस्तकके दो भाग हैं जिसमेंसे प्रथम भागमें शब्दोंके प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन विभक्तिके, धातुओंमें भ्वादि और तुदादि गणीय धातुओंके वर्तमान, भूत भविष्यत और आज्ञा अर्थके रूप बतलाये गये हैं अन्य पुस्तकोंमें इट्, अनिट्,

धातु प्रत्यय आदि सुगम रीतिसे नहीं बतलाये हैं जिससे कि लिट्, लुङ् आदि लकारोंके रूप समझमें नहीं आते सो इसमें वह कठनाई नहीं है उसके जाननेके लिये धातुमें एक अनुबंध लगा दिया है जिससे विद्यार्थीको पढ़नेमें अति सुगमता होती है छोटेसे लेकर बड़े बूढ़े सब लोग इसको पढ़ सक्ते हैं। दूसरे भागमें शेष कुल विभक्ती और धातुओंके रूप प्रयोग सहित बतलाये गये हैं। इसलिये इन दोनों भागोंके पढ़ लेनेसे संस्कृतमें अनुवाद, पत्र, लेख आदिका लिखना, वार्तालापका करना, संस्कृत ग्रंथोंका समझना भली भांति आसकता है।

कलकत्ता। } वशंवद
२५ माघ सन् १९१६। } श्रीश्रीलाल जैन।

विद्यार्थियोंको सूचना

पढ़ते समय पाठके ऊपर दिये गये हेडिंग (शिरनाम) के अनुसार शब्दोंके रूपोंको विचारना चाहिये कि इसमें छिद्रोंसे क्या विशेषता है। अर्थात् जैसे कि पहिला पाठ पढ़ना है उसके ऊपर हेडिंगमें 'भ्वादि और तुदादि गणीय धातुओंके वर्तमान कालके रूप और उनका पुलिंग अकारांत शब्दोंके कर्ता तथा कर्मके रूपोंके साथ प्रयोग" ऐसा लिखा है तो समझना चाहिये कि—इस पाठमें जिन शब्दोंके आखिरमें 'अ' है उस शब्दके कर्ता तथा कर्मके रूप बतलाये हैं इसलिये जिसके ऊपर कर्ता लिखा है वह कर्ताका और जिसके

ऊपर कर्म लिखा है यह कर्मका रूप है और जिसके बाई तरफ १ लिखा है वहांसे आगे एक वचन २ लिखा है वहांसे आगे द्विवचन और ३ लिखा है वहांसे आगे बहुवचनके कर्ता, कर्म और क्रियाके रूप समझाये गये हैं। संस्कृतमें उदाहरण "जैन जिनं अर्चति" है और हिंदीमें "जैन जिनको पूजता है" ऐसा है। हिंदीसे संस्कृतमें केवल इतनी ही विशेषता है कि कर्ताके एकवचनमें विसर्ग (:) और कर्मके एकवचनमें अनुस्वार ( ) लग गया है क्रियाका रूप बिलकुल दूसरा है इसी तरह जितने उदाहरण दिये हैं उन सबमें और अपने मनसे विचारे हुये अन्यशब्दोंमें भी यही बात घटा लेनी चाहिये। इस प्रकार करनेसे शब्दोंके रूप भली भांति ध्यानमें आजायेंगे और कालांतरमें भी विस्मृत न होंगे जब इस तरह रूप पक्के हो जांय तब पाठमें दिये गये अशुद्ध शुद्ध भागको विचारे। बादको "नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ" के नीचे लिखे हुये शब्दोंमें यदि कर्ताका रूप है तो कर्म, क्रिया, कर्मका रूप है तो कर्ता, क्रिया और क्रियाका रूप है तो कर्ता कर्म किसी न किसी शब्दका जिसका कि अर्थ ठीक बैठता हो बना २ कर लिखे और फिर संस्कृत हिंदीका अनुवाद करना प्रारंभ करे। अनुवादमें कर्ताके अनुसार क्रियाका विशेष ध्यान रहना चाहिये अर्थात् कर्ता एक वचन हो तो क्रिया भी एक वचनकी, कर्ता द्विवचन हो तो क्रिया भी द्विवचनकी और कर्ता बहुवचनका हो तो क्रिया भी बहु वचनकी रखनी चाहिये। कर्मके लिये कोई नियम नहीं है। कर्म चाहे एक वचन हो चाहे द्विवचन हो और चाहे बहुवचन हो उसके कारणसे कर्ता अथवा क्रियामें कोई विकार नहीं होगा।



नमः श्रीपूज्यपादाय ।

सनातनजैनग्रंथमाला ।

१२

संस्कृत-प्रवेशिनी ।

(प्रथमभाग)

मङ्गलाचरण ।

नत्वाऽखिलज्ञं खिलभूयमाप्त
खुनाथ्वलानामखिलक्रियाणां ।
रचामि रुच्याशयविबोधनाय
प्रवेशिनीं संस्कृतसंस्कृतस्य ॥१॥

(भ्वादि और तुदादिगणकी धातुओंके वर्तमानकालके रूप
और उनका अकारांत पुंलिंग शब्दोंके कर्ता
तथा कर्मके रूपके साथ प्रयोग)

(सूचना—विद्यार्थियोंको चाहिये कि शब्दोंके कर्ता कर्मके रूपोंको अच्छी भांति ध्यानमें रक्खें तथा जितने शब्द उनको मालूम मिलें उनको उसीतरह कर्ता और कर्म में बना बना कर प्रयोग करें । तत्पश्चात् रूपोंके दृढ हो जानेपर पाठमें दियेहुये वाक्योंको पढ़ें । इसतरह करनेसे रूपोंके रटनेकी आवश्यकता न होगी ।)

प्रथम पाठ ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता (१)	कर्म (२)	क्रिया (३)
१ ।	जैन	जिन	अर्चति ।	जैनी	जिन भगवानको	पूजता है ।
	बालक	ग्रंथ	पठति ।	बालक	ग्रंथ	पढ़ता है ।
	छात्र	पत्र	लिखति ।	विद्यार्थी	पत्र	लिखता है ।
	जन	अर्थ	इच्छति ।	मनुष्य	धन	चाहता है ।
	क्षत्रिय	ग्राम	रक्षति ।	क्षत्रिय	ग्रामकी	रक्षा करता है ।
	दहन	वृक्ष	दहति ।	अग्नि	वृक्ष	जलाती है ।
	शिष्य	आश्रम	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमको	जाता है ।
	अश्व	घास	खादति ।	घोड़ा	घास	खाता है ।
	पाठक	छात्र	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है



२ ।	पुरुषौ	जिनौ	अर्चत ।	दो पुरुष	दो जिन भगवान्को	पूजते हैं ।
	बालकौ	ग्रंथौ	पठत ।	दो बालक	दो ग्रंथ	पढ़ते हैं ।
	छात्रौ	पत्रौ	लिखत ।	दो विद्यार्थी	दो पत्र	लिखते हैं ।
	बालौ	मोदकौ	इच्छत ।	दो बालक	दो लड्डू	चाहते हैं ।
	क्षत्रियौ	ग्रामौ	रक्षत ।	दो क्षत्रिय	दो ग्रामकी	रक्षा करते हैं ।
	अनलौ	वृक्षौ	दहत ।	दो अग्नि	दो वृक्षोंको	जलाती हैं ।
	शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छत ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोंको	जाते हैं ।
	सिंहौ	मानुषौ	खादत ।	दो सिंह	दो मनुष्योंको	खाते हैं ।
	पाठकौ	प्रश्नौ	पृच्छत ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं ।

१। जो क्रियाको करे उसे कर्ता कहते हैं। २। कर्ता अपनी क्रियासे जिसको करे उसे कर्म कहते हैं। ३। कर्ताके [illegible] व्यापारको क्रिया कहते हैं। अथवा वाक्यके अर्थको पूर्ण कर दे वो क्रिया है।

३। बालकाः ग्रन्थान् पठन्ति।	अनेक बालक	अनेक ग्रन्थ	पढ़ते हैं।
छात्राः ग्रन्थान् लिखन्ति।	अनेक विद्यार्थी	अनेक ग्रन्थ	लिखते हैं।
बालाः मोदकान् इच्छन्ति।	अनेक बालक	अनेक मोदक	चाहते हैं।
क्षत्रियाः ग्रामान् रक्षन्ति।	अनेक क्षत्रिय	अनेक ग्रामोंकी	रक्षा करते हैं।
पावकाः वृक्षान् दहन्ति।	अनेक अग्नि	अनेक वृक्षोंको	जलाती है।
सज्जनाः आश्रमान् गच्छन्ति।	अनेक सज्जन	अनेक आश्रमोंको	जाते हैं।
सिंहाः मानुषान् खादन्ति।	अनेक सिंह	अनेक मनुष्योंको	खाते हैं।
पाठकाः प्रश्नान् पृच्छन्ति।	अनेक अध्यापक	अनेक प्रश्न	पूछते हैं।

धात्वर्थ(१)

धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पढ़ना	(पठ्+अ+ति३)	पठति	पठतः	पठन्ति।
लिख	लिखना	(लिख्+अ+ति)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति।
इषु	चाहना	(इच्छ्+अ+ति)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति।
रक्ष	रक्षाकरना	(रक्ष्+अ+ति)	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति।
दहो	जलाना	(दह्+अ+ति)	दहति	दहतः	दहन्ति।
गम्लृ	जाना	(गच्छ्+अ+ति)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति।
खादृ	खाना	(खाद्+अ+ति)	खादति	खादतः	खादन्ति।
प्रच्छो	पूछना	(पृच्छ्+अ+ति)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति।

१। धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही याद करना चाहिये। २। धातु तीन प्रकारकी होती है परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। जिन धातुमें ञ लगा हो वह उभयपदी, जिसमें ङे अथवा ङ लगा हो वह आत्मनेपदी और जिसमें ञ ए ङ् ये न लगे हों सब परस्मैपदी है। ३। परस्मैपदी धातुके अन्य पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें तः और बहुवचनमें अन्ति प्रत्यय लगता है।

प्रथम पाठ ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता (१)	कर्म (२)	क्रिया (३)
१। जैन	जिन	अर्चति।	जैनी	जिन भगवानको	पूजता है।
बालक	ग्रंथ	पठति।	बालक	ग्रंथ	पढ़ता है।
छात्र	ग्रंथ	लिखति।	विद्यार्थी	ग्रंथ	लिखता है।
जन	अर्थं	इच्छति।	मनुष्य	धन	चाहता है।
क्षत्रिय	ग्राम	रक्षति।	क्षत्रिय	ग्रामकी	रक्षा करता है।
दहन	वृक्ष	दहति।	अग्नि	वृक्ष	जलाती है।
शिष्य	आश्रम	गच्छति।	शिष्य	आश्रमको	जाता है।
अश्व	घास	खादति।	घोड़ा	घास	खाता है।
पाठक	छात्र	पृच्छति।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है

२। पुरुषौ	जिनौ	अर्चत ।	दो पुरुष	दो जिन भगवान्‌को	पूजते हैं।
बालकौ	ग्रंथौ	पठत ।	दो बालक	दो ग्रंथ	पढ़ते हैं।
छात्रौ	ग्रंथौ	लिखत ।	दो विद्यार्थी	दो ग्रंथ	लिखते हैं।
बालौ	मोदकौ	इच्छत ।	दो बालक	दो लड्डू	चाहते हैं।
क्षत्रियौ	ग्रामौ	रक्षत ।	दो क्षत्रिय	दो ग्रामकी	रक्षा करते हैं।
दहनौ	वृक्षौ	दहत ।	दो अग्नि	दो वृक्षोंको	जलाती हैं।
शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छत ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोंको	जाते हैं।
सिंहौ	मानुषौ	खादत ।	दो सिंह	दो मनुष्योंको	खाते हैं।
पाठकौ	प्रश्नौ	पृच्छत ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं।

१। जो क्रियाको करे उसे कर्ता कहते हैं। २। कर्ता अपनी क्रियासे जिसको करे उसे कर्म कहते हैं। ३। कर्ताके [illegible] व्यापारको क्रिया कहते हैं। अथवा धातुके अर्थको पूरा कर दे सो क्रिया है।

२। बालकाः ग्रन्थान् पठन्ति। अनेक बालक अनेक ग्रन्थ पढते हैं।
छात्राः ग्रन्थान् लिखन्ति। अनेक विद्यार्थी अनेक ग्रन्थ लिखते हैं।
बालाः मोदकान् इच्छन्ति। अनेक बालक अनेक मोदक चाहते हैं।
क्षत्रियाः ग्रामान् रक्षन्ति। अनेक क्षत्रिय अनेक ग्रामोंकी रक्षा करते हैं।
पावकाः वृक्षान् दहन्ति। अनेक अग्नि अनेक वृक्षोंको जलाती हैं।
सज्जनाः आश्रमान् गच्छन्ति। अनेक सज्जन अनेक आश्रमोंको जाते हैं।
सिंहाः मानुषान् खादन्ति। अनेक सिंह अनेक मनुष्योंको खाते हैं।
पाठकाः प्रश्नान् पृच्छन्ति। अनेक अध्यापक अनेक प्रश्न पूछते हैं।

धात्वर्थ(१)

धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पढना	(पठ्+अ+ति३)	पठति	पठतः	पठन्ति।
लिख	लिखना	(लिख्+अ+ति)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति।
इषु	चाहना	(इच्छ्+अ+ति)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति।
रक्ष	रक्षाकरना	(रक्ष्+अ+ति)	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति।
दहौ	जलाना	(दह्+अ+ति)	दहति	दहतः	दहन्ति।
गम्लृ	जाना	(गच्छ्+अ+ति)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति।
खादृ	खाना	(खाद्+अ+ति)	खादति	खादतः	खादन्ति।
प्रच्छौ	पूछना	(पृच्छ्+अ+ति)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति।

१। धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही याद करना चाहिये। २। धातु तीन प्रकारकी होती है परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। जिस धातुमें ञ लगा हो वह उभयपदी, जिसमें ऐ अथवा ङ लगा हो वह आत्मनेपदी और जिसमें ञ् ए ङ् ये न लगे होंवे सब परस्मैपदी हैं। ३। परस्मैपदी धातुके अन्य पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें तः और बहुवचनमें अन्ति प्रत्यय लगता है।

प्रथम पाठ ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता (१)	कर्म (२)	क्रिया (३)
१ ।	जैन	जिन	अर्चति ।	जैनी	जिन भगवानको	पूजता है ।
	बालक	ग्रंथ	पठति ।	बालक	ग्रंथ	पढ़ता है ।
	छात्र	ग्रंथ	लिखति ।	विद्यार्थी	ग्रंथ	लिखता है ।
	जन	धन	इच्छति ।	मनुष्य	धन	चाहता है ।
	क्षत्रिय	ग्राम	रक्षति ।	क्षत्रिय	ग्रामकी	रक्षाकरता है ।
	दहन	वृक्ष	दहति ।	अग्नि	वृक्ष	जलाती है ।
	शिष्य	आश्रम	गच्छति ।	शिष्य	आश्रमको	जाता है ।
	अश्व	घास	खादति ।	घोड़ा	घास	खाता है ।
	पाठक	छात्र	पृच्छति ।	अध्यापक	विद्यार्थीको	पूछता है

---

२ ।	पुरुषौ	जिनौ	अर्चतः ।	दो पुरुष	दो जिन भगवान्को	पूजते हैं ।
	बालकौ	ग्रंथौ	पठतः ।	दो बालक	दो ग्रंथ	पढ़ते हैं ।
	छात्रौ	ग्रंथौ	लिखतः ।	दो विद्यार्थी	दो ग्रंथ	लिखते हैं ।
	बालौ	मोदकौ	इच्छतः ।	दो बालक	दो लड्डू	चाहते हैं ।
	क्षत्रियौ	ग्रामौ	रक्षतः ।	दो क्षत्रिय	दो गांवकी	रक्षा करते हैं ।
	अनलौ	वृक्षौ	दहतः ।	दो अग्नि	दो वृक्षोंको	जलाती हैं ।
	शिष्यौ	आश्रमौ	गच्छतः ।	दो विद्यार्थी	दो आश्रमोंको	जाते हैं ।
	सिंहौ	मानुषौ	खादतः ।	दो सिंह	दो मनुष्योंको	खाते हैं ।
	पाठकौ	प्रश्नौ	पृच्छतः ।	दो अध्यापक	दो प्रश्न	पूछते हैं ।

१। जो क्रियाको करे उसे कर्ता कहते हैं। २। कर्ता अपनी क्रियासे जिसको करे उसे कर्म कहते हैं। ३। कर्ताके हलनचलनादिरूप व्यापारको क्रिया कहते हैं। अथवा वाक्यके अर्थको पूर्ण कर दे सो क्रिया है।

३। बालकाः ग्रन्थान् पठन्ति। अनेक बालक अनेक ग्रन्थ पढ़ते हैं।
छात्राः ग्रन्थान् लिखन्ति। अनेक विद्यार्थी अनेक ग्रन्थ लिखते हैं।
बालाः मोदकान् इच्छन्ति। अनेक बालक अनेक मोदक चाहते हैं।
क्षत्रियाः ग्रामान् रक्षन्ति। अनेक क्षत्रिय अनेक ग्रामोंकी रक्षा करते हैं।
पावकाः वृक्षान् दहन्ति। अनेक अग्नि अनेक वृक्षोंको जलाती हैं।
सज्जनाः आश्रमान् गच्छन्ति। अनेक सज्जन अनेक आश्रमोंको जाते हैं।
सिंहाः मानुषान् खादन्ति। अनेक सिंह अनेक मनुष्योंको खाते हैं।
पाठकाः प्रश्नान् पृच्छन्ति। अनेक अध्यापक अनेक प्रश्न पूछते हैं।

धात्वर्थ(१)

धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ(२)	पढ़ना	(पठ्+अ+तिङ्)	पठति	पठतः	पठन्ति।
लिख	लिखना	(लिख्+अ+ति)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति।
इषु	चाहना	(इच्छ्+अ+ति)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति।
रक्ष	रक्षाकरना	(रक्ष्+अ+ति)	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति।
दहौ	जलाना	(दह्+अ+ति)	दहति	दहतः	दहन्ति।
गम्लृ	जाना	(गच्छ्+अ+ति)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति।
खादृ	खाना	(खाद्+अ+ति)	खादति	खादतः	खादन्ति।
प्रच्छौ	पूछना	(पृच्छ्+अ+ति)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति।

१। धातु जिस तरहकी लिखी है वैसीही याद करना चाहिये। २। धातु तीन प्रकारकी होती है परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। जिस धातुमें ञ् लगा हो वह उभयपदी, जिसमें ऐ अथवा ङ् लगा हो वह आत्मनेपदी और जिसमें ञ् ए ङ् ये न लगे होवें सब परस्मैपदी है। ३। परस्मैपदी धातुके अन्य पुरुषके एकवचनमें ति, द्विवचनमें तः और बहुवचनमें अन्ति प्रत्यय लगता है।

शुद्ध।			अशुद्ध।		
जिनाः।	धर्मं	दिशति।	जिना	धर्मं	दिशति।
बालकाः	पथ	पठति।	बालका	पथ	पठन्ति।
क्रोधः	पुरुष	दहन।	क्रोध	पुरुषं	दहति।
सारमौ	तडाग	गच्छति।	सारमौ	तडाग	गच्छत।
पण्डितान्	ग्रंथान्	पठति।	पंडिता	ग्रंथान्	पठति।
अनलं	ग्राम	दहति।	अनल	ग्राम	दहति।
धार्मिकौ	शिव	इच्छति।	धार्मिक	शिव	इच्छति।
बालक	लाजा	खादति।	बालका	लाजान्	खादति।
अश्वौ	घास	खादत।	अश्वौ	घास	खादत।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

मूर्खौ, कोदण्डान्, दहति, रक्षत, गच्छति, नमति, ग्राम, आचार्यां ग्रंथान्, पृच्छति खादति, सेवकान्, क्रीडत, पठति।

हिंदी बनाओ—

सेना जिनं अर्चति। गज तडागं गच्छति। जन स्वर्गं इच्छति। सूपकार ओदनं पचति (पकाता है)। बुधा धर्मं इच्छंति। पंडिता न खेलंति। कर्णधार (मल्लाह) नदं तरति। अश्वा समारं तरंति।

संस्कृत बनाओ—

विद्यार्थी हसते हैं। धन (अर्थ) सुख देता है (यच्छति)। लडका कालिजको (विद्यालय) जाता है। किसान (कृषीवल) अनाज बोता (वपति) है। मेघ समुद्रको जाते हैं।

	एक०	द्वि०	बहु
कर्ता (प्र० वि०)	धर्मः	धर्मौ	धर्मा
कर्म (द्वि० वि०)	धर्मं	,,	धर्मान्

इसी प्रकार जिन (सर्वाग्नि शिव) अकारांत शब्दोंके रूप होते है।

द्वितीय पाठ ।

इकारांत पुंलिंग ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ ।	मुनिः	गिरिं	गच्छति ।	मुनि	पर्वतको	जाता है ।
	ऋषिः	नृपतिं	वदति ।	ऋषि	राजाको	कहता है ।
	अहिः	कपिं	दशति ।	सांप	बंदरको	काटता है ।
२ ।	मुनी	गिरी	गच्छतः ।	दो मुनि	दो पर्वतोंको	जाते हैं ।
	ऋषी	नृपती	वदतः ।	दो ऋषि	दो राजाओंको	कहते हैं ।
	अही	कपी	दशतः ।	दो सांप	दो बंदरोंको	काटते हैं ।
३ ।	मुनयः	गिरीन्	गच्छन्ति ।	मुनिलोग	पर्वतोंको	जाते हैं ।
	ऋषयः	नृपतीन्	वदन्ति ।	ऋषि	राजाओंको	कहते हैं ।
	अहयः	कपीन्	दशन्ति ।	सांप	बंदरोंको	काटते हैं ।

धात्वर्थ

वद	बोलना	(वद्+अ+ति)	वदति	वदतः	वदन्ति
दंश	काटना	(दंश+अ+ति)	दशति	दशतः	दशन्ति

अशुद्ध			शुद्ध		
कपयः	गिरिं	गच्छति ।	कपयः	गिरिं	गच्छन्ति ।
मुनिः	यतिं	पृच्छतः ।	मुनिः	यतिं	पृच्छति ।
अही	भेकाम्	खादन्ति ।	अही	भेकान्	खादतः ।
कविः	ग्रन्थान्	रचन्ति ।	कवयः	ग्रन्थान्	रचन्ति ।
ऋषयः	शिष्यान्	उपदिशति ।	ऋषिः	शिष्यान्	उपदिशति ।
अग्नयः	वृक्षान्	दहतः ।	अग्नी	वृक्षान्	दहतः ।
नृपतिः	मुनयः	वदति ।	नृपतिः	मुनीन्	वदति ।
अहयः	कपिं	दशति ।	अहयः	कपीन्	दशन्ति ।

शुद्ध करो—

शिष्य यतय अनुगच्छति। अग्निः धूमं वहंति। जन मोक्षं इच्छत। मुनी गच्छति। यति लोचं रचति। अतिथि श्रावक आगच्छति। श्रावक अभक्ष्य न खादन्ति। छात्र सम्मतिं पठंति।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अतय, यतीन् मुनि विधि, रवि, गच्छत पठति, दयत, क्षिपति, इच्छंति, निंदति।

संस्कृत बनाओ—

विद्यार्थी गुरुके पीछे पीछे चलता है। श्रावक मुनियोंको पूजते हैं। मुनिलोग धर्मका उपदेश देते हैं (उपदिशंति)। छात्रो तलावको जाता है। रामदास दुश्मनकी निंदा करता है (निंदति)। नौकर बोझा ढोता (वहति) है। विद्यार्थी गुरुको पूजता है।

एक एक शब्द रखकर इन वाक्योंको पूरा करो—

कमठ पार्श्वनाथ———, रवि कर———, श्रावक मूलगुण———, यति भ्रम——— ———निपतति, नर ———इच्छति ———सज्जन निंदति।

प्रथमा—मुनि मुनी मुनय।

द्वितीया—मुनिं ,, मुनीन्।

तृतीय पाठ।

उकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	गुरु	शिष्य	पृच्छति।	गुरु	लड़केको	पूछता है।
	साधु	मेरु	गच्छति।	साधु	सुमेरुपर्वतको	जाता है।
	भानु	अंशु	विकिरति।	सूरज	किरणको	फैलाता है।
	प्रभु	तरु	कृन्तति।	स्वामी	वृक्षको	काटता है।

२ गुरू	शिशू	वदत: ।	दो गुरु	दो लड़कोंको	कहते हैं ।
साधू	मेरू	गच्छत: ।	दो साधु	दो सुमेरु पर्वतोंको	जाते हैं ।
भानू	अंशू	विकिरत: ।	दो सूरज	किरणोंको	फैलाते हैं
प्रभू	तरू	कृन्तत: ।	दो मालिक	दो वृक्षोंको	काटते हैं ।
३ गुरव:	शिशून्	पृच्छति ।	गुरु	विद्यार्थियोंको	पूछते हैं ।
साधव:	मेरून्	गच्छति ।	साधु	मेरुओंको	जाते हैं ।
भानव:	अंशून्	विकिरति ।	सूरज	किरणोंको	फैलाते हैं ।
प्रभव:	तरून्	कृन्तति ।	मालिक	वृक्षोंको	काटते हैं ।

अशुद्ध			शुद्ध		
गुरव:	छात्रान्	उपदिशति ।	गुरव:	छात्रान्	उपदिशन्ति ।
इन्दु	अंशून्	विकिरति ।	इन्दु:	अंशून्	विकिरति ।
वैद्य	बाहव	कृन्तति ।	वैद्य:	बाहून्	कृन्तति ।
विष्णु:	पर्वत	व्रजत ।	विष्णु:	पर्वतं	व्रजति ।
परशु	वृक्षान्	कृन्तति ।	परशु:	वृक्षान्	कृन्तति ।
विभावसु	तरव	दहति ।	विभावसु:	तरून्	दहति ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

बन्धु, प्रभु, परशु, अर्चति, अर्दति, व्रजति, तरु, विभावसु, शत्रु, साधु, पचति, क्रतु, तपति ।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
क्रदि	रोना	(क्रन्द्+अ+ति)	क्रन्दति	क्रन्दत:	क्रन्दन्ति ।
खेल	खेलना	(खेल्+अ+ति)	खेलति	खेलत:	खेलन्ति ।
अर्द	पीड़ा देना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दत:	अर्दन्ति ।
अर्च	पूजा करना	(अर्च्+अ+ति)	अर्चति	अर्चत:	अर्चन्ति ।
दिश	आज्ञा देना	(दिश्+अ+ति)	दिशति	दिशत:	दिशन्ति ।

भज भजना (भज्+अ+ति) भजति भजतः भजन्ति।
कृती छेदना (कृत्+अ+ति) कृन्तति कृन्ततः कृन्तन्ति।
चुबि चूमना (चुम्ब+अ+ति) चुम्बति चुम्बतः चुम्बन्ति।
प्रछ (पृच्छ) पूछाकरना (पृच्छ्+अ+ति) पृच्छति पृच्छतः पृच्छन्ति।

संस्कृत करो—

भक्त भजता है। दुर्जन सज्जनको दुःख देता है। [illegible] चलता है। बढ़ई (काठ) वनको काटता है। मनुष्य साधुओंको पूछते हैं। माता बच्चेको चूमती है।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

—— इन्दु पृच्छति काष्ठं —— कृन्तति, स शव —— चुम्बति। —— भानु पश्यति, —— [illegible] पश्यति।

उकारान्त पुंलिंग शिशु शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया—	शिशुम्	,,	शिशून्

चतुर्थ पाठः।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	ग्रहीता	दातारं	पश्यति।	लेनेवाला	दाताको	देखता है।
	वक्ता	श्रोतारं	वदति।	वक्ता	श्रोताको	कहता है।
	भर्ता	कर्तारं	पृच्छति।	स्वामी	कर्ताको	पूछता है।
	नेता	योद्धारं	वदति।	लेजानेवाला	योद्धाको	कहता है।
२	ग्रहीतारौ	दातारौ	पश्यतः।	दो ग्रहीता	दो दाताओंको	देखते हैं।
	वक्तारौ	श्रोतारौ	वदतः।	दो वक्ता	दो श्रोताओंको	कहते हैं।
	भर्तारौ	कर्तारौ	पृच्छतः।	दो स्वामी	दो कर्ताओंको	पूछते हैं।
	नेतारौ	योद्धारौ	वदतः।	दो लेजानेवाले	दो योद्धाओंको	कहते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
३ गृहीतारः	दातॄन्	अर्चन्ति।	अनेक गृहीता अनेक दाताओंको पूजते है।		
वक्तारः	श्रोतॄन्	वदन्ति।	अनेक वक्ता अनेक श्रोताओंको कहते है।		
भर्तारः	कर्तॄन्	पृच्छन्ति।	अनेक स्वामी अनेक कर्ताओंको पूछते है।		
जेतारः	योद्धॄन्	गदन्ति।	अनेक जीतनेवाले अनेक योद्धाओंको कहते हैं।		

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वद	कहना	(वद्+अ+ति)	वदति	वदतः	वदन्ति।
गद	„	(गद्+अ+ति)	गदति	गदतः	गदन्ति।
हृ	हरना	(हर्+अ+ति)	हरति	हरतः	हरन्ति।
स्पृशी	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति।
अर्ह	पूजना	(अर्ह्+अ+ति)	अर्हति	अर्हतः	अर्हन्ति।
रक्ष	रक्षा करना	(रक्ष्+अ+ति)	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति।
(उप)दिशौज्	उपदेशदेना	(दिश्+अ+ति)	दिशति	दिशतः	दिशन्ति।
कृती	छेदना (काटना)	(कृत्+अ+ति)	कृन्तति	कृन्ततः	कृन्तन्ति।
अर्द	पीडादेना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दतः	अर्दन्ति।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
जेतार	योद्धॄन्	गदति।	जेतारः	योद्धॄन्	गदन्ति।
श्रोता	वक्तार	वदन्ते।	श्रोता	वक्तारं	वदति।
भर्तारौ	भृत्य	आदिशति।	भर्तारौ	भृत्यं	आदिशतः।
गृहीता	दाता	अर्चन्ति।	गृहीता	दातारं	अर्चति।
दोग्धा	कर्तार	पृच्छति।	दोग्धा	कर्तारं	पृच्छति।
भर्तार	हर्ता	गदति।	भर्ता	हर्तारं	गदति।
उपदेष्टारः	श्रोतार	गदति।	उपदेष्टा	श्रोतारं	गदति।

संस्कृत।			हिन्दी।		
हर्तारं	धनवान्	स्मरति।	हर्ता	धनवान्	पश्यति।
भर्ता	भृत्यान्	रक्षति।	भर्तारं	भृत्याः	रक्षन्ति।

निम्नलिखित शब्दोंको यथायोग्य स्थानपर रखकर वाक्य बनाओ—

पश्यति, जेतारं, कर्ता, धर्मात्मा, साधून् पृच्छति पश्यति, भर्तारं, वचनं पृच्छति, जेतृन्, नदत , वदति।

अनुवाद करो—

नेता घटं स्पृशति। श्रोतारः दातारं पृच्छन्ति। साधुः श्रोतृन् उपदिशति। सविता (सूर्य) गिरिं स्पृशति। प्रभुः कर्ता भवति। श्रोतारः गुरुं नमन्ति। जेतारौ नेतारं पृच्छतः। याचकः नप्तृन् हसति।

संस्कृत बनाओ—

दाता गरीबको पूछता है। गरीब दाताको पूजा करता है। मालिक चोर (हर्तृ)को शिक्षा करता है। पूछनेवाला (प्रष्टृ) गुरुको पूछता है। विद्यार्थी गुरुको पूजा करता है। नाती (नप्तृ) बाजार (हाट)को जाता है।

	एक॰	द्वि॰	बहु॰
प्रथमा —	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया —	दातारं	,,	दातृन्

पंचम पाठ।

व्यंजनांत पुंलिंग।

चकारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ जलमुच्	गिरिं	स्पृशति।	मेघ	पर्वतको	छूता है।
बालकः	जलमुचं	पश्यति।	बालक	मेघको	देखता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
पवन	जलमुच	विकिरति।	हवा	मेघको	फैलाती है।
पयोमुक्	चातक	अवति।	मेघ	चातकको	सन्तुष्ट करता है।
चातक	पयोमुच	कांक्षति।	चातक	मेघको	चाहता है।
२ जलमुचौ	गिरी	स्पृशत।	दो मेघ	दो पर्वतोंको	छूते हैं।
वात	जलमुचौ	विकिरत।	हवा	दो मेघोंको	बिखेरती है।
जलमुचौ	चातक	अवत।	दो मेघ	चातकको	सन्तुष्ट करते हैं।
३ वारिमुच	गिरि	स्पृशंति।	अनेक मेघ	पर्वतको	छूते हैं।
चातका	वारिमुच	कांक्षति।	अनेक चातक	अनेक मेघोंको	चाहते हैं।
पवन	पयोमुच	विकिरति।	(हवा)	अनेक मेघोंको	बखेरती है।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

पयोमुक, वारिमुच, पर्वत, अवत, कांक्षति, पश्यति, जलमुच, पचंत, विकिरति, स्पृशत।

शुद्ध करो—

चातका वारिमुच कांक्षति। जलमुच चातकान् अवंति। पयोमुचो पर्वत स्पृशति। वायु पयोमुक् वर्दति।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

——पयोमुच पश्यति। पयोमुक् —— अवति।—— जलमुच ——। ——जल विकिरति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा —	जलमुक् (ग्)	जलमुचौ	जलमुच
द्वितीया —	जलमुच	"	"

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
कांक्षि	चाहना	(कांक्ष्+अ+ति)	कांक्षति	कांक्षत	कांक्षंति।
अव	सन्तुष्टकरना	(अव+अ+ति)	अवति	अवत	अवंति।

दृशिरो (पश्य) देखना (पश्य+अ+ति) पश्यति पश्यत पश्यति ।
कृ विखेरना (किर्+अ+ति) किरति किरत किरति ।

षष्ठ पाठ ।

जकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ सम्राट	परिव्राज	अर्चति ।	सम्राट	संन्यासीकी	पूजा करता है ।
नृप	सम्राज	(अवति ।)	राजा	सम्राटको	संतुष्ट करता है ।
महीप	रज्जुसृज	वदति ।	राजा	रज्जुनिर्माताको	कहता है ।
२ सम्राजौ	तस्कर	अर्दत ।	दो सम्राट	चोरको	पीड़ा देते हैं ।
सम्राट	परिव्राजौ	अर्चति ।	सम्राट	संन्यासियोंको	पूजता है ।
३ सम्राज	परिव्राज	अर्चंति ।	अनेक सम्राट	संन्यासीको	पूजते हैं ।
नृपा	देवराज	अर्चंति ।	अनेक राजा	अनेक इंद्रोंको	पूजते हैं ।
भूपा	सम्राज	अवंति ।	राजालोग	सम्राटोंको	संतुष्ट करते हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सम्राट, परिव्राज, देवराजौ, नृप, रज्जुसृज, अवति, कांक्षति, पश्यत राजराट, गच्छति अर्चति ।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्ध करो—

रज्जुसृट् रज्ज सृजति। कमपरिव्रजौ नगर गच्छति। देवेजौ देवान् अर्चंति। विभ्राट् कर्तार वदत ।

एक एक शब्द रखकर वाक्य बनाओ—

——रज्जु सृजति। जना देवेज ——। राजराट्——गच्छति। मनुष्या ——अर्चंति। ——धर्मं उपदिशत ।

संस्कृत बनाओ—

जीव धर्मको (देव) बनाता है। दो सन्यासी ग्रामको जाते हैं। चक्रवर्ती (सम्राट्) राज्यको रक्षा करता है। देव इन्द्रको पूजते हैं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक	द्वि॰	बहु॰
सृज	बनाना	(सृज्+अ+ति)	सृजति	सृजतः	सृजन्ति।
अर्च	जाना, पूजना	(अर्च्+अ+ति)	अर्चति	अर्चतः	अर्चन्ति।
अव	रक्षा करना, सन्तुष्ट करना	(अव्+अ+ति)	अवति	अवतः	अवन्ति।
व्रज	जाना	(व्रज्+अ+ति)	व्रजति	व्रजतः	व्रजन्ति।
रिष	हिंसा करना	(रिष्+अ+ति)	रिषति	रिषतः	रिषन्ति।

	एक॰	द्वि॰	बहु॰
प्रथमा —	सम्राड् (ट्)	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया —	सम्राजम्	,,	,,

सप्तम पाठ।

तकारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	भूभृत्	पयोमुचं	पश्यति।	राजा	मेघको	देखता है।
	पापकृत्	पुण्यकृतं	निन्दति।	पापी	पुण्यात्माकी	निंदा करता है।
	विपश्चित्	तीर्थकृतं	अर्चति।	विद्वान्	जिनेंद्रको	पूजता है।
२	वारिमुक्	भूभृतौ	(कुवति)	मेघ	दो पर्वतोंको	ढकता है।
	विपश्चितौ	वनं	व्रजतः।	दो विद्वान्	वनको	जाते हैं।
	पुण्यकृतौ	स्वर्गं	गच्छतः।	दो पुण्यात्मा	स्वर्गको	जाते हैं।
३	विपश्चितः	बालकान्	पृच्छन्ति।	विद्वान् लोग	बालकोंको	पूछते हैं।
	जलमुचः	भूभृतः	कुर्वन्ति।	मेघ	पर्वतोंको आच्छादन	करते हैं।
	पापकृतः	नरकं	गच्छन्ति।	पापी	नरक	जाते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
अन्नमुच	भूभृतं	कृपति।	अन्नमुक्	भूभृतं	कुर्वति।
भूभृत्	ग्रमान्	रचति।	भूभृत	ग्रमान्	रचति।
अना	विपश्चित्	पृच्छति।	अना	विपश्चितं	पृच्छति।
विपश्चित्	भूभृत्	अनुगच्छति।	विपश्चित्	भूभृतं	अनुगच्छति।
गोत्रभित्	पर्वंत	घटन।	गोत्रभित्	पर्वंतं	घटति।
मूढा	विपश्चित्	रिपति।	मूढा	विपश्चितं	रिपति।

एक एक शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

——आकाश छादयति। पवन—विकिरति। —दुग्धं कामयति। सुनय भूभृत——। अश्वोंता——पचति। विपश्चित्——गच्छति। सम्राट——रिपति। भूभृत्——सृजति। देवेट् ——वर्षति।

संस्कृत बनाओ—

मेघ पहाड़ोंको आच्छादन करते हैं। विद्वान् लोग धर्मका उपदेश देते हैं। बुध मेघोंको छूते हैं। हिंसक पशुओंको मारते हैं। पुण्य करनेवाले स्वर्गको जाते हैं। राजा पापियोंको मारता है। पण्डित संसारको सन्तुष्ट करते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा —	भूभृत् (द्)	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया —	भूभृतं	,,	,,

षष्टम पाठः।

म (व) तु भागात।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ धीमान्	गुणवन्तं	पृच्छति।	बुद्धिमान्	गुणवानको	पूछता है।
विद्यावान्	धनवन्तं	गच्छति।	विद्यावाला	धनवान्के पास	जाता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
नेत्रवान्(१)	कटकं	पश्यति ।	नेत्रवाला	कांटेको	देखता है ।
तडित्वान्	ज्योतिष्मंतं	करोति ।	मेघ	तारेको	ढकता है ।
धनवान्	बुद्धिमन्तं	वदति ।	धनाढ्य	बुद्धिमानको	कहता है ।
भास्वान्	प्रकाशं	यच्छति ।	सूरज	प्रकाशको	देता है ।
२ धीमन्तौ	यशस्वन्तौ	पश्यतः ।	दो बुद्धिमान	यशस्वीको	देखते हैं ।
महीप	तडित्वन्तौ	पश्यति ।	राजा	दो मेघोंको	देखता है ।
बलवन्तौ	ग्रामं	गच्छतः ।	दो बलवान्	गांवको	जाते हैं ।
चक्षुष्मन्तौ	ग्रंथं	पश्यतः ।	दो चक्षुवान्	पुस्तकको	देखते हैं ।
३ धीमन्तः	गुणवतः	अर्चन्ति ।	बुद्धिमान् (अनेक)	गुणवालोंको	पूजते हैं ।
धनवन्तः	विद्यावतः	गच्छन्ति ।	धनवाले	विद्यावालोंके पास	जाते हैं ।
नेत्रवन्तः	कटकान्	पश्यन्ति ।	नेत्रवाले	कांटोंको	देखते हैं ।
ज्ञानवन्तः	छात्रान्	उपदिशन्ति ।	ज्ञानवाले	छात्रोंको	उपदेश देते हैं ।

अशुद्ध			शुद्ध		
बुद्धिमान्	भास्वान्	पश्यति ।	बुद्धिमान्	भास्वन्तं	पश्यति ।
धनवान्	गुणवत्	अर्चति ।	धनवन्तः	गुणवतः	अर्चन्ति ।
दयावान्	स्वर्गं	गच्छतः ।	दयावन्तौ	स्वर्गं	गच्छतः ।
धीमन्तः	ग्रंथान्	पठति ।	धीमन्तः	ग्रंथान्	पठन्ति ।
लुब्धकाः	धनवतः	अर्चति ।	लुब्धकाः	धनवतः	अर्चन्ति ।

१ शब्दोंके अन्तमें मत् लगा देनेसे इस प्रत्ययके रूप बनते हैं और उसका (वाला) अर्थ होता है। जैसे गो शब्दके अन्तमें मत् लगाया तो गोमत् हुआ। जिसका कि अर्थ—गाय वाला होता है। लेकिन जिन शब्दोंके अन्तमें अथवा अन्तके अक्षरसे पहले 'अ' अथवा 'म्' होगा तो मत्के मकारके स्थानमें वकार हो जायगा। जैसे—विद्या+मत्=विद्यावत् भास+मत्=

नीचे लिखे शब्दोंको वाक्यमें लाकर वाक्य बनाओ—

धनवता, पशुमत्, (खरज) वपुष्मान् छायावन्तौ भास्वान् ज्योतिष्मतौ, चरन् यशस्विः, ज्ञानवान्, श्मश्रुमत (डाढीवाले) तडित्वत ।(१)

संस्कृत बनाओ—

धनाढ्योंको संसार पूजता है। खरगोशको उल्लू (घूक) नहीं देखते हैं। ज्योतिष देव चमकते हैं। ज्ञानी पुस्तक पढ़ता है। डाढ़ीवाले (श्मश्रुमत्) जाते हैं। मेघ पर्वतोंको ढांकते हैं।

मत् प्रत्ययान्त धीमत् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः
द्वितीया—	धीमन्तं	„	धीमतः

नवम पाठ।

शतृ (अत्) प्रत्ययान्त। (२)

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ गायन्	वदन्तं	वदति।	गानेवाला	बोलतेहुयेको	कहता है।
नृप	गायन्तं	प्रशंसति।	राजा	गाते हुये (जन)को	प्रशंसा करता है।

१ जिन शब्दोंके अन्तमें वर्गोंका पहिला दूसरा तीसरा और चौथा अक्षर हो उन शब्दोंके आगेके मतुके मकारको भी वकार हो जाता है।

२ भ्वादिगण और तुदादिगणकी धातुओंके प्रथमपुरुष की (पठति आदि) क्रियाके एक वचनमें ति के स्थानमें त् कर देनेसे इस प्रत्ययके रूप बनते हैं। जैसे कि—पठ धातुका पठति रूप बनता है उसके ति के स्थानमें त् कर देनेसे पठत् रूप बनता है। अब इसके

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता कर्म क्रिया
गच्छन्	आश्रमं	पश्यति ।	जाता हुआ (आदमी) आश्रमको देखता है।
ध्यायन्	ईश्वरं	स्मरति ।	ध्यान करता हुआ (जन) ईश्वरको चितारता है।
पठन्	पुस्तकं	पश्यति ।	पढ़ता हुआ (आदमी) पुस्तकको देखता है।
२ गायतौ	रुदंतौ	वदत ।	दोगानेवाले(आदमी)दोजनेरोतेहुवोंकोकहतेहैं।
महीपति	गायंतौ	अर्चति।	राजा गातेहुये दो जनोंका सत्कार करता है।
गच्छतौ	तृणं	स्पृशत ।	चलते हुये दो जने तृणको छूते हैं।
ध्यायतौ	जिनं	स्मरत ।	ध्यान करते हुये दोजने जिनको याद करतेहैं
पठतौ	ग्रन्थान्	पश्यत ।	पढ़ते हुये दोजने ग्रन्थोंको देखते हैं।
३ गायत	रुदत	वदति ।	गाते हुये बहुतसे जन रोते हुवोंको कहते हैं।
नराधिप	गायत	पश्यति ।	राजा गाते हुये बहुत जनोंको देखता है।
वदत	कथां	गदति ।	कहते हुये (बहुत जने) कथा कहते हैं।
ध्यायत	जिनं	स्मरति ।	ध्यान करते हुये बहुतजन जिनको याद करतेहैं

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
नृप	गायत	पृच्छति ।	नृप	गायतः	पृच्छति ।
तिष्ठत	कथां	गदति ।	तिष्ठन	कथां	गदति ।
चलन्	तृणान्	स्पृशति ।	चलत	तृणान्	स्पृशति ।
जानतौ	अक्षाणि	वदति ।	जानन्	अक्षाणि	वदति ।
वदन्	मुधा	हसत ।	वदतौ	मुधा (व्यर्थ)	हसत ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

गच्छत, इच्छन्, स्मरतौ, पचति, किरत, पृच्छत, वदन्, ध्यायन्, गायत ।

संस्कृत बनाओ—

लड़की गाते गाते जाते हैं। मूर्ख खाते खाते हसते हैं। पार्श्वदास कहते कहते हसता है। राम पढते पढते पूछता है। शृगाल जाते हुये मृगको देखता है। नाई (नापित) रोता हुआ पैसे मांगता है।

वाक्य पूरे करो—

—— विमलस गदति। देवदत्त —— पृच्छति

गुरु पठत ——। सेवक —— वांछति।

शतृ (अत्) प्रत्ययान्त गायत् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गायन्	गायन्तौ	गायन्तः
द्वितीया—	गायन्तं	,	गायतः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जप	जपना	(जप्+अ+ति)	जपति	जपतः	जपन्ति।
वाञ्छ	चाहना	(वांछ+अ+ति)	वांछति	वांछतः,	वांछन्ति।
गद	कहना	(गद्+अ+ति)	गदति	गदतः	गदन्ति।
गै	गाना	(गाय्+अ+ति)	गायति	गायतः	गायन्ति।
ध्यै	ध्यानकरना	(ध्याय्+अ+ति)	ध्यायति	ध्यायतः	ध्यायन्ति।
स्मृ	यादकरना	(स्मर्+अ+ति)	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति।
अर्ह	पूजाकरना	(अर्ह्+अ+ति)	अर्हति	अर्हतः	अर्हन्ति।
दृशिर्	देखना	(पश्य्+अ+ति)	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति।
अंच	जाना पूजना	(अच्+अ+ति)	अञ्चति	अंचतः	अञ्चन्ति।
स्पृश	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः,	स्पृशन्ति।

दशमपाठ ।

द् कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१ दुर्हृद्	उद्भिद	पश्यति ।	शत्रु	उद्भिदको	देखता है ।
मानव	दिविषद	अर्चति ।	मनुष्य	देवको	पूजता है ।
दिविषत्	जनान्	आदिशति ।	देव	मनुष्योंको	आज्ञा देता है ।
सभासत्(द्)	सभासद	गदति ।	सभासद	सभासदको	कहता है ।
२ उद्भिदौ	वृष्टि	कांक्षत ।	दो उद्भिद	वृष्टिको	चाहते हैं ।
मानव	दिविषदौ	अर्चति ।	मनुष्य	दो देवोंको	पूजता है ।
सभासदौ	सभासदौ	पृच्छतः ।	दो सभासद	दो सभासदोंको	पूछते हैं ।
सुहृदौ	सुहृदौ	रक्षतः ।	दो मित्र	दो मित्रको	रक्षा करते हैं ।
३ उद्भिद	वृष्टि	कांक्षंति ।	बहुतसे उद्भिद	वर्षाको	चाहते हैं ।
मानवा	दिविषद	अर्चति ।	मनुष्य	देवोंको	पूजा करते हैं ।
सभासद	सभासद	पृच्छति ।	सभासद	सभासदोंको	पूछते हैं ।
सुहृद	सुहृदः	पश्यन्ति ।	मित्र	मित्रोंको	देखते हैं ।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
सुहृद	पर्वत	गच्छति ।	सुहृद	पर्वत	गच्छति ।
उद्भिदौ	वायु	कांचति ।	उद्भिद्	वायु	कांचति ।
वृष्टि	उद्भिदान्	सिचति ।	वृष्टि	उद्भिद	सिंचति ।
सभासद	परस्पर	वदत ।	सभासदौ	परस्पर	वदत ।
दुर्हृद	वार्त्ता	वदति ।	दुर्हृद	वार्ता	वदंति ।
दिविषद्	जिनान्	अर्चंति ।	दिविषद	जिनान्	अर्चति ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

निरापद, दुर्हृद., सुहृद, सभासद, विपद, दिविषदौ ।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्धकरो—

निरापदान् विपदान् निदंति। दुहृँद् तव क्षमत।
द्विविपद् जिन यचति। उद्भिद् दृष्टि कांचत।

संस्कृत बनाओ—

मित्र मित्रकी रक्षा करता है। शत्रु मित्रको निंदा करता है।
आपत्तिको मनुष्य नहीं चाहता है। विपत्ति मनुष्योंको सताती है।
उद्भिद् मेघको चाहते हैं। सभासद् सभाको जाते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृद
द्वितीया—	सुहृदम्		,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
दिशीञ्	आज्ञादेना	(दिश्+अ+ति)	दिशति	दिशत	दिशंति।
कांक्षि	चाहना	(कांक्ष्+अ+ति)	कांक्षति	कांक्षत	कांक्षति।
षिचीञ्	सींचना	(षिच्+अ+ति)	सिंचति	सिंचत	सिंचति।
णिदि	निंदा करना	(निंद्+अ+ति)	निंदति	निंदत	निंदति।
तुदीञ्	पीड़ा देना	(तुद्+अ+ति)	तुदति	तुदत	तुदंति।
व्रज	जाना	(व्रज्+अ+ति)	व्रजति	व्रजत	व्रजंति।

एकादश पाठ ।

अन् भागांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	राजा	मूर्धानं	छनत्ति ।	राजा	सिरको	काटता है ।
	सम्राट्	राजानं	अर्दति ।	सम्राट	राजाको	पीड़ा देता है ।
	राजा	राजानं	गच्छति ।	राजा	राजाके पास	जाता है ।
	तक्षा	तक्षाणं	पश्यति ।	बढ़ई	बढ़ईको	देखता है ।
२	राजानौ	मूर्धानौ	छिन्तः ।	दो राजा	दो सिरको	काटते हैं ।
	सम्राट्	राजानौ	अर्दतः ।	सम्राट	दो राजाओंको	पीड़ा देते हैं ।
	राजानौ	राजानौ	गच्छतः ।	दो राजा	दो राजाओंके पास	जाते हैं ।
	तक्षाणौ	तक्षाणौ	पश्यतः ।	दो बढ़ई	दो बढ़इयोंको	देखते हैं ।
३	राजानः	सम्राजं	पृच्छन्ति ।	राजालोग	सम्राट को	पूछते हैं ।
	सम्राट	राज्ञः	अर्दति ।	सम्राट्	राजाओंको	पीड़ा देता है ।
	राजानः	राज्ञः	गच्छन्ति ।	राजा	राजाओंके पास	जाते हैं ।
	तक्षाणः	तक्ष्णः	पश्यन्ति ।	बढ़ई	बढ़इयोंको	देखते हैं ।

अपद ।			पद ।		
राजान	पर्वत	व्रजत ।	राजानौ	पर्वतं	व्रजतः ।
सम्राट्	राजाम	अर्दति ।	सम्राट्	राज्ञः	अर्दति ।
बालक	प्रेमी	इच्छति ।	बालकः	प्रेमाणं	इच्छति ।
नृप	गरिमा	कांक्षति ।	नृपः	गरिमाणं	कांक्षति ।
मुनि	मूर्धान	स्पृशत ।	मुनी	मूर्धानं	स्पृशतः ।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

गरिमा, मूर्धानं, राज्ञः, तक्षाणौ, प्रेमाणं, देवमहिमानम् अर्चति, स्पृशतः, प्रेमा ।

अनुवाद करो—

राजा प्रजाकी रक्षा करते हैं। मुनि बडप्पनकी निन्दा करते हैं। बालक पुस्तक चाहता है। पठाई घोड़ेको देखता है। प्रेमको मनुष्य चाहते हैं। पूज्यपाद नामके आचार्यको वैयाकरण प्रशंसा करते हैं (प्रशंसति)। सुधर्माचार्यको श्रेणिक पूछता है।

हिन्दी करो—

प्रजा राजानं अर्चति। सुधर्माचार्यो महावीरं पृच्छति। प्रेमा जनं रक्षति। मुनि गरिमां निन्दति।

अन् भागान्त राजन् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया—	राजानम्	„	राज्ञः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	रूपम्	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अर्द्	पीड़ादेना	(अर्द्+अ+ति)	अर्दति	अर्दतः	अर्दन्ति।
खुर्द्, खुर्द्	क्रीडना	(खुर्द्+अ+ति)	खुर्दति	खुर्दतः	खुर्दन्ति।
शंस (१)	कहना	(शंस्+अ+ति)	शंसति	शंसतः	शंसन्ति।

---

१ प्र उपसर्ग सहित धातुका अर्थ प्रशंसा करना होता है।

द्वादश पाठ।

अन् भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	धर्मा	ब्रह्माण	अर्चति।	ब्राह्मण	ब्रह्माको	पूजता है।
	यज्वा	इन्द्र	अर्चति।	पुरोहित	इन्द्रको	पूजता है।
	द्विजन्मा	सुधर्माण	नमति।	ब्राह्मण	सुधर्माको	नमता है।
२	द्विजन्मानौ	ग्रन्थान्	पठत।	दो ब्राह्मण	ग्रन्थोंको	पढते हैं।
	यज्वानौ	द्विजन्मानौ	पृच्छत।	दो पुरोहित	दो द्विजोंको	पूछते हैं।
	इन्द्र	यज्वानौ	रिषति।	इन्द्र	दो पुरोहितोंपर	क्रोध करता है।
३	द्विजन्मान	ग्रन्थान्	पठति।	द्विज	ग्रन्थोंको	पढते हैं।
	यज्वान	द्विजन्मन	पृच्छति।	पुरोहित	ब्राह्मणोंको	पूछते हैं।
	इन्द्र	यज्वन	रिषति।	इन्द्र	पुरोहितोंपर	क्रोध करता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे संस्कृत बनाओ—

यज्वा, द्विजन्मान, अश्मानौ (पत्थर), ब्रह्मा, दुरात्मान, पापात्मन, चरति, अस्यति, यज्वान।

संस्कृत बनाओ—

राजा पुरोहितको पूजता है। लोग ब्रह्माको पूजते हैं। द्विज ग्रन्थोंको पढते हैं। ब्राह्मण दाताओंका सम्मान करते हैं। पुरोहित यज्ञ (यजति) करते हैं। पापीलोग धर्मात्माओंकी निन्दा करते हैं। राजा पापियोंको दण्ड देता है।

अर्थ करो—

कर्ता यज्वा अर्दति, राजा पापात्मा निन्दति, प्रभु द्विजन्म अर्दति, जना अश्माना अचति, साधु पापात्मनौ उपदिशति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	यज्वा (१)	यज्वानौ	यज्वानः
द्वितीया—	यज्वानं	,,	यज्वनः

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
णमो	नमस्कारकरना	(नम्+अ+ति)	नमति	नमतः	नमन्ति ।
रिष	क्रोधकरना	(रिष्+अ+ति)	रिषति	रिषतः	रिषन्ति ।
चर	खाना, चलना	(चर+अ+ति)	चरति	चरतः	चरन्ति ।
श्रण	देना	(श्रण्+अ+ति)	श्रणति	श्रणतः	श्रणन्ति ।
यजीञ्	यागकरना	(यज्+अ+ति)	यजति	यजतः	यजन्ति ।
हृञ् (२)	हरण करना	(हर्+अ+ति)	हरति	हरतः	हरन्ति ।

त्रयोदश पाठ ।

इन् भागांत । (३)

	कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	धनी	धनिनं	वदति ।	धनी	धनीको	कहता है ।
	यशस्वी	तपस्विनं	गच्छति ।	यशस्वी	तपस्वीके पास	जाता है ।

१ जिन अन्नन्तान्त शब्दोंके अन्तमें 'म' और 'व' संयुक्त होते हैं उनके रूप यज्वन् शब्दके समान होते हैं जैसे आत्मन्, ब्रह्मन् आदि । बाकीके राजन् शब्दके समान । (२) प्र परा आदि उपसर्गों के लगनेसे प्राय धातुका अर्थ बदल जाता है जैसे प्र ह—मारना विह—विहार करना आदि । (३) अकारान्त शब्दोंसे (वाला) अर्थ में 'इन्' प्रत्यय होता है जैसे कि—धनवाला अर्थ में धन+इन=धनिन आदि ।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।
करी	स्वामिनं	स्पृशति ।	हाथी	मालिकको	छूता है ।
पक्षी	कोटरं	गच्छति ।	पक्षी	खोखरको	जाता है ।
स्वामी	विषयिणं	निन्दति ।	स्वामी	विषयीको	निन्दा करता है ।
२ मन्त्रिणौ	राजानं	अर्चतः ।	दो मंत्री	राजाको	पूजते हैं ।
राजा	करिणौ	यच्छति ।	राजा	दो हाथी	देता है ।
मानवाः	स्वामिनौ	अर्चन्ति ।	मनुष्य	दो स्वामियोंको	पूजते हैं ।
मेधाविनौ	विषयिणौ	निन्दतः ।	बुद्धिमान	दो विषयियोंको	निन्दा करते हैं ।
तपस्विनौ	राजानं	उपदिशतः ।	दो तपस्वी	राजाको	उपदेश देते हैं ।
३ पक्षिणः	अन्नं	खादन्ति ।	बहुत पक्षी	अन्नको	खाते हैं ।
विषयिणः	गुणिनः	निन्दन्ति ।	विषयीलोग	गुणियोंको	निन्दा करते हैं ।
तपस्विनः	ध्यानं	इच्छन्ति ।	तपस्वीलोग	ध्यानको	चाहते हैं ।
ध्यानिनः	वनं	व्रजन्ति ।	ध्यानीलोग	वनको	जाते हैं ।
बलिनः	धनिनः	गच्छन्ति ।	बली लोग	धनियोंके पास	जाते हैं ।

वाक्य बनाओ—

ध्यानिनः, वांछति, गुणिनः, पक्षिणौ, स्वामिनं, यच्छतः, मेधावी, तपस्विनं, मरीचमालिनं, मन्त्रिणौ, करिणः ।

एक एक शब्द रखकर इन वाक्योंको पूराकरो—

——तण्डुलान् खादति, विषयिणः ——निन्दति, ज्ञानिनः ध्यानिनं——, ——अर्थं अर्पयति, राजा——वदति, स्वामी करिणं——, द्रोहिणः ——हरति, सुजनः ज्ञानिनं ——, एकाकी—— अटति ।

शुद्ध करो—

राजा अपराधि क्षिपति, ज्ञानिन ध्यानिन पृच्छति, ध्यानिनौ पाप त्यजन्ति, तपस्वी राजान उपदिशति, धनी पक्षी याचति ।

संस्कृत बनाओ—

धनाढ्य लोग ज्ञानियोंकी निन्दा करते हैं। बलवान् लोग घरको जाते हैं। मंत्री राजाको पूजते हैं। पापी पक्षियोंको खाते हैं। यशस्वी मनुष्योंकी निन्दा नहीं करते हैं।

नकारान्त तपस्विन् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	तपस्वी	तपस्विनौ	तपस्विनः
द्वितीया—	तपस्विनं	,,	,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
घट	जाना	(घट+अ+ति)	घटति	घटतः	घटन्ति।
दाण्	देना	(यच्छ्+अ+ति)	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति।
स्पृशी	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति।

त्रयोदश पाठ।

अस् भागान्त।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	चन्द्रमा	प्रकाशं	यच्छति।	चन्द्रमा	प्रकाश	देता है
	मानव	दिवौकसः	अर्चति।	मनुष्य	देवको	पूजता है
	व्याध	विहायसः	कांक्षति।	व्याधा	पक्षीको	चाहता है
	बाल	चन्द्रमसं	पश्यति।	लड़का	चन्द्रमाको	देखता है
	मेधा	ग्राम	गच्छति।	पण्डित	ग्रामको	जाता है

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
२ जन	दिवौकसौ	अर्चति।	मनुष्य	दो देवोंको	पूजता है।
वनौकसौ	वनं	व्रजतः।	दो जङ्गली	जङ्गलको	जाते हैं।
विहायसौ	नीडं	अटतः।	दो पक्षी	घोंसलाको	जाते हैं।
व्याध	विहायसौ	कांक्षत'।	व्याध	दो पक्षीयोंको	चाहता है।
भिक्षुकाः	उदारचेतसौ	यजतः	भिखारी	दो उदारचित्तवालोंको	पूजते हैं।
१ उदारचेतस	अर्थं	यच्छति।	उदारचित्तवाले	धन	देते हैं।
व्याध	विहायस	कांक्षति।	व्याध	पक्षियोंको	चाहता है।
महामनस	सज्जनान्	प्रशंसति।	महामनवाले	सज्जनोंकी	प्रशंसा करते हैं।
जना	दिवौकस	अर्चंति।	मनुष्य	देवोंको	पूजते हैं।
भिक्षुका,	उदारचेतस	गच्छति	भिखारी	उदारोंके पास	जाते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
इन्द्र	प्रचेत	भिदति।	इन्द्र	प्रचेतसं	भिदति।
बाल'	चन्द्रमां	पश्यति।	बाल	चन्द्रमस	पश्यति।
दिवौका	जिन	अर्चति।	दिवौकस	जिन	अर्चति।
वनौको	वन	गच्छति।	वनौका	वन	गच्छति।
महामना	तपस्विन	अर्हत।	महामनसौ	तपस्विनं	अर्हत'।
जना	दिवौका	अर्चति।	जना'	दिवौकस,	अर्चंति।
विहाया,	आकाश	गच्छंति।	विहायस'	आकाश	गच्छति।
उन्मनसौ	सुखं	त्यजति।	उन्मनस	सुख	त्यजति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वनौका दिवौकस त्यजति, प्रशंसति, प्रचेतस, विहाया, वेधा, महमनस', उन्मनसौ, उदारचेतस, कांक्षत, यच्छति।

शुद्ध करो—

नृप वेधां पृच्छति, विहायसौ निवसन्ति, इन्द्र प्रचेता रिपति, चद्रमौ प्रकाश यच्छति, महामन ध्यानिम स्कृति।

संस्कृत बनाओ—

उदारचित्तवाले धन देते हैं। ब्रह्माको ब्राह्मण पूजते हैं। यदय स्वर्गको जाता है। जङ्गली जङ्गलको छोड़ता है। पक्षी आकाशको जाते हैं। मेघ चन्द्रमाको ढाकता है (आच्छादयति) लड़के चन्द्रमाको देखते हैं। दुर्वासा शकुन्तलाको शाप देता है (शपति)।

वेधस् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि	बहु
प्रथमा—	वेधा	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया—	वेधसं	,,	,,

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि	बहु०
याचृ	मांगना	(याच्+अ+ति)	याचति	याचत	याचन्ति।
शपीञ्	शापदेना	(शप्+अ+ति)	शपति	शपत	शपन्ति।
वसो	निवासकरना	(वस्+अ+ति)	वसति	वसत	वसन्ति।

चतुर्दश पाठ।

वस्‌मागीत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ विद्वान्	ग्रन्थं	मनति।	विद्वान्	ग्रन्थको	मनन करता है।
मेधावी	विद्वांसं	अनुव्रजति।	बुद्धिमान्	विद्वान्‌के	पीछे चलता है।
गच्छत	तपस्विनस्	पश्यति।	जातेहुये	तपस्वियोंको	देखते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया
जग्मिवान्	पुष्पं	जिघ्रति ।	आनेवाला	फूलको	सूंघता है।
तस्थिवान्	जग्मिवांसं	पृच्छति ।	बैठा हुआ	आते हुयेको	पूछता है।
२ विद्वांसौ	ग्रन्थान्	मनुतः ।	दो विद्वान्	ग्रन्थोंको	मनन करते हैं।
राजा	विद्वांसौ	पृच्छति ।	राजा	दो विद्वानोंको	पूछता है।
जग्मिवांसौ	तस्थिवांसौ	पश्यतः ।	आनेवाले	दो बैठे हुयोंको	देखते हैं।
तस्थिवांसौ	पुष्पं	जिघ्रतः ।	दो बैठे हुये	फूल	सूंघते हैं।
मेधावी	पेचिवांसौ	पृच्छति ।	बुद्धिमान्	दो पकानेवालों को	पूछता है।
३ विद्वांसः	धर्मं	उपदिशन्ति ।	विद्वान् लोग	धर्मका	उपदेश देते हैं।
नृप	विदुषः	पृच्छति ।	राजा	विद्वानों को	पूछता है।
जग्मिवांसः	तस्थुषः	पश्यन्ति ।	आनेवाले	बैठे हुओंको	देखते हैं।
तस्थिवांसः	जग्मुषः	पृच्छन्ति ।	बैठे हुये लोग	आते हुओंको	पूछते हैं।
शुश्रुवांसः	ग्रामं	गच्छन्ति ।	सुननेवाले	ग्रामको	जाते हैं।
छात्राः	पेचुषः	वदन्ति ।	विद्यार्थी	पकानेवालोंको	कहते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

शुश्रुवान्, मनुतः विदुषः, तस्थुषः, जग्मुषः, पेचिवांसौ, जिघ्रति, श्रपतः, त्यजन्ति।

नीचे लिखे वाक्योंको शुद्ध करो—

विद्वान धर्मं उपदिशन्ति, राजा पेचिवांसौ पृच्छन्ति, जग्मिवानौ पुष्पं जिघ्रतः, छात्रा तस्थिवान् पृच्छन्ति।

वस्-भागान्त विद्वस् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया—	विद्वांसं	,,	विदुषः

पञ्चदश पाठ।

इयम् आगात।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ गरीयान्	लघीयांसं	आदिशति	बड़ा	छोटेको	आज्ञा देता है।
कनीयान्	श्रेयांसं	कांक्षति।	छोटा	श्रेष्ठको	चाहता है।
ज्यायान्	यवीयांसं	उपदिशति	ज्येष्ठ	छोटेको	उपदेश देता है।
द्रढीयान्	क्षुद्रं	तुदति।	दृढ़	क्षुद्रको	पीड़ा देता है।
२ गरीयांसौ	महिमानं	कांक्षतः।	दो बड़े जने	महिमाको	चाहते हैं।
साधु	कनीयांसौ	सुवति।	साधु	दो छोटोंको	[illegible] है।
भूयांसौ	श्रेयांसौ	स्पृहतः।	दो बड़े	दो श्रेष्ठ(पदार्थ)की	स्पृहा करते हैं।
ज्यायांसौ	यवीयांसौ	उपदिशतः।	दो बड़े	दो छोटोंको	उपदेश देते हैं।
३ गरीयांसः	लघीयसः	आदिशन्ति।	बड़े लोग	छोटोंको	आज्ञा देते हैं।
कनीयांसः	श्रेयसः	कांक्षन्ति।	छोटे लोग	श्रेष्ठ वस्तुओंको	चाहते हैं।
ज्यायांसः	यवीयसः	उपदिशन्ति।	बड़े लोग	कनिष्ठोंको	उपदेश देते हैं।
साधु	कनीयसः	सुवति।	साधु	छोटोंको	[illegible] है।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

गरीयान्, लघीयांसौ, ज्यायसः, श्रेयांसौ, सुवति, तुदति, नमत, यवीयसः, निन्दति।

संस्कृत बनाओ—

छोटे लोग बड़े जनोंका अनुगमन करते हैं। बड़े लोग छोटोंको उपदेश देते हैं। कनिष्ठ श्रेष्ठवस्तु चाहते हैं। बलवान् कमजोरको पीड़ा देता है। साधुलोग गौरववालोंको निंदा करते हैं। श्रेष्ठ लोग राजाको चाहते हैं। सन्यासी श्रेष्ठको उपदेश देते हैं। कनिष्ठ प्रेम चाहते हैं।

उदाहरण—

ज्यायान् धर्मं उपदिशति। लघीयान् ज्यायान् नमति। कनीयांसौ धाम्नौ दिशतः। गरीयान् यमीयसौ गच्छति। विद्वान् गरिमां निदति।

इस् भागान्त गरीयस् शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांस
द्वितीया—	गरीयांस	.	गरीयस

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक॰	द्वि॰	बहु॰
तुदीञ्	पीड़ादेना	(तुद्+अ+ति)	तुदति	तुदतः	तुदन्ति।
कुषि	ढाकना	(कुष्+अ+ति)	कुषति	कुषतः	कुषन्ति।
सृ	चलना	(सर्+अ+ति)	सरति	सरतः	सरन्ति।
कूज	शब्दकरना	(कूज्+अ+ति)	कूजति	कूजतः	कूजन्ति।
भ्रमु	घूमना	(भ्रम्+अ+ति)	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति।
घ्रा (जिघ्र)	सूंघना	(जिघ्र+अ+ति)	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति।
ध्मा (धम)	फूंकना बजाना	(धम्+अ+ति)	धमति	धमतः	धमन्ति।
णीञ्	लेजाना	(नय्+अ+ति)	नयति	नयतः	नयन्ति।
सृ (धाव)	दौड़ना	(धाव्+अ+ति)	धावति	धावतः	धावन्ति।
पत्लृ	गिरना	(पत्+अ+ति)	पतति	पततः	पतन्ति।
स्था (तिष्ठ)	बैठना	(तिष्ठ्+अ+ति)	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति।
म्ना (मन)	अभ्यासकरना	(मन्+अ+ति)	मनति	मनतः	मनन्ति।

षोडश पाठः ।

पुंलिङ्ग विशेष्य (१) शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग ।

१ शुभ्र हंस जलभरित तड़ाग गच्छति ।	शुभ्र हांस जलसे भरेहुये तालाबको जाता है ।
मृत मनुष्य दुःसह दुर्गंध त्यजति ।	मरा हुआ मनुष्य बड़ी भारी बदबूको छोड़ता है ।
सुन्दर बालक शिक्षापूर्ण ग्रंथ पठति ।	सुन्दर बालक शिक्षापूर्ण ग्रन्थको पढ़ता है ।
लुब्धक व्याध सर्वान् विहगमान् इच्छति ।	लोभी व्याधा सब पक्षियोंको चाहता है ।
सुपक्व रसाल मिष्ट रस यच्छति ।	पका हुआ आम मीठा रस देता है ।
२ धवलौ हंसौ जलपूर्णौ कासारौ व्रजतः ।	सेत दो हंस जलसे पूर्ण तालाबको जाते हैं ।
लोलुपौ कृषीवलौ विशालौ बलीवर्दौ कामयतः ।	लोलुपी दो किसान बड़े दो बैलोंको चाहते हैं ।
भक्तौ छात्रौ शिष्टौ पाठकौ अनुगच्छतः ।	भक्त दो विद्यार्थी शिष्ट दो गुरुओंके पीछे पीछे चलते हैं ।

---

१ विशेष्यका जो लिंग और वचन होता है वही विशेषणका होता है। गुणवाचक शब्द प्रायः विशेषण होते हैं ।

३ भक्ताः श्रावकाः वीतरागान् जिनान् अर्चंति।	भक्त श्रावक वीतराग जिन भगवान् को पूजते हैं।
वीतरागा जिनाः सुखकरं धर्मं उपदिशन्ति।	वीतराग जिनदेव सुखदायी धर्म का उपदेश देते हैं।
जैना बाला आप्तनिर्दिष्टान् ग्रन्थान् पठन्ति।	जैनी लड़के सच्चे देव से उपदिष्ट शास्त्रों को पढ़ते हैं।
चतुरमतयः बालाः सारगर्भान् उपदेशान् काङ्क्षन्ति।	चतुरबुद्धिवाले लड़के सारपूर्ण उपदेश चाहते हैं।
उदारचेतसः मुनयः हितकरान् उपदेशान् वदन्ति।	उदारचित्तवाले मुनि हितकारी उपदेश कहते हैं।
भीषणाः अग्नयः विशालान् वृक्षान् दहन्ति।	भयंकर अग्नियां बड़े बड़े पेड़ों को जलाती हैं।
गृहशून्याः साधवः सुन्दरान् जिनालयान् व्रजन्ति।	घररहित साधुलोग सुन्दरजिनालयों को जाते हैं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
क्षुद्धः गजा सजलान् तडाग गच्छति।	क्षुधा गजा सजल तडाग गच्छति।
अनगारिणो मुनि वीतरागान् जिन नमति।	अनगारी मुनि वीतराग जिन नमति।
विशाली शाल्मलितरव क्षणो मेघान् कुर्वति।	विशाला शाल्मलितरव क्षणान् मेघान् कुर्वति।
गुणवता जना धनिनौ जनान् पृच्छति।	गुणवन्त जना धनिन जनान् पृच्छति।
बुभुक्षिता पक्षिण उच्चान् पर्वतौ गच्छत।	बुभुक्षितौ पक्षिणौ उच्चान् पर्वतान् गच्छत।

नीचे लिखे विशेषणों का प्रयोग कर वाक्य बनाओ—

(क) सुन्दर, मलीमस, मेध्य, भिक्षुक, लुब्धक, शङ्कित, गभीर, शुभ्र, क्रूर, चपल, नेदिष्ठ (अति समीप), दविष्ठ (अति दूर), मूढ, घोर, श्वेत सुतीक्ष्ण।

(ख) मनोहारिन्, धनिन् मालिन्, तेजस्विन्, बलिन्, ओजस्विन्।

(ग) उदारचेतस्, महायशस्, चन्द्रमस्, उन्मनस्, सुमनस्।

(घ) बलवत् धनवत् विद्यावत् एतावत्, तावत् कर्मवत्।

(ङ) मूर्तिमत्, आयुष्मत् बुद्धिमत्, वपुष्मत् धनुष्मत्।

(च) चारु गुरु, लघु, तनु, ऋजु मृदु, दयालु श्रद्धालु, प्राशु साधु।

(छ) दवीयस् कनीयस्, श्रेयस्, अल्पीयस्, लघीयस्, बलीयस्, ज्यायस्।

(ज) अनन्यवृत्ति उदारमति, सरलबुद्धि, चपलमति।

(झ) स्पृशत्, तिष्ठत् गच्छत्, गायत्, चलत्, हसत् रुदत्, शृण्वत्, वदत्, श्रान्त, क्षुधित, व्यथित, पीडित, चलित, हृष्ट, रुष्ट, कर्तव्य, पालनीय, म्रियमाण।

(ञ) विद्वस्, पेचिवस्, शुश्रुवस्, जग्मिवस्।

शुद्ध करो—

स्थाणुम् गिरय चलत मेघान् स्पृशति। चपल मर्त्यं गुणहीन जनान् त्यजति। ऋजु नदा पर्वतपादान् स्पृशति। सरलमतीन् ज्ञापकाः मूर्तिमत अश्मन पूजति। राजनीतिकुशलौ सम्राज बुद्धिमत मन्त्रिण पृच्छति। न यतचेता साधव दवीयस जनान् न गच्छति। तनू चन्द्र अल्पीयास किरणान् विकिरति। उदारमतौ विपश्चित मनोहारिण उपदेशान् लिखति। स्थविठ पथग नेदिष्ठान् लोकालय न त्यजति। क्षुधितौ व्याघ्रा निद्रितान् नर खादति। ऋजु भल्लूका मृतान् जनौ न खादति।

संस्कृत बनाओ—

अच्छे आदमी दुखी आदमियों को नहीं सताते हैं। सच्चे पुरुष चोरी नहीं करते हैं। जैन लोग मांस नहीं खाते हैं। उद्दण्ड लड़के अच्छी किताबें नहीं पढ़ते हैं। नम्र विद्यार्थी अपने (स्वकीय) गुरुओं को पूजते हैं। प्रजाप्रिय राजा प्रजाको सुख देता है।

हिन्दी बनाओ—

विहगमा मेघाच्छन्न गगन गच्छति। क्षुद्रा मधुकरा अपि स्वकार्यं न त्यजति। शीतल समीरण (वायु) इतस्तत (इधर उधर) प्रसरति। लोहित अग्नि हरित वृक्ष दहति। ब्रह्मचारिण पाठालय व्रजति पठति च। चञ्चला प्राणा सर्वान् जनान् त्यजति। प्रचण्ड निदाघ (धूप) दिवस उष्ण करोति।

एक एक विशेषण रखकर वाक्य बनाओ—

———शिक्षक,———विद्यार्थिन प्रहरति। ———गर्दभ ——यवान् खादति। ———विहगमा ——समुद्रतीर गता। ——पक्षि,——मत्स्यशिशून् खादति। व्याध ——तण्डुलकणान् विकिरति। ——शृगाल ——करिण पश्यति। ——मेघ —— सूर्यं कुवलि। ——पादपा जल इच्छति। ——चातक —— मेघ कांक्षति। ——दावानल ——वन दहति।

उपयुक्त स्थान पर कर्ता और कर्म का प्रयोग करो—

——अकुलीन अपि शास्त्रज्ञ ———अर्हति। ——मतिमत ——अर्चति। मधुरभाषिण ——न विश्वसनीया। फलच्छाया-समन्वित ——न कर्त्तनीय (काटना चाहिये)। मथरादय —— स्वकीय——गता। पाशहस्ता ——वन्यान् (वनके)——कर्षति। सभया ——निरापद——गच्छति। पर्यटन्—पलायमानाम्——

परिशिष्ट।

	सखि (मित्र) शब्द			ग्रामणी ईकारांत शब्द (१)		
प्र०	सखा	सखायौ	सखाय	ग्रामणी	ग्रामण्यौ	ग्रामण्य
द्वि०	सखाय	,,	सखीन्	ग्रामण्य	,,	,,
	सुधी (अच्छी बुद्धिवाला) की भांति			क्रोष्टु (शृगाल, गीदड़) शब्द		
प्र०	सुधी	सुधियौ	सुधिय	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टार
द्वि०	सुधिय	,,	,,	क्रोष्टार	,,	क्रोष्टॄन्
	दीर्घ ऊकारांत खलपू शब्द			भ्रू (आंखकी भौंह) (२)		
प्र०	खलपू	खलप्वौ	खलप्व	भ्रू	भ्रुवौ	भ्रुव
द्वि०	खलप्व	,,	,,	भ्रुव	,,	,,
	(३) पितृ (पिता बाप)			ओकारांत गो (गाय बैल) शब्द		
प्र०	पिता	पितरौ	पितर	गौ	गावौ	गाव
द्वि०	पितर	,,	पितॄन्	गां	,,	गा,
	ऐकारांत—रै (धन) शब्द			औकारांत ग्लौ (चन्द्र) शब्द		
प्र०	रा	रायौ	राय	ग्लौ	ग्लावौ	ग्लाव
द्वि०	राय	,,	राय	ग्लाव	,,	,,
	(४) जकारांत भिषज् (वैद्य) शब्द			नकारांत श्वन् (कुत्ता) युवन् शब्द		
प्र०	भिषक (ग्)	भिषजौ	भिषज	श्वा	श्वानौ	श्वान
द्वि०	भिषज	,,	,	श्वान	,,	शुन
	पथिन् (मार्ग) शब्द			महत् (बड़ा) शब्द		
प्र०	पथा	पथानौ	पथान	महान्	महांतौ	महांत
द्वि०	पथान	,,	पथ	महांत	,,	महत
	(५) ददत् (देता हुआ) शब्द			पुमस् (पुरुष) शब्द		
प्र०	ददत्	ददतौ	ददत	पुमान्	पुमांसौ	पुमांस
द्वि०	ददत	,	,,	पुमांसं	,,	पुंस

१—'सुधी' 'श्री' को छोड़ कर शेष ईकारांतों के रूप इसके समान होंगे। २ स्वभू, स्वयंभू पुनर्भू वर्षाभू को छोड़ कर इस शब्द जिनके अन्त में ऊ है उनके रूप भ्रू के समान होते हैं। और इन चारोंके तथा शेष ऊकारांतोंके खलपूके समान। ३ धातृ जामातृ देवृ न सव्येष्ठृके रूप पिताके समान, शेष ऋकारांतोंके दातृ के समान। ४ जिन शब्दोंके अन्तमें भज सृज यज यज राज भ्राज है उनकी तथा परिव्राज्, ऋज इनसे भिन्न शब्दोंके रूप इसके समान होंगे। ५ इसी प्रकार दधत् जक्षत् जाग्रत् आसत्, दरिद्रत्, शासत् चकासत् शब्दोंके रूप होंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सखाय, ग्रामणी, (गांवका मुखिया) क्रोष्टार, सुधी, जामातरौ, श्वान, पथान, भिषक्, पुमान, गा, युन ।

हिंदी बनाओ—

महान् कोलाहल वर्त्तते। पुमांस परस्पर विवदते (विवाद करते हैं)। सुधिय शीघ्र एव शास्त्रज्ञातार भवति। खलप्व (खलियान साफ करने वाला) खल (खलियान) गच्छति। गाव चैव व्रजति। कृषका गा दुह्यति। लुव धान्य लुनति। राजा राय वितरति। होता पुमांस आशीर्वादान् पठति। मूर्खा भिषज श्लाघ इच्छति। राम कण्व जात पत एक भिषग् आनीय। सर्पा तथा श्वाना च कुत्सित पथान श्रयति। त्यागी श्रेष्ठी उपकारार्थं महत राय ददत् पुण्य अर्जति। ग्रामीणा (गांवके) पुमांस ग्रामण्य मानति। द्यौ आकाश द्योतते। देवर विलोक्य (देख कर) भ्रातृजाया हसति। विद्वांस नर जिन अर्चति।

संस्कृत बनाओ—

लडका चन्द्रमाको देखता है और रोता है। रातको (नक्त) श्वान भोंकते हैं। सेनापति (सेनानी) सेनाको आज्ञा देता है। पिता पुत्रको कहता है। पुत्र पिताका सम्मान करता है। लोग बहुत धन कमाते हैं पर लोभ नहीं छोडता है। जो(ये) सीधे मार्ग पर चलते हैं वे (ते) बुद्धिमान् हैं। कुत्ता जानवर है तो भी (तथापि) स्वामिभक्त होता है। रातको धनकी रक्षा करता है। इस लिये लोग कुत्तोंकी भी रक्षा करते हैं। बैल बडा उपकारी जीव है घास खाता है पर बडा परिश्रम करता है। दामादको (जामातृ) श्वशुर उपदेश देता है। धनको धारता हुआ (दधत्) भी कृपण कुछ (किमपि) दान नहीं देता है। कंजूस आदमी बडा उपकारी है क्योंकि मरणानन्तर सब धन यहीं (अत एव) छोड़ जाता है। सारथि (सव्येष्ट) रथके पास जाता है। युवा लोग बलवान् होते हैं।

द्वितीय अध्याय ।

स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथम पाठ ।

आ—(१)—कारान्त ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	बालिका (१)	कथां	शृणोति ।	लड़की	कथा (किस्सा) को	सुनती है ।
	मनोरमा	कथां	गदति ।	मनोरमा	कथा	कहती है ।
	प्रजा	विद्यां	नमति ।	प्रजा	विद्या	नमती है ।
	कविता	शोभां	वितरति ।	कविता	शोभा	देती है ।
	पिपीलिका	पिपासिकां	छर्दति ।	चींटी	[illegible]	[illegible] है ।
२	द्वे	कन्ये	नर्ततः ।	दो लड़कियाँ	दो कन्याएँ	नाचती हैं ।
	लते	प्रासादं	भूषतः ।	दो लता ये	महलको	शोभित करती हैं ।
	बालिके	लते	सिंचतः ।	दो लड़कियाँ	दो लताएँ	सींचती हैं ।
	बालको	गावौ	नुदतः ।	दो लड़के	दो गायें	हाँकते हैं ।
	मुनी	विद्ये	ध्यायतः ।	मुनि	दो विद्याओंका	ध्यान करते हैं ।
३	बालिकाः	मालाः	सीव्यन्ति ।	लड़कियाँ	मालाओंको	सीती हैं ।
	प्रजाः	कन्याः	लज्जन्ति ।	आपसमें	कन्याएँ	लज्जित होती हैं ।
	भृत्याः	मालाः	स्तुवन्ति ।	नौकर	[illegible]	[illegible] है ।
	मुनिः	विद्याः	ध्यायन्ति ।	मुनि	विद्याओंका	ध्यान है ।

१—पुंलिङ्ग कुछ अकारान्त शब्दोंके पीछे—(आकारान्त) कर देनेसे वह स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं। जैसे—बाल—बाला अथवा, आकारान्त कुछ शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। २—जिन पुंलिङ्ग अकारान्त शब्दोंके अन्तमें 'क' होता उसको स्त्रीलिङ्ग बनानेमें 'क' के पहिले 'अ' को 'इ' हो जाता—जैसे—बालकका स्त्रीलिङ्ग बनाना हो—'बालका' पहिले नियमसे हुआ पर उसके 'क' के पहिले 'ल' में के 'अ' को 'इ' हो जाता हो—बालिका होगा।

निम्नलिखित शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

उचत, चुटति, लुपति, सिचत, मनंति, तर्जत, गर्दति, कन्या, बाले, भार्या, छाया, कथा, विद्ये, दया, तृष्णा, रमा, रामे, हिंसा।

शुद्ध करो—

बालिका विद्यो इच्छति। कन्ये नृत्य तर्जति। माला पत्रिण काचति। छपा प्रेमार्या अनुगच्छत। विद्या बालिकाम् भूषति। बालिके साधून् पृच्छति। भृत्या लतान् जेपति। पाठिको कान्ये तर्जेत। विद्या शोभ पितरत।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उच	सोचना	(उच्+अ+ति)	उचति,	उचत,	उचति।
गद	कहना	(गद्+अ+ति)	गदति,	गदत,	गदति।
म्ना	सोचना	(मन्+अ+ति)	मनति,	मनत,	मनति।
तृ (१)	तिरना	(तर+अ+ति)	तरति,	तरत,	तरति।
छड	काटना	(छड्+अ+ति)	छडति	छडत	छडंति।
तर्जे	डाटना	(तर्ज्+अ+ति)	तर्जति,	तर्जत,	तर्जति।
भूष	शोभितकरना	(भूष्+अ+ति)	भूषति,	भूषत,	भूषति।
रुह	उगना	(रोह्+अ+ति)	रोहति	रोहत,	रोहंति।
चुट	काटना	(चुट्+अ+ति)	चुटति	चुटतः,	चुटति।
ध्यै	ध्यानकरना	(ध्याय्+अ+ति)	ध्यायति,	ध्यायत,	ध्यायति।
शस	स्तुतिकरना	(शस्+अ+ति)	शंसति,	शसत,	शसंति।
जेप	सोचना	(जेप्+अ+ति)	जेपति,	जेपत,	जेपति।
लुप	लुञ्ज काटना	(लु प्+अ+ति)	लु पति	लु पत,	लु पति।

१—"वि उपसर्ग लगानेसे "देना" अर्थ हो जाता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	विद्या	विद्ये	विद्याः ।
द्वितीया—	विद्यां	विद्ये	विद्याः ।

इस प्रकार सब 'आ' कारांत शब्दोंके रूप जानना।

संस्कृत बनाओ—

बकरी (अजा) घास खाती है। घोडी (अश्वा) तलाव को जाती है। चटिया चौसार को जाती है। कोयल (कोकिला) बोलती है। मूषिका छिद्र में घुसती है।

द्वितीय पाठ।

इकारांत (१)।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	बुद्धि	मानुषं	भूषति।	बुद्धि	मनुष्यको	भूषित करती है।
	रात्रि	दीप्तिं	विसति।	रात	कान्तिको	छिपा देती है।
	वृष्टि	ओषधिं	सेचति।	वृष्टि	औषधिको	सींचती है।
	कान्ति	बालिकां	भूषति।	कान्ति	लड़कीको	भूषित करती है।
	वाति	ऊर्मिं	मथति।	वायु	लहरोंको	मथती है।
२	ओषधी	रात्रिं	भूषतः।	दो औषधि	रात्रिको	भूषित करती हैं।
	बालिका	ऊर्मी	पश्यति।	लड़की	दो लहरें	देखती है।
	कन्ये	ओषधी	सिंचतः।	दो कन्यायें	दो औषधी	सींचती हैं।
३	ओषधयः	रात्रीः	भूषंति।	औषधियां	रात्रियों को	भूषित करती हैं।
	वृष्टयः	ओषधीः	सिंचंति।	वृष्टि समुदाय	औषधियोंको	सींचता है।
	निद्रा	प्रमत्तं	पोषति।	निद्रा	प्रमादी को	पुष्ट करती है।
	तरयः	नदं	तरंति।	नावें	नालेको	पार करती हैं।

१—जिन शब्दों के अन्त में 'ति' होती है वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
दीप्तय'	मानवान्	लुभति।	दीप्तय	मानवान्	लभति।
मूर्खा	गतय	न पश्यति।	मूर्खाः	गति	न पश्यति।
स्मृति	बालक	भूषति।	स्मृति	बालक	भूषति।
हृष्टो	धूलि	वेपति।	हृष्टय	धूलि	वेपति।
प्रततय	पादप	श्रयति।	प्रतति (लता) पादप		श्रयति।

निम्नलिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) विलत, वेपति, मथति, पोषत, कुचति, विषत, पोषथय, वृत्ति (व्यापार), गती, पक्षय, धूलो, मृतिः (मरण), क्षतयः, वृष्टो, स्तुति, गति प्रततय' (पङ्क्ति, लता) ऊर्मि, तिथी, तरी, (नाव) कटि (कमर) नाडी, येपय', रात्रय, अङ्गुली।

हिन्दी बनाओ—

तारका रात्री भूषति। पयोमुच ऊर्मिं पोषति। साध्व कीर्तिं न कांक्षति। प्रियय' विहगम (पक्षी) पक्षी पश्यति। बुधयो'पि शोभते।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विल	छिपाना	(विल्+अ+ति)	विलति,	विलत,	विलति।
विषु	सींचना	(वेष्+अ+ति)	वेषति,	वेषत,	वेषति।
लुभ	सुखकरना	(लुभ्+अ+ति)	लुभति,	लुभत,	लुभति।
मथ	मथनानष्टकरना	(मथ्+अ+ति)	मथति,	मथत,	मथति।
पुष	पुष्टकरना	(पोष्+अ+ति)	पोषति,	पोषत,	पोषति।
कुच		[illegible]+अ+ति)	कुचति,	कुचत,	
मृषु		[illegible]+अ+ति)	मर्षति,	मषत,	

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	बुद्धि	बुद्धी	बुद्धयः ।
द्वितीया—	बुद्धिं	,,	बुद्धीः ।



तृतीय पाठ ।

ई—कारांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	कुमारी	नदीं	व्रजति ।	कुमारी	नदीको	जाती है।
	मृगी	अटवीं	व्रजति ।	मृगी	वनको	जाती है।
	जननी	कुमारीं	तर्जति ।	माता	कुमारीको	मारती है।
	औषधी	रजनीं	भूषति ।	औषधी	रात्रिको	भूषित करती है।
२	भगिन्यौ	तरण्यौ	प्रविशतः ।	दो बहनें	दो नावोंमें	बैठती है।
	जनन्यौ	कदल्यौ	खादतः ।	दो माताएँ	दो केले	खाती है।
	धीवर्यौ	धुन्यौ	गच्छतः ।	दो धीवरी	दो नदियोंको	जाती है।
	कुमार्यौ	जनन्यौ	पृच्छतः ।	दो कुमारी	दो माताओंको	पूछती है।
३	जनन्यः	अपराधान्	मर्षन्ति ।	माताएँ	अपराध	क्षमा करती है।
	कुमार्यः	मृगीः	पश्यन्ति ।	कुमारी	हरिणियोंको	छूती है।
	नद्यः	अब्धिं	प्रतिगच्छन्ति ।	नदियां	समुद्रके	प्रति जाती है।
	चन्द्रमा	रजनीः	लाञ्छति ।	चन्द्रमा	रात्रियोंको	चिन्हित करता है।

नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग कर वाक्य बनाओ—

(क) पितृव्यौ(१), गुणवती (२) मानिन्यः, सुन्दरी, अटव्यौ, श्रीमती, गायत्र्यः, (३) गच्छन्ती बिभ्रत्यौ, जाग्रत्यः, तप

१ शेष ईकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। (२) मत् (वत्) ईयस् तथा 'इन' भागांत शब्द अंतमें 'ई' लगानेसे स्त्रीलिंग हो जाता है। जैसे—गुणवत् (पुंलिंग)का स्त्रीलिंग 'गुणवती' और मानिन्‌का 'मानिनी' कनीयस्‌का 'कनीयसी' होगा। (३) अत्

खिन्नी, वराकिन्य (दीन), गरीयस्य, ज्यायस्यौ, कनीयस्य, लज्जावती, मनोहारिणी, मृण्मयी (मट्टीकी), भक्तिमती, गुर्वी, पटीयसी (अति चतुर)।

(ख) लाञ्छति, सर्पन्त, मृश्यति, घामति, तर्दन्त, क्रामति (उल्लघन करना), यजत, लाडति, मण्डत, तर्दन्ति, घामत ।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
तिष्ठतीं	गच्छन्तीं	वदति ।	तिष्ठन्त्यं	गच्छन्तीं	वदति ।
विदुष्यौ	वदत्य	तर्जंत ।	विदुष्यौ	वदन्तौ	तर्जन्त ।
मानिन्य	गरीयसी	तर्दंत ।	मानिन्यौ	गरीयसी	तर्दंत ।
कनीयसी	करिण्य	पश्यति ।	कनीयसी	करिणी	पश्यति ।
वराकिन्य	शाखा	लुपत ।	वराकिन्य	शाखा	लुपति ।
राजपुत्र	वन	क्रामति ।	राजपुत्र	वन	क्रामति ।
पापीयसी	धर्म	भिद ति ।	पापीयसी	धर्मं	भिनत्ति ।
जैनवाणी	मति	भूपत ।	जैनवाणौ	मति	भूषति ।
भक्तिमत्ये	जिन	पर्चंत ।	भक्तिमत्यौ	जिन	पर्चंत ।
हस्ती	हस	तर्दंत ।	हस्तौ	हस	तर्दंत ।

संस्कृत बनाओ—

मानिनी स्त्रियां बड़प्पन (गौरव) चाहती हैं। दो सुंदरी दो हरिणियों को छूती हैं। अतिवृद्धा (ज्यायसी) छोटी छोटी स्त्रियों (कनीयसी) को उपदेश देती हैं। रूपवती गुणवतीको मारता है। पापिन दुःख पाती है। लज्जावान्नी स्त्री विनय करती है (विन-

(शब्द) मान्त शब्द भी 'ई' लगा देनेसे स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं पर उनके 'ती' से पहिले 'न' भी लग जाता है—जैसे भावत्+ई=भावती हुआ जब 'ती से पहिले 'न' आया तो भावन्ती हुआ। ऐसे शब्दोंको भावती इसप्रकार अनुस्वार भी लिखते हैं।

यति)। ब्राह्मणी शूद्राको ताडना देती है। पाठिका (उपाध्यायी) लड़कियोंको कहती है। बहिन (भगिनी) बहिनको छूती है। कुमार (कुलाल) मट्टीकी (मृत्तायो) मूर्ति बनाता है। मातायें जैनवाणीको पूजती हैं। नदियां समुद्रको जाती हैं। गानेवाली (गायिका) गीत गाती हैं।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
क्रमु	उछलना	(क्राम्+अ+ति)	क्रामति,	क्रामतः,	क्रामंति।
व्रज	जाना	(व्रज+अ+ति)	व्रजति,	व्रजतः,	व्रजंति।
तर्द	मारना	(तर्द्+अ+ति)	तर्दति,	तर्दतः,	तर्दंति।
विशो	भीतरजाना	(विश्+अ+ति)	विशति,	विशतः,	विशंति।
चमू	खाना	(चाम्+अ+ति)	चामति,	चामतः,	चामंति।
सर्जं	बनाना	(सर्ज्+अ+ति)	सर्जति,	सर्जतः,	सर्जंति।
मह	पूजना	(मह+अ+ति)	महति,	महतः,	महंति।
स्पृशो	छूना	(स्पृश्+अ+ति)	स्पृशति,	स्पृशतः,	स्पृशंति
लाछि	चिह्नितकरना	(लाञ्छ्+अ+ति)	लाञ्छति,	लाञ्छतः,	लाञ्छंति।
तर्जं	डांटना	(तर्ज्+अ+ति)	तर्जति,	तर्जतः,	तर्जंति।
(वि) णीञ्	विनयकरना	(नय्+अ+ति)	नयति,	नयतः,	नयंति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया—	नदीं	नद्यौ	नदीः

चतुर्थ पाठ।

उ कारान्त।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१	धेनुः	वत्सान्	त्यजति।	गाय	बछड़ोंको	छोड़ती है।
	गोपः	धेनुं	दुग्धि।	ग्वाला	गायको	दोहता है।
	मूषिकः	पाशस्नायुं	कृन्तति।	मूसा	जालको तांतको	काटता है।
	रेणुः	पृथिवीं	पिनह्यति।	रेणु	पृथिवीको	ढांकती है।
२	धेनू	छायां	इच्छतः।	दो गायें	छाया	चाहती हैं।
	गोपालः	धेनू	दुग्धि।	गोपाल (ग्वाला) दो गायको		दोहता है।
	पिपीलिका चञ्चू		दशति।	चिवटी	दो चोंचसे	काटती है।
	मूषिकः	पाशस्नायू	कृन्तति।	मूसा	दो जालकी तांतको	काटता है।
३	धेनवः	गोशालां	गच्छन्ति।	गायें	गोशालाको	जाती हैं।
	मूषिकः	पाशस्नायूः	कृन्तति।	मूसा	पाशस्नायुओंको	काटता है।
	वृष्टिः	रेणून्	सिञ्चति।	वर्षा	धूलिको	सींचती है।
	रेणवः	आकाशं	वृण्वन्ति।	धूलिके कण	आकाशको	ढांकते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) क्रामति, नमति, चामत, गदति, सर्पति, मुञ्चत, मर्दति, रोहति, लाञ्छति, कुचत।

(ख) चञ्चवः, धेनू, स्नायवः, रज्जू (रस्सी), तनवः (शरीर), धेनुः, करेणवः (हस्तिनी)।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
रज्जू	धेनुः	लाञ्छति।	रज्जुः	धेनुं	लाञ्छति।
धेनू	नदीं	गच्छति।	धेनवः	नदीं	गच्छन्ति।
रेणु	धेनवः	भूषति।	रेणुः	धेनूः	भूषति।
हनू (पूंछ)	वानरौ	लाञ्छत।	हनू	वानरौ	लाञ्छत।
आहार,	तनवः,	पोषति।	आहारः	तनूः	पोषति।

संस्कृत बनाओ—

दो भाई दो गायोंको देखते हैं। हिंदुलोग गायोंकी रक्षा करते हैं। ब्राह्मण वायुको नहीं छूते हैं। वृष्टि चोंचको भिगोती है। भ्रमर दो पूछों (हनु) को काटते हैं। पुष्प रेणुयें राजमार्गको चिन्हित करती हैं। लड़की रस्सीको लाती है (आनयति) और लड़की पकैलो (केयला) घरको नहीं जाती है। नारी बाजार (हाट)को जाती है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया—	धेनुं	,,	धेनूः

पंचम पाठ।

ऊ कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया
१	वधू	स्वामिनं	पृच्छति।	वधू	पतिको	पूछती है
	स्वामी	वधूं	वदति।	स्वामी	वधूको	कहता है
	श्वश्रू	वधूं	स्पृशति।	सासु	वधूको	छूती है
	चमू	शत्रुसैनिकान्	जयति।	सेना	शत्रुओंकी सेनाको	जीतती है
	सेनापति	चमूं	गूहति।	सेनापति	सेनाको	छिपाता है
२	वध्वौ	श्वश्रूपादान्	स्पृशतः।	दो वधू	सासुके पैरोंको	छूती हैं
	देवरः	वध्वौ	प्रणमंति।	देवर	दो वधुओंको	प्रणाम करते हैं
	वधूः	श्वश्र्वौ	पृच्छति।	वधू	दो सासुको	पूछती है
	चम्वौ	विश्रामं	कांक्षतः।	दो सेनायें	विश्राम	चाहती हैं

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
३ वध्व:	श्वश्रूं	प्रणमंति।	बहुयें	सासुको	प्रणाम करती हैं।
सीता	श्वश्रू	वदति।	सीता	सासुयोंको	कहती है।
श्वश्रूव	वध्व:	तर्जंति।	सासु	बहुयोंको	ताड़ना देती हैं।
चम्व	शत्रुचमू:	जयति।	सेनायें	शत्रुसेनायोंको	जीतती हैं।

संस्कृत बनायो—

बहुयें पतियोंको सन्तुष्ट करती हैं। दो बहुयें राजसेनाको देखती हैं। सासु बहुयोंको पूछती है। सेना विदेशको जाती है। पानी (जल) शरीरको भिगोता है। शरीर व्यायामको चाहता है। बढ़इन (कारू) लकडीको छीलती है (तक्षति)। सेनापति सेनाको छोड़ता है। सासु बहुयोंको उपदेश देती हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनायो—

वध्व:, तर्जंति, गृहस, श्वश्र्वौ, चम्व, चमू, कारू:, तनु।

शुद्ध करो—

स्वामिन वध्व: पृच्छति। वधु ह्रीच्छति। चम्व शत्रु न जयति। कर्मकरा कारू वदति।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ह्रीच्छ्	लज्जाकरना	(ह्रीच्छ्+अ+ति)	ह्रीच्छति,	ह्रीच्छत,	ह्रीच्छति।
जि	जीतना	(जय्+अ+ति)	जयति,	जयत,	जयति।
गुहौष्	छिपाना	(गुह्+अ+ति)	गूहति	गूहत,	गूहति।
मृशौ	छूना	(मृश्+अ+ति)	मृशति,	मृशत,	मृशंति।
णम	नमस्कारकरना	(नम्+अ+ति)	नमति,	नमत,	नमति।

	द्वि०	बहु०
प्रथमा— वधूः	वध्वौ	वध्वः ।
द्वितीया—वधूम्	,,	वधूः ।

षष्ठ पाठ ।

ऋ—कारान्त ।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।
१ माता	दुहितरं	पृच्छति ।	मा	लड़कीको	पूछती है ।
ननान्दा	वधूं	तर्जति ।	ननदी	बहूको	डांटती है ।
वधूः	ननान्दरं	तर्दति ।	बहू	ननदको	काटती है ।
२ दुहितरौ	मातरं	पृच्छतः ।	दो लड़कियाँ	माताको	पूछती हैं ।
कन्ये	मातरौ	प्रणमतः ।	दो कन्याएँ दो माताओंको प्रणाम करती हैं ।		
ननान्दरौ	वधूं	तर्जतः ।	दो ननदें	बहूको	डांटती हैं ।
वधूः	ननान्दरौ	सेवति ।	बहू	दो ननदोंकी	सुश्रूषा करती है ।
३ दुहितरः	मातॄः	पृच्छन्ति ।	लड़कियाँ	माताओंको	पूछती हैं ।
ननान्दरः	वधूः	तर्दन्ति ।	ननदें	बहुओंको	काटती हैं ।
वध्वः	ननान्दॄः	सेवन्ति ।	बहुएँ	ननदोंकी	सुश्रूषा करती हैं ।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
माता	दुहितारं	वदति ।	माता	दुहितरं	वदति ।
दुहितारः	मातॄः	नमन्ति ।	दुहितरः	मातॄः	नमन्ति ।
वध्वः	ननान्दॄन्	सेवन्ति ।	वध्वः	ननान्दॄः	सेवन्ति ।

निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पृच्छति, ननान्दा, ननान्दरौ, सेवति, तर्दति, मातरः, मातॄः, दुहितरः, तर्जन्ति, नमन्ति, यातरः (पतिके भाईकी स्त्री)

एकवचन	द्वि	बहुवचन।
प्रथमा—दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः।
द्वितीया—दुहितरं	,,	दुहितॄः।

सप्तम पाठ।

व्यञ्जनांत—स्त्रीलिंग।

च—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	जिनवाक्	तत्त्व	भाषते।	जिनवाणी	तत्वोंका	वर्णन करती है।
	बालक	वाच	भाषते।	बालक	वाणी	बोलता है।
	स्रग्	पशु	वेष्टते।	माला	पशुको	वेष्टित करती है।
	परिव्राट्	त्वच	ईक्षते।	संन्यासी	वृक्षके वल्कलको	ताकता है।
	नर	देवस्रच	लोचते।	मनुष्य	देवमालाको	देखता है।
	रुक्	आकृति	कषते।	दीप्ति	आकारको	ढकती है।
	कविवाक्	देवान्	कत्थते।	कविकी वाणी	देवोंकी प्रशंसा	करती है।
	जन	त्वच	ईक्षते।	मनुष्य	त्वचाको	देखता है।
२	श्रावकौ	जिनस्रचौ	श्लाघेते।	दो श्रावक दो जिनकी मालाकी प्रशंसा करते हैं।		
	कन्यावाचौ	मातर	कत्थेते।	कन्याओंकी दो वाणी माताकी प्रशंसा करती हैं।		
	बालकौ	वाचौ	भाषेते।	दो लड़के	दो वाणी (वचन)	बोलते हैं।
	नरौ	देवस्रचौ	लोचेते।	दो जन	दो देवमाला	देखते हैं।
	कवी	वाचौ	ईहेते।	दो कवि	दो (प्रकारकी) वाणी	चाहते हैं।
३	रुच	देवान्	वेष्टते।	कांतियां	देवोंको	वेष्टित करती हैं।
	नराः	देवस्रच	लोचते।	मनुष्य	देवमालाओंको	देखते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
साधव	जिनान्	श्लाघन्ते।	साधो	जिनको	प्रशंसा करते हैं।
कवय	वाच	ईहन्ते।	कवि वाणीयों (नाना प्रकारकी)		को चाहते हैं।
बालका	वाच	भाषन्ते।	बालक	वाणी	बोलते हैं।
हय	घासतिं	कम्पते।	बालिया	घासतिको	हांकती है।

[illegible]			पद		
बटु	ऋच (बिदमाखा)	ईहति।	बटु	ऋच	ईहते।
पथिको	वनस्थलीं	ईन्वत।	पथिको	वनस्थलीं	ईन्वेते।
गिरय		शोभन्ति।	गिरय		शोभन्ते।
लते	वृक्ष	वेष्टत।	लते	वृक्ष	विष्टेते।
बालिका	वाच	भाषति।	बालिका	वाच	भाषते।
मुनय	राम	श्लाघति।	मुनय	राम	श्लाघते।
विदुष्यौ	गुणवन्त	कत्थत।	विदुष्यौ	गुणवन्त	कत्थेते।
चन्द्रकांति	प्रासादं	कम्पति।	चन्द्रकांति	प्रासाद	कम्पते।
मानवा		म्रियति।	मानवा		म्रियते।
वाक्		प्यायति।	वाक्		प्यायते।

शुद्ध करो—

वाक् प्यायेते। कवियाव देवान् अर्चंति। मानवा देवता ईहंते। श्रावका स्रक् न स्पृशति। वृक्ष शोभते। बालका स्रक् श्लाघते। सैना जिनवृष ईंक्षते।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कत्थते, श्लाघेते, कम्पते भाषते ईहते, वेष्टेते, लोचते, ईहेते, ईहन्ते, वृक्ष, स्रज्, ऋचो, वाक्, वाच।

संस्कृत बनाओ—

लड़के दातौनों (त्वच्) चाहते हैं। सूर्यकांति आकाशको

भूषित करती है। नौकर दो बातें बोलता है। कविकी वाणी लोगोंको संतुष्ट करती है। विद्यार्थी ऋचायें पढते हैं। कवि ऋचायें बनाते हैं। वैद्य जाविको (त्वच्) चाहता है।

धात्वर्थ[१]

धातु	अर्थ	प्रक्रिया	एक०	द्वि	बहु०
कत्थ (१)	श्लाघाकरना	(कत्थ्+अ+ते)	कत्थते,	कत्थेते,	कत्थते।
ईक्षे	देखना	(ईक्ष+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षते।
भाषे	बोलना	(भाष्+अ+ते)	भाषते,	भाषेते,	भाषते।
श्लाघृङ्	प्रशंसाकरना	(श्लाघ्+अ+ते)	श्लाघते,	श्लाघेते,	श्लाघते।
वेष्टे	चारोंतरफसेघेरना	(वेष्ट+अ+ते)	वेष्टते,	वेष्टेते,	वेष्टते।
मृङ्	मरना	(म्रिय्+अ+ते)	म्रियते,	म्रियेते,	म्रियते।
ईहे	यत्नकरना, चाहना	(ईह+अ+ते)	ईहते	ईहेते,	ईहते।
लोचृङ्	देखना	(लोच्+अ+ते)	लोचते,	लोचेते,	लोचते।
कावृङ	ढांकना	(कव्+अ+ते)	कवते,	कवेते,	कवते।
वृतुङ्	उपस्थितरहना	(वर्त्+अ+ते)	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तते।
भिक्षे	भीखमांगना	(भिक्ष्+अ+ते)	भिक्षते,	भिक्षेते,	भिक्षते।
प्यङ्	बढना	(प्याय्+अ+ते)	प्यायते	प्यायेते,	प्यायते।
एधे	बढना	(एध्+अ+ते)	एधते	एधते,	एधते।
शुभे	शोभना	(शोभ्+अ+ते)	शोभते,	शोभेते,	शोभते।

	एक०	द्वि	बहु
प्रथमा—	वाक्	वाचौ	वाच।
द्वितीया—	वाच	वाचौ	वाच।

१—जिन धातुओंमें 'ङ् अथवा 'ए लगा है वे धातु आत्मनेपदी हैं इनके एकवचनमें 'ते द्विवचनमें 'एते बहुवचनमें 'अन्ते जोड़ देना चाहिये।

अष्टम पाठ।

द्—कारांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	विपत्	मानवं	आपतति।	विपत्ति	मनुष्य पर	पड़ती है।
	लोकाः	परिषदं	गच्छन्ति।	लोग	सभाको	जाते हैं।
	शरत्	पथिकान्	क्षुभति।	शरद ऋतु पथिकों(राहगीरों)को		क्षुभाती है।
	चातकाः	शरदं	निंदंति।	चातक (पपीहा) शरद ऋतुकी		निंदा करते हैं।
	पुण्यवान्	संपदं	लभते।	पुण्यात्मा (जीव)	संपत्ति	पाता है।
२	परिषदौ	विद्यां	वितरतः।	दो सभायें	विद्याको	देती हैं।
	बालकः	ककुदौ	पश्यति।	लड़का	दो सींग	देखता है।
	बालाः	परिषदौ	गच्छन्ति।	लड़के	दो सभाओंको	जाते हैं।
	पंडितः	संविदौ	चरति।	पंडित	दो प्रतिज्ञायें	करता है।
३	विपदः	मानवं	आपतन्ति।	विपत्तियां	मनुष्योंपर	गिरती हैं।
	मानवाः	संपदः	कांक्षन्ति।	मनुष्य	संपत्तियां	चाहते हैं।
	परिषदः	विद्याः	वितरन्ति।	सभायें	विद्यायें	देती हैं।
	जनाः	आपदः	निष्क्रामन्ति।	लोग	आपत्तियोंको	लांघते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

शरद्, संपद्, आपद्, विपद्, परिषद्, परिषद, उपनिषद्, (पड़ोसका मकान), संविद्।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	विपत् (द्),	विपदौ	विपदः।
द्वितीया—	विपदं,	विपदौ	विपदः।

नवम पाठ।

ध्—कारान्त।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	वीरुत्	वृक्ष	वेष्टते।	लता	पेड़को	लपेटती है।
	बालक	वीरुध	ईक्षते।	बालक	लताको	देखता है।
	क्षुत्	मानव	तुदति(ते)।	भूख	मनुष्यको	पीड़ा देती है।
	युत्	चमू	ग्रसति।	युद्ध	सेनाको	नष्ट करता है।
	पावक	समिध	दहति।	आग	यज्ञके काठको	जलाती है।
२	वीरुधौ	वृक्ष	वेष्टेते।	दो लतायें	पेड़को	लपेटती हैं।
	चमू	युधौ	जयति।	सेना	दो युद्धोंको	जीतती है।
३	युध	चमू	ग्रसति।	युद्ध	सेनाको	नष्ट करते हैं।
	निर्भया	युध	पश्यति।	निडर लोग	युद्ध	देखते हैं।
	वीरुध	वृक्ष	वेष्टते।	लतायें	वृक्ष	वेष्टित करती हैं।
	समिध	अग्नि	काक्षति।	समिध (लकड़ी)	अग्निको	चाहती हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे संस्कृत बनाओ—

ईक्षेते, वीरुध, समिधौ, युध, क्षुध, क्षुध।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
ईक्षे	देखना	(ईक्ष्+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षन्ते।
तुदीञ्	पीडादेना	(तुद्+अ+ते)	तुदते,	तुदेते,	तुदन्ते।
वेष्टे	घेरना	(वेष्ट्+अ+ते)	वेष्टते,	वेष्टेते	वेष्टन्ते।
ग्रस	हिंसाकरना	(ग्रस्+अ+ति)	ग्रसति,	ग्रसतः,	ग्रसन्ति।
दहो	जलाना	(दह्+अ+ति)	दहति,	दहतः,	दहन्ति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	वीरुत्	वीरुधौ	वीरुधः ।
द्वितीया—	वीरुधं	वीरुधौ	वीरुधः ।

दशम पाठ ।

त्—कारांत ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	योषित्	तडितं	पश्यति ।	औरत	बिजलीको	देखती है ।
	सरित्	समुद्रं	गच्छति ।	नदी	समुद्रको	जाती है ।
	वृष्टि	सरितं	पोषयति ।	वर्षा	नदीको	बढ़ाती है ।
	विद्युत्	मेघं	अनुगच्छति ।	बिजली	मेघके	पीछे रहती है ।
२	योषितौ	सरितौ	पश्यति ।	दो स्त्रियां	दो नदीको	देखती है ।
	सरितौ	पर्वतपार्श्वान्	स्पृशत ।	दो नदियां	पहाड़ोंके पासके	पर्वतोंको छूतीहै ।
	विद्युतौ	योषितौ	लभति ।	दो बिजली	दो स्त्रियोंको	लुब्ध करती है ।
	कवि	तडितौ	दृश्यति ।	कवि	दो बिजुली	देखता है ।
३	योषित	तडित	पश्यति ।	नारियां	बिजली	देखती है ।
	वृष्टि	सरित	पोषयति ।	वर्षा	नदियोंको	पुष्ट करती है ।
	सरित	विद्युत	वहति ।	नदियां	बिजलियोंको	धारण करती है ।

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सरित, विद्युत योषित, तडित, योषित सवितौ (युद्धभूमि, प्रतिष्ठा) एध ते एधेते, शोभते वर्तते, दृश्यति, लुभत ।

संस्कृत बनाओ—

नदियां पहाड़ोंको वेष्टित करती हैं। बिजली मेघके साथ २ रहती है। स्त्रियां पतियोंको लुभाती हैं। विद्या स्त्रियोंको भूषित

करती है। बिजली मकानोंको जलाती है। यहां (अत्र) बहुत स्त्रियां हैं (वर्तन्ते)। स्त्रियां प्रयत्न करती हैं (ईहन्ते)।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
वृतुङ्	वर्तना (रहना)	(वर्त्+अ+ते)	वर्तते,	वर्तेते,	वर्तन्ते।
ईहि	यत्नकरना	(ईह्+अ+ते)	ईहते,	ईहेते,	ईहन्ते।
द्युते	दीप्तहोना	(द्योत्+अ+ते)	द्योतते,	द्योतेते,	द्योतन्ते।
ष्मिङ्	मुस्कराना	(स्मय्+अ+ते)	स्मयते,	स्मयेते	स्मयन्ते।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	सरित्	सरितौ	सरितः।
द्वितीया—	सरितं	"	"

एकादश पाठ।

स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
सुन्दरी बाला	मनोज्ञां लतां	पश्यति	सुन्दर लड़की	सुन्दर लताको	देखती है।
सुन्दर्यौ बाले	मनोज्ञे लते	पश्यतः	सुन्दर दो लड़की	दो मनोज्ञलतायें	देखती हैं।
सुन्दर्यः बालाः	मनोज्ञाः लताः	पश्यन्ति।	सुन्दर लड़कियां	मनोज्ञलतायें	देखती हैं।
चंचला लक्ष्मीः		वर्धते।	चंचल लक्ष्मी		बढ़ती है।

विदुष्यो रमण्यौ मयता साध्वी पच्छतः ।	विदुषी दो स्त्रियां संयमवाली साध्वीको पूछती हैं।
भीतार्थ शशक पलायमाना चमू अनुगच्छति।	भयभीत शश भागती हुई सेनाके पीछे जाते हैं।
मानिन्य नर्मदार सरलां वधू तजति।	मानिनी नर्मदाएं सीधी बहूको ताड़ती हैं।
श्वेतरोमाक्ष विभ्रती धेनु पायस व्रजति।	सफेद रोमोंको धारने वाली गाय आश्रमको जाती है।
ज्यायस्य योषित रुदती वधू उपदिशति।	ज्यादियां रोती हुई बहुओंको उपदेश देती हैं।
विदुष्य साध्वय सयता वाचं भाषते।	विदुषी साध्वियां परिमित वाणीको बोलती हैं।
पीडिता पत्नय गुर्वी वेदनां अनुभवति।	पीड़ित पत्नियां बहुत बड़ी वेदनाको भोगती हैं।
धस्या महानुभावा कर्त्री सेवते।	धीवर महानुभाव स्वामिनीको सेवती है।
दाम्नी योषित् मूल्यवतो दृषद वितरति।	दाता स्त्री मूल्यवाली पत्थरोंको बांटती है।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
शुद्धवसना ब्राह्मणौ दाम्नी योषत अचत ।	शुद्धवसने ब्राह्मणौ दाम्नी योषित अचत ।
रामचद्र मिथ्या दृषद वांछति।	रामचद्र मिथ्या' दृषद वांछति।
रुदती वालिका असत्यां याच भाषते।	रुदत्य वालिका असत्या वाच भाषते।
उज्ज्वला ओषधो द्योतेते ।	उज्ज्वले ओषधो द्योतेते।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
कुमार्यै श्यामलां वनस्थली शोचति ।	कुमार्यः श्यामलां वनस्थलीं शोचति ।
मेघवती पर्वतमाला विराजते ।	मेघवत्यः पर्वतमालाः विराजते ।
शिष्या, पवित्रा समिध आहरति ।	शिष्याः पवित्राः समिधः आहरति ।
तीव्रा पिपासा शुष्कां कंठः तुदति ।	तीव्रा पिपासा शुष्कं कण्ठं तुदति ।
क्लेशदायिनी क्षुत् संजाताः ।	क्लेशदायिनी क्षुत् संजाता ।
बुद्धिमती श्वश्रूः लज्जमानां वध्वौ पृच्छंति ।	बुद्धिमत्यः श्वश्रूः लज्जमाने वध्वौ पृच्छति ।
प्रखरा सूर्य एधते ।	प्रखरः सूर्यः एधते ।

शुद्ध करो—

सर्पाकार रज्जु वर्तंते । श्वेता धेनव शोभते । विदुषी योषितः मनोहारिणीं वाचः भाषते । क्षुधिता बालिके वाच न वदत । भृत्यः उदारमती कर्त्रीं सेवते । मनस्विनी कन्या कठोर वाच न भाषते । पलायमाना चमू दृष्टा । गंधयुक्ता पुष्परेणव गच्छन्तीं वध्वौ स्पृशति । प्रबला सरित समुद्र गच्छंति । म्लाना पुष्पमाला गंध न वितरति । गच्छन्ती बाला इतस्ततः (इधर उधर) पश्यति । मृत्तिका रजताकारा वर्तते ।

नीचे लिखे विशेषणोंको रखकर वाक्य बनाओ—

(क) रुचिरा (सुन्दर), मलीमसा (मलिन), पवित्रा, मनोज्ञा, पीडिता, श्रुता, प्रवीणा, पलायमाना (भागती हुई), म्रियमाणा (मरती हुई), म्लाना, ध्यानपरा, संयता, मधुरा, स्पष्टा, जनप्रिया, मनोरमा, शिक्षिका, उपदेशिका ।

(ख) मनोहारिणी, गुणवती, बुद्धिमती, स्रोतस्वती (बहने वाली), कल्लोलिनी (तरंगवाली), सुन्दरी, गरीयसी, बिभ्रती, गच्छन्ती,

वदती, तिष्ठती, गुर्वी, महती, ज्यायसी, धारयती कुर्वती, गदती, भवती, शोभती, सुमती।

एक एक योग्य विशेषण रखकर वाक्य पूरे करो—

——वधू वदति। ——शान्तिर्नाम्नि एधते। ——सती शोभते। ——योषित्—— गङ्गां पश्यति,——वृष्टि—— औषधी उत्पत्ति। ——कर्त्री——परिचारिका तर्जति। ——धेनव——गृह प्रत्यावर्तते। ——व्यथा सञ्जाता। वधू स्मरते। ——लोका—— दात्री भवति। परोपकारी——कीर्ति लभते। ——द्यु आकाश कवते। मिथ्या ——पुस्तिका भवति। विद्वांस——परिषद् गच्छति। वह्नि——समिधो दहति। ——वनस्थली शोभते। ——चन्द्रकला राजते।

(ख) निम्न लिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पराजिता, परिवर्द्धमाना, गच्छन्ती, वदती स्त्रियमाणे, गरीयसी, ज्यायसि, मायाविनी, सहगी लज्जावती, हिरण्मयी, (सुवर्णको) चमत्कारी, शीतलस्य, दात्र।

अशुद्ध	शुद्ध
श्यामस्त वनस्थली शोभते।	श्यामला वनस्थली शोभते।
मनस्वो राज्ञो परिचारिकां आदिशति।	मनस्विनो राज्ञी परिचारिकां आदिशति।
दयावत कर्त्री भृत्यान् दयते।	दयावती कर्त्री भृत्यान् दयते।
श्रीमत वधू ज्यायस श्वश्रू प्रणमति।	श्रीमती वधू ज्यायसी श्वश्रू प्रणमति।
ज्ञानी योषित वदत बालिकां उपदिशति।	ज्ञानिनी योषित् वदती बालिका उपदिशति।
तिष्ठती योषिती गच्छत कन्या आदिशति।	तिष्ठन्ती योषिती गच्छती कन्या आदिशति।

अशुद्ध।	शुद्ध।
साधव अपवित्र त्वचं न स्पृशति।	साधव अपवित्रां त्वच न स्पृशति।
बुद्धिमती कन्ये हृद्यान् उद्यत।	बुद्धिमत्यौ कन्ये हृद्यान् उद्यत'।
धूसरी धेनु गृहं आगच्छत।	धूसरे धेनू गृहं आगच्छत'।
आपद आपतित।	आपद आपतिता।
सम्पदा' सेव्य'।	सम्पदा सेव्या।
जना भवनभूषित अयोध्यां ईक्षते।	जना भवनभूषितां अयोध्यां ईक्षते।
रत्नाभरणा' बालिका दयावत मातर अर्चति।	रत्नाभरणा बालिका दयावतीं मातर अर्चति।
भर्ता शोभां पश्यत योषित भाषते।	भर्ता शोभां पश्यतीं योषित भाषते।

शुद्ध करो—

गुणवत पत्न्य स्वामिनं ईक्षते। शुभ्र कौमुद्य (चांदनी) निवसुधां प्रशिम उपगत। मनस्विन कार्ये मधुर वाच वदति। छायावर्षी पयोमुक् नीलवर्णा गिरि कुवति। पवित्र पुष्परेणव साधून् भूषति। साध्वी योषित स्वकीयान् स्वामिनो अनुगच्छत'। मनोज्ञ पुत्री सर्वप्रिया भवति। रूपवान् भार्या अस्तु। व्यभिचारी माता अपि (भो) अस्तु। जनकसुता सीता राम अनुव्रजति। रामानुजा लक्ष्मण भ्रातृभार्या सीता अर्चति। श्वेत पक्षपंक्ति आकाश गच्छति। हंसानुरक्ती हंस्य मानस गच्छति।

योग्य कर्ता और कर्मको यथास्थान पर रख कर वाक्य पूरे करो—

गुणवत्य ——देवसदृश——सेवते। तृष्णार्त्ता —— तृष्णातुरां ——दयते। सरलस्वभावा ——साध्वीं—— पर्हति। स्नानाकांक्षिण्य.——निर्मलसलिलां——अवगाहते। अमत्य.——

श्रामायमाना——पश्यति। ज्ञातसीतापरित्याग——समुद्र वेष्टिता——रक्षति। निराशा——प्रति (१) निवर्त्तते। मनोरमा——जराग्रस्त——न कांक्षति। पानमत्ता——प्रफुल्ल——न त्यजति। स्वयंवरा——नृपकुलशोभिता——विशति। पतिलाभाकांक्षिण्य——परिहृतविवाहवेशान्——परोक्षते। विदुष्य——गुणवत——अभिलषति। पयस्विनी——स्ववत्सकमीप गच्छति। सौभाग्यशालिन्य——रत्नभूषित——गच्छति। गुणग्राहिण्य——कर्मज्ञात——न तर्जति। भर्त्तृभक्ता——मद्यपायिनी——न सहते। धर्मार्थी——क्षेमकरा——इच्छति। कनीयान्——ज्यायसी——अनुगच्छति। शाखा——मधुरा——कूजति। साध्वी——स्वभावसरल——न तर्जति। सुशीला——विनयनम्रा——उपदिशति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

विद्वांस स्वामिन शिक्षिता पत्नी अभिलषति। पण्डितधुरंधरा अर्थहीनां वाचं न भाषते। पुत्रार्थिन्य जनन्य पुत्रार्थं धर्मं आचरन्ति। ज्ञातविवाह सज्जन नवोढा कन्या उपदिशति। कन्या इष्टकामा जननी स्फटिकमयीं प्रासादमालां व्रजति। ज्ञातावन परिगृह्य साधु पुनः पुनः रुदती कन्या उपदिशति। धर्मप्राणा योषित् ज्योत्स्नासहिता यामिनी (रात्रि) तथा द्रुमपङ्क्तिशोभिता जन्मभूमि ईक्षते। सन्तानहितैषिणी श्वश्रू नवीना वधूप्रसूति स्मरति। आधुनिका लोका अर्थकरीं विद्यां शंसन्ति। सहोदरा भगिन्य पद्मसमाकुलां पुष्करिणीं (छोटातलाव) गच्छन्ति। स्वगृह आश्रयती प्रिय जन न त्यजति। पावती नीत आत्मान सपद स्वय प्रणमति। देवा अपि धार्मिकान् अर्चन्ति। सज्जनकृता वांछा सफला एव भवति। *धर्मरक्षिणी यशो धर्ममूर्त्ति जोसवर अर्चति।*

१—प्रति—नि—पूर्वक इनृत धातुका अर्थ लौटना होता है।

ऊपर लिखे वाक्योंको हिंदी लिखो।

स्त्रीलिंग शब्दको पुंलिंग और पुंलिंगको स्त्रीलिंग बनाकर नीचेलिखे वाक्य शुद्ध करके लिखो—

निपुण' नायक गुणवती नटीं उपदिशति। चपला बालिका सुन्दरी कुमारी ईक्षते। वेगवत' नदा विशाल हिमवंत गच्छति। मांसलुब्धा व्याघ्र मानवान् कांक्षति। (१) प्रसवित्र' नार्यः पुत्र पश्यति। जनयितार पुत्री अभिलषति। विलासिनी नारी संत (सज्जन) भर्तार तर्जति। प्रियवादिन नरा निर्बोध सन्तान लभति। गरीयान् मानव श्रेयांस लभते। वपुष्मती नारी बलवती' परिचारिका इच्छति। जानती बालिका पृच्छत बालक वदति। कनीयसी पुत्री ज्यायांस नर शोचति। गायत्य नार्य श्रोतृन् वदति। मैथिल पुत्र मागधीं पुत्रीं कांक्षति। गुञ्जत भ्रमरा पौत्री (नातिनी) दशति। साध्वी पत्नी पति अनुगच्छति। भाग्यसमन्वित योगय वर (दूल्हा) दुर्लभ। परार्थतत्परा सत पादप न पश्यति। समदु खसुखा भार्या श्रेष्ठा। अभिनवप्रिया मानवा नवा वसतजल क्रीडा पश्यति। धर्मपराङ्मुखा' क्रूरा पापफल दुख सहती। पर

१—जिन शब्दोंके अन्तमें 'त्र' है उनको स्त्रीलिंग बनानेके लिये 'त्र' के स्थानमें 'त्री' कर देते हैं। जैसे—प्रसवितृ (उत्पन्नकरनेवाला) शब्दका स्त्रीलिंग बनाना है तो उसके 'तृ' के अन्तमें जो 'त्र' है उसको 'त्री' कर देना चाहिये प्रसवित्+री=प्रसवित्री। २—जब कि पुरुषके नामसे स्त्रीका नाम लेते हैं। जैसे कि—गोप (ग्वाला) की स्त्री गणक (ज्योतिषी) की स्त्री आदि, तब अकारांत पुलिंग शब्दोंको अकारांत को जगह ईकारांत कर देते हैं। जैसे गोप—गोपी गणक—गणकी महामात्र—महामात्री। ३—जिनसे कि किसी एक तरहके बहुतसे पदार्थोंका ज्ञान होता है ऐसे सिंह आदि जातिवाचक अकारांत शब्दोंको स्त्रीलिंग बनानेके लिये ईकारांत कर देते हैं। जैसे—मयूर—मयूरी व्याघ्र—व्याघ्री, मानव—मानवी सिंह—सिंही आदि।

व्यथा बोधमाणा कुमारी शोकविह्वला जाता। न्यायपर पार्थिव स्वप्रियां पट्टराज्ञीं वदति। धावमान घ्नत (हनते हुये) क्रुद्धा किं (कौनसा) अहित न आचरंति। ज्येष्ठा गुरुभक्तिं सुक्तिं वितरति। जैनी तपस्या स्वैराचारविरोधिनी, सुखभाव, गुरु, निजसमीप तिष्ठत शिष्यं वदति। वैश्यपति पुत्र पोषति। सतीया सा वन गच्छति।

संस्कृत बनाओ—

मंदोदरी, रोती हुई सीताको समझाती है (उपदिशति)। लक्ष्मण सुखता पाते हैं। उत्साहवान् आदमी दुःखित नहीं होता है। उद्विग्न चित्त माता धीर धारती है। पहाड़ोंके समान (पर्वतसदृश) मेघ आकाशको आच्छन्न करते हैं। सुगंधित पवन दुर्गंधिको दूर करता है। काले२ बादलोंमें (नीलमेघायिता) बिजली चमकती है। यात्री लोग स्वदेशको जाते हैं। हनुमान् उपवासक्षाम निरानंद जानकीको पूछते हैं। रावण नीलकेशी कमलमुखी सीताको देख कर (इष्टा) सोचता है (विचारयति)। सेना समुद्रको पार करती है। रोना सुनकर पीछे चलते २ (रोदनानुसरणकारी) हनुमान् रोती हुई सीताको देखता है। सत्यवाक लक्ष्मण सत्यतत्वाय होकर (सन्) आज्ञा कहता है। धर्मात्मा हिंसाको नहीं करता है। भ्रमर पुष्परसको पीते हैं (पिबति)। नदियां स्वादिष्ट जल वाली (सुस्वादुतोया) होती हैं पर (परन्तु) समुद्रको पहुंच कर (लब्ध्वा) अपेय हो जाती हैं। विद्या बहुत कल्याण बढाती है (पोषति) शांत मुनि सुख पाते हैं। दानी ब्राह्मणको लोग प्रशंसा करते हैं। राम स्वरस्वती देवीको नमस्कार करता है। गुरु लडकेको धर्म बतलाता है।

परिशिष्ट।

जरा (बुढ़ापा) शब्द।			त्रि (तीन) शब्द।		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथ०—जरा	जरसौ, जरे	जरसः, जराः	०	०	तिस्रः।
द्वि०—जरसं, जरां	जरसौ, जरे	जरसः, जराः	०	०	तिस्रः।

(१) श्री (लक्ष्मी शोभा) शब्द।			चतुर् (चार) शब्द।		
प्रथ०—श्रीः	श्रियौ	श्रियः	०	०	चतस्रः।
द्वि०—श्रियं	,,	,,	०	०	चतस्रः।

दीर्घ ऊकारान्त भ्रू (२) शब्द।			(३) स्वसृ (बहिन) शब्द।		
प्रथ०—भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०—भ्रुवं	भ्रुवौ	भ्रुवः	स्वसारं	स्वसारौ	स्वसॄः

ओकारान्त, ऐकारान्त और औकारान्त शब्दोंके रूप पुंलिंगके समान होंगे।

इर् भागांत गिर् (वाणी) शब्द।			उर् भागान्त पुर् (नगर) शब्द।		
प्रथ०—गीः	गिरौ	गिरः	पूः	पुरौ	पुरः।
द्वि०—गिरं	गिरौ	गिरः	पुरं	पुरौ	पुरः।

भकारांत—ककुभ् (दिशा) शब्द।			अप् (जल) शब्द।		
प्र०—ककुप्, (ब्)	ककुभौ	ककुभः	०	०	आपः।
द्वि०—ककुभं	,,	,,	०	०	अपः।

शेष इस भागांत, उस भागांत आदि हलन्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप पुंलिंगके समान समझना।

---

१ स्त्री शब्दके रूप भी इसके समान होते हैं परन्तु प्रथमाके एकवचनमें स्त्री और द्वितीया विभक्तिके एकवचनमें 'स्त्रीम्, स्त्रियं' और बहुवचनमें 'स्त्रियः और स्त्रीः' ये दो दो रूप होते हैं। लक्ष्मी शब्दके प्रथमाविभक्तीके एकवचनमें विसर्ग होते हैं और शेषरूप नदी शब्दके समान चलते हैं। २ दृन्भू, करभू, पुनर्भू, वर्षाभू शब्दोंसे भिन्न जिनके अन्तमें भू है उनमें, तथा भ्रू आदि एक स्वरवाले दीर्घ ऊकारांत शब्दोंके रूप इसी प्रकार होते हैं। ३ षष्ठ पाठमें दिये गये ऋकारांत शब्दोंसे भिन्न शब्दोंके रूप इसके समान होते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

जरा, श्रिय, लक्ष्मी, तिसृ, पुर्, गिर्, ककुभ्, भ्रुवौ, खलपू, गां स्वसारौ, अप्, चतसृ, अर्चिषो, द्यौ।

हिंदी बनाओ—

यदा (जब) शरीरी जरसं गच्छति तदा (तब) शरीरश्रियं त्यजति तृष्णा श्रयति बुद्धिभ्रंशश्च भवति (होता है)। शिशवः अस्पष्टां गिरं गदन्ति। लक्ष्मीः पुण्यशालिनं श्रयति। अग्निम चतस गतो भ्रमन् दुःखं अनुभवति। रामः स्वसारं प्रणमति। दुहितरं मातरं विलोक्य (देखकर) प्रसन्ना भवति। अथ मातरं अपि दुहितृ विलोक्य प्रमोदति। स्त्रियः अपः आनेतुं (लानेके लिये) तडागं गच्छन्ति। तारागणो द्यु अतिशोभते। सर्वाः ककुभः अधुना प्रसन्ना वर्तते। क्वापि (कहीं भी) मेघा न। उज्ज्वलां भासं (कांति) विलोक्य श्वश्रूः दूरं धावति। मेघाच्छन्ना ककुभः जाता।

संस्कृत बनाओ—

लड़के नगरमें प्रवेश करते हैं। विद्वान लोग सरस्वती (गिर्) को प्रणाम करते हैं। चार स्त्रियां परस्परमें विवाद करती हैं। बुढ़ापा दुःखदायी होता है। मूढ़ लोग शीतल निर्मल जलको छोड़कर (त्यक्त्वा) कीचड़ (पङ्क) वाले जलोंको पीते हैं। विद्वान लोग जब तक (यावत्) शास्त्रपठनप्रवीण वाणी स्खलित नहीं होती है (न स्खलति), जब तक बुढ़ापा तनुकुटीरका आश्रय नहीं लेता है और जब तक दोनों पैर अपना (स्वकीय) काम नहीं छोड़ते हैं तब तक (तावत्) सांसारिकवेदनाभिभूत आत्माको सुखी करनेका (सुखयितुं) प्रयत्न करते हैं भौंहें क्रोध और प्रसन्नताको कहती हैं। राम तीन बातें (वार्ता) कहता है। गाय दूध देती है। धनाढ्य (सुरै) नारी दान देती है। ग्वालिन तीन गायोंको छोड़ती है। खलियान साफ करनेवाली (खलपू) खलि

यानको जाती है। यवोंको काटनेवाली (यवलू) यवक्षेत्रमें घुसती है। गायको सुखिया स्त्री गायकी रक्षा करती है। तीन पुत्री अपनी (स्वा) अपनी माताओंको प्रणाम करती हैं। लड़के बूआ (पितृष्वसृ) को पूछते हैं।

स्त्रीलिङ्गशब्दोंके पहिचाननेका उपाय—

स्त्रीलिंग योनिमद्, यव्वी-सेना-वल्लि तडित्-निशा।
वीचि त द्रा ऽवट ग्रीवा-जिह्वा शस्त्री दया दिशा ॥ १ ॥
शिंशिपाख्या नदी-सीमा ज्योत्स्ना चीरी तिथी-धियां।
अङ्गुली कलशी कच्छु छिगुपला सुरा नसा ॥ २ ॥
लाक्षा शिलोप्यिका भाषा सरघा रोचना भुवां।
इत् तु प्राण्यङ्गवाचि स्यादोदूदेकाक्षरं तत ॥ ३ ॥

अर्थ—स्त्री, नारी अबला महिला, स्त्री आदि—मनुष्योंकी अथवा जानवरोंकी स्त्रियोंके तथा यव्वी (एक तरहका कीड़ा) सेना (चमू पृतना वाहिनी आदि) वल्लि (लता प्रतानिनी वल्लरी आदि) बिजुली (तडित् शम्पा, चपला चञ्चला आदि) रात (निशा तमिस्रा रजनी क्षपा तुङ्गी आदि) लहर (वीचि उत्कलिका, लहरी भङ्गि आदि) निद्रा (तन्द्रा आदि) गड्ढा (अवट, गर्त्ता ककाटिका आदि) गर्दन (ग्रीवा, आदि) जीभ (जिह्वा रसज्ञा आदि) छुरी (छुरिका शस्त्री असिपुत्री आदि) दया (दया करुणा कृपा आदि) दिशा (आशा काष्ठा ककुभ् आदि) नदी (धुनी, निम्नगा आदि) सीमा (घोषवती विल्ली आदि) चांदनी (ज्योत्स्ना चन्द्रिका कौमुदी, आदि) तिथी (प्रतिपद द्वितीया तृतीया पूर्णिमातक) बुद्धि (धी धिषणा मनीषा प्रज्ञा आदि) अङ्गुली (अङ्गुलि, करशाखा आदि) गागर (कलशी गगरी आदि) मदिरा (सुरा वारुणी आदि) नाक (नासा, नासिका आदि) लाख (लाक्षा रसजीका आदि) शमी (शिवा बीजकोषी आदि) लपसी (क्षपि का यवागू आदि) लक्ष्मी (श्री कमला, पद्मा पद्मवासा हरिप्रिया क्षीरोदतनया मा रमा इन्दिरा आदि) शहदकी मक्खी (सरघा क्षुद्रा मधुमक्षिका आदि) रोचना (गोरोचना, वंशरोचना आदि) पृथिवी (भू, भूमि मही आदि) इन शब्दोंके अर्थको कहने वाले शब्द प्राणियोंके अङ्गके अर्थको कहनेवाले ह्रस्व इकारान्त शब्द (आधि कटि पाणि आदि) और एकाक्षर वाले दीर्घ ईकारान्त (श्री भी धी, आदि) ऊकारान्त (भू, भ्रू, दृ् लू आदि) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

तृतीय अध्याय ।

अकारांत नपुंसकलिंग ।

प्रथम पाठ ।

अ—कारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता ।	कर्म	क्रिया ।
१ ज्ञानं	सुखं	वितरति ।	ज्ञान	सुखको	देता है ।
शस्त्रं	वृक्षान्	कृन्तति ।	हथियार	पेड़को	काटता है ।
वृक्षः	पुष्पं	विकिरति ।	पेड़	फूलको	बखाता है ।
२ पद्मे	हृदयं	लुभतः ।	दो फूल	हृदयको	लुभाते हैं ।
सलिलं	कमले	सिंचति ।	पानी	दो कमलोंको	सींचता है ।
पीवः	फले	खादति ।	माली	दो फल	खाता है ।
३ फलानि	मानवान्	लुभन्ति ।	फल	मनुष्योंको	लुभाते हैं ।
राजा	काननानि	पश्यति ।	राजा	वनोंको	देखता है ।
जीवाः	शरीराणि(१)	लभन्ते ।	जीव	शरीरोंको	पाते हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

अंग, शरीर, पत्रे, भूषणानि, कमल, फलानि, शष्पाणि (घास), कुसुमि ।

अशुद्ध ।			शुद्ध ।		
वना		शोभ ते ।	वनानि		शोभते ।
पुष्पौ	हृदय	लुभत ।	पुष्पे	हृदय	लुभत ।
बालक	कमलौ	कांक्षति ।	बालक	कमले	कांक्षति ।
बालिका	फलान्	खादति ।	बालिका	फलानि	खादति ।

१—जिन शब्दोंमें 'र' अथवा 'ष' होता तो उनके नकारको णकार हो जायगा लेकिन उन र 'ष और नकारके बीचमें—च, चवर्ग टवर्ग तवर्ग और सकार न हो। जैसे—रचना, दर्शन आदि में नहीं होता ।

बालकः	पुस्तकान्	पठति।	बालकः	पुस्तकानि	पठति।
पशवः	पत्रान्	खादन्ति।	पशवः	पत्राणि	खादन्ति।
चन्दनाः	सुगन्धं	वितरन्ति।	चन्दनम्	सुगन्धं	वितरति।

शुद्ध करो—

रामः दयावहे चरित्रौ वदति। हृदयः धर्मं कांक्षति। पुष्पः सुगन्धा वितरति। जना ग्रामान् इच्छति।

अकारान्त नपुंसकलिंग दान शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	दानं	दाने	दानानि।
द्वितीया—	दानं	दाने	दानानि।

द्वितीय पाठ।

इकारान्त(१) नपुंसक लिंग।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	वारि	जीवनं	वितरति।	जल	जीवन	देता है।
	मेघः	वारि	मुञ्चति।	मेघ	जल	छोड़ता है।
	बालः	दधि	कांक्षति।	लड़का	दही	चाहता है।
२	अक्षिणी	सक्थिनी	पश्यतः।	दो आँखें	दो जाँघोंको	देखती हैं।
	सक्थिनी	शकटे	वहतः।	दो धुरा	दो गाड़ियोंको	धारण करते हैं।
३	मेघा	वारीणि	त्यजन्ति।	मेघ	जलोंको	छोड़ते हैं।
	अक्षीणि	जनान्	पान्ति।	आँखें	मनुष्योंकी	रक्षा करती हैं।

१—नपुंसक लिंग शब्दोंके अन्तका दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ग्रामणी शब्द दीर्घ ईकारान्त है तो वह नपुंसक लिंगमें ह्रस्व 'ग्रामणि' हो जायगा और उसके रूप 'वारि' के समान चलेंगे। इसी तरह दीर्घ ऊकारान्तको ह्रस्व उकारान्त दीर्घ ऋकारान्तको ह्रस्व ऋकारान्त ऐकारान्त तथा एकारान्तको ह्रस्व इकारान्त, और ओकारान्त तथा औकारान्त को ह्रस्व उकारान्त समझना चाहिये।

नीचे लिखे शब्दोंके रूप बनाओ—

अस्थि दधीनि, अक्षीणि, सक्थि, वारीणि, दधि।

मधु नपुंसक उकारान्त शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—वारि	वारिणी	वारीणि।
द्वितीया—वारि	वारिणी	वारीणि।

तृतीय पाठ।

उकारान्त।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ मधु	भ्रमरान्	लुभति।	मधु	भौंरोंको	लुभाता है।
मृगाः	पर्वतसानु	श्रयते।	हरिणी	पर्वतशिखरका	आश्रय करती है।
बालिका	अश्रु	गूहति (ते)।	लड़की	आंसू	छिपाती है।
२ कुसुमे	शोभां	वितरतः।	दो कुसुम	शोभा	देते हैं।
शिशिरः	जानुनी	सूदति (ते)।	पाला (ठंड) दो घुटनोंको तकलीफ देता है।		
अगुरुणी	फलानि	विकिरतः।	दो शीशमके पेड़	फलोंको	बखेरते हैं।
हरिणी	सानुनी	श्रयते।	हरिणी दो सानुओंका आश्रय करती है।		
३ धामूनि	वसूनि	वितरति।	स्त्रियें	धन	देती हैं।
भ्रमराः	मधूनि	पिबन्ति।	भ्रमर	मधु	पीते हैं।
अगुरूणि	फलानि	विकिरन्ति।	शीशम वृक्ष	फल	बखेरते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
बालका	मधून्	पिबति।	बालकाः	मधूनि	पिबन्ति।
अश्व	जतु	खादति।	अश्वः	जतु (यव)	खादति।
हरिण्य	सानु.	श्रयति।	हरिण्यः	सानूनि	श्रयन्ते।

सानु	विहगमान्	लभत ।	सानुनी	विहगमान्	लभत ।
अगुरु	फलानि	विकिरति।	अगुरु	फलानि	विकिरति।
अग्नि	दारु	दहति।	अग्नि	दारुणी	दहति।
दारव	अग्नि	गूहति।	दारूणि	अग्निं	गूहति।

निम्नलिखित शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य बनाओ—

दारु अश्रूणि, जानुनी, जतूनि, मधु, मधूनि, सानूनि, वस्तु, ज्ञान, दान, घृत ।

शुद्ध करो—

अश्रव पृथिवी सिञ्चंति। बालक मधुं इच्छति। सानूनि पर्वत भूषत । बालक अश्रून् मुञ्चति। शिष्य दारुं आहरति। वस्तु चौरान् लुभत । शिशिर जानु तुदति।

उकारांत नपुंसकलिंग मधु शब्दके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	मधु	मधुनी	मधूनि।
द्वितीया—	मधु	मधुनी	मधूनि।

चतुर्थ पाठ।

व्यञ्जनांत नपुंसक लिंग।

मत् (वत्) भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता कर्म क्रिया।
१	गुणवत्	बलवत्	इच्छति।	गुणवान् (मित्र) बलवान् (मित्र) को चाहता है
	श्रीमत्	विद्यावत्	स्पृशति।	श्रीमान् (मित्र) विद्यावान् (मित्र) को छूता है
२	श्रीमती	विद्यावती	स्पृशत ।	दो श्रीमान् (मित्र) विद्यावान् (मित्र) को छूते हैं
	विद्यावती	रूपवती	इच्छतः।	दो विद्यावान् दो रूपवान् को चाहते हैं।
३	श्रीमन्ति	बलवन्ति	इच्छन्ति।	श्रीमान् (मित्र) बलवान् (मित्रों) को चाहते हैं
	बलवन्ति	श्रीमन्ति	स्पृशन्ति।	बलवान् (मित्र) श्रीमान् (मित्रों) को छूते हैं

निम्नलिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

धनवंति, श्रीमती, रूपवत्, धनुष्मती, गुणवंति ।

नपुंसकलिंग मत् (वत्) भागांतके रूप—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	गुणवत्	गुणवती	गुणवंति ।
द्वितीया—	गुणवत्	गुणवती	गुणवंति ।

पंचम पाठ ।

नकारांत ।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया ।
१	वेश्म	शर्म	वितरति ।	घर	सुखको	देता है ।
	साधव	पर्वं (कर्म)	त्यजंति ।	साधु लोग	कुत्सित (कर्म) को	छोड़ते हैं ।
	भस्म	धाम	क्षुवति ।	राख	घर या शरीरको	ढकती है ।
२	बालका	वेश्मनी	पश्यंति ।	लड़के	दो घरको	देखते हैं ।
	धनुषी	योद्धारं	लुभत ।	दो धनुष	योद्धाको	लुभाते हैं ।
	भृत्य	कर्मणी	स्मरति ।	नौकर	दो कामको	याद करता है ।
३	दुर्नामानि	जनान्	तुदंति ।	बवासीरें (सब प्रकारकी)	पुरुषको	दुःख देती हैं ।
	जना	शर्माणि	इच्छंति ।	लोग	कल्याणोंको	चाहते हैं ।
	आर्यिका	वेश्मानि	त्यजंति ।	आर्यिकायें	घरोंको	छोड़ती हैं ।
	चर्माणि	वर्माणि	क्षुवति ।	खालें	शरीरको	ढकती हैं ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

धर्मणी, (मार्ग) शर्म, कर्माणि, भस्म, चर्मणी दुर्नाम वर्त्म वर्त्मानि ।

अशुद्ध			शुद्ध		
धामा	साधून्	भूषति।	धाम (तेज)	साधुन्	भूषति।
शिशु:	जन्मं	लभते।	शिशु	जन्म	लभते।
ब्राह्मण:	धर्मौ	स्पृशति।	ब्राह्मण	धर्मणी	स्पृशति।
पद्मौ		शोभेते।	पद्मनी		शोभेते।
भृत्य	कर्मण:	त्यजति।	भृत्य	कर्माणि	त्यजति।
राजा	वर्मान	पश्यति।	राजा	वर्मं	पश्यति।
मानव	शर्मा	इच्छति।	मानव	शर्मं	इच्छति।
चर्माणी	भट	लोभत:।	चर्मणी(दो ढालें) भट		लुभत:।

संस्कृत बनाओ—

योद्धा लोग ढालें चाहते हैं। कर्म जीवोंको दुःख देता है। विद्यार्थी घरको जाते हैं। बवासीर पीड़ा देती है। शरीर दुर्बल है।

नकारान्त वेश्मन् शब्दके रूप।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	वेश्म	वेश्मनी	वेश्मानि।
द्वितीया—	वेश्म	वेश्मनी	वेश्मानि।

षष्ठ पाठ।

घस्—भागोत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	मद्य	मन	लुभति।	शराब	मनको	लुभाता है।
	चेत	एन:	भजते।	मन	पाप	करता है।
	रज	नभ:	छादयति।	धूलि	आकाशको	ढकती है।
	पय:	रज:	उन्दति।	जल	धूलिको	भिगोता है।

२ सरसी	मयने	सुमरह ।	दो तालाब कोयलोंको झुलाते हैं।
बालक	सरसी	पस्सति ।	लड़का दो तालाबको देखता है।
३ चेतांसि	दुक्ख	अनुभवंति ।	अनेक चित्त दुःखका अनुभव करते हैं।
बालका	पयांसि	पिबंति ।	लड़के दूध पीते हैं।
साधव	तपांसि	चरंति ।	साधुलोग तपको करते हैं।
सरांसि	अम्बूनि	वितरंति ।	तालाब जल देते हैं।
तमांसि	आकासं	कुणंति ।	अंधकार आकाशको ढांकते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंके वाक्य बनाओ—

तमसो, सरांसि अम, तपसो, मनांसि, चेतसो, रजांसि, पयं ।

अशुद्ध			शुद्ध		
मना	सुखं	अनुभवति ।	मन	सुखं	अनुभवति ।
कवि	छंदानि	रचति ।	कवि	छंदांसि	सृजति ।
साधव	यशा	लभते ।	साधव	यश	लभते ।
पमांसि	पिपासां	सहन्ते ।	पभांसि	पिपासां	सहन्ते ।
मुनि	वास	त्यजति ।	मुनि	वास	त्यजति ।
वासा	शरीर	कुणति ।	वासांसि (कपडे)	शरीर	कुणति ।
शोक	चेत	दहति ।	शोक	चेत	दहति ।

शुद्ध करो—

तमांसि वर्तंते । रज आकासं कुणति । सरसो कमलान् सुमति । चेत दुःख अनुभवत । वेश्म शोभते । अम्हा यश भूषति । मियय जघन लभते । राजा यशं इच्छति । कर्माणि फलानि वितरंति । धर्मो भट्टं रक्खत ।

अस् भागांत 'महस्' शब्द ।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	मह	महसो	महांसि ।
द्वितीया—	मह	महसो	महांसि ।

सप्तम पाठ।

इस्—भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	हवि	रेत	पोषति।	घी	वीर्यको	बढ़ाता है।
	अग्नि	हवि	इच्छति।	आग	घीको	चाहती है।
	चन्द्र	ज्योति	वितरति।	चंद्रमा	ज्योतिको	देता है।
	ज्योति	साधु	भूषति।	तेज	साधुको	भूषितकरता है।
२	अर्चिषी	नयनानि	लुभत।	दो प्रभायें	आंखोंको	लुभाती हैं।
	ग्रहौ	ज्योतिषी	विकिरत।	दो ग्रह	दो ज्योति	देते हैं।
	अग्नि	हविषी	दहति।	अग्नि	(दो प्रकारके) घीको	जलाती है।
३	सर्पींषि	मोदकान्	लुभन्ति।	घी (बहुव०)	मूर्खोंको	लुब्ध करते हैं।
	छात्रा	सर्पींषि	इच्छन्ति।	विद्यार्थी लोग	घी	चाहते हैं।
	अग्नि	हवींषि	दहति।	अग्नि	घीको	जलाती है।

अशुद्ध			शुद्ध		
हवींषि	बल	वितरति।	हवींषि	बलं	वितरन्ति।
ज्यातिषो	नयने	तुदते।	ज्योतिषी	नयने	तुदत।
छात्रा	सर्पिषो	भिक्षते।	छात्रा	सर्पिषी	भिक्षन्ते।
ग्रहा	रोचिष	वितरति।	ग्रहा	रोचींषि	वितरन्ति।
सर्पिंष	जिह्वां	लुभति।	सर्पींषि	जिह्वां	लुभन्ति।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

सर्पि, हवींषि रोचींषि, ज्योतींषि सर्पिषी, ज्योति।

१—इ उ ऋ ए, ऐ, ओ औ ह य र ल के बादमें यदि 'स' होगा तो उसको 'ष' आदेश हो जायगा। जैसे—ज्योतिस् शब्दमें 'त् के 'इ' के पर स्' है इसलिये उसको 'ष' हो जानेसे ज्योतिषी बनता है।

[illegible]—

ज्योतिष चन्द्र मूर्छति। बालक रोषिं पश्यति। मित्रा दर्शीमु कुंपति। मर्पोंपि छायाम् तुमति। कवियो धर्मि स्मरति।

[illegible]

	[illegible]	[illegible]	[illegible]
प्रथमा—	ज्योति	ज्योतियो	ज्योतींषि।
द्वितीया—	ज्योतिं	ज्योतियो	ज्योतींषि।

षष्टम पाठ।

धनु भागांत।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	धणु,	बालअ	तुदति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	बालअ	धणु	स्पृशति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	धणुष्मान्	धणुं	मृषति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	धणु,	चोरं	भूषति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	धणुणो	बालेदं	लभेते।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चोर	धणुणो	वहति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	धणूंपि	चोरान्	भूषंति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चोरा	धणूंपि	इच्छंति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चक्खूंपि	चक्खूंपि	मग्गति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	प्रासाद	चक्खूंपि	सुभति।	[illegible]	[illegible]	[illegible]

	[illegible]			[illegible]	
धणुष		सोभति।	धणूंपि		सोभति।
चोरा,	धणूम्	इच्छंति।	चोरा	धणूंपि	इच्छंति।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
चक्षुष	पदार्थान्	पश्यति।	चक्षूंषि	पदार्थान्	पश्यति।
चक्षु	अश्रूणि	मुञ्चत।	चक्षुषी	अश्रूणि	मुञ्चत।
धनुषो	वीर	भूषति।	धनुषी	वीर	भूषत।
चक्षूंषि	आनन्दं	लभते।	चक्षूंषि	आनन्द	लभते।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धनुषी, वपूंषि, चक्षुषी, धनु, आयूंषि, वपुषी।

शुद्ध करो—

योधा धनु वहति। धनुषी योधार भूषति। चक्षु अश्रूणि मुञ्चति। वपुषी दुःख अनुभवत।

उस भागांत वपुस शब्दके रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा—	वपु	वपुषी	वपूंषि।
द्वितीया—	वपु	वपुषी	वपूंषि।

हिंदी बनाओ—

ध्रुवाणि (चिरस्थायी) परित्यज्य (छोड़कर) न वर अध्रुव-सेवनम् (१)। दुष्कर ग्रन्थनिर्माण। सतत (हमेशा) दुग्धधौत (धोयागया) अपि वायस (काक) खलु वायस। मर्मच्छेदि वच शस्त्र इव तीक्ष्ण भवति। जना नक्त (रातमें) कुकर्माणि आचरन्ति। काल भूतानि (जीव) पचति। (पकाता है) मरणसम कष्ट न वर्तते। आलस्य विनाशहेतु। सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग। सकल (सर्वं) दूरत (दूरसे) रमणीयं।

---

१ जिस वाक्यमें कोई क्रिया न हो उसमें वर्तते भवति (है, होता है) ये दो क्रियायें समझना और उनको हिंदी करते समय लिखना। संस्कृतमें कर्त्ता कर्म क्रिया आदिको क्रमसे रखनेका नियम नहीं है इसलिये विभक्तियोंके चिन्होंसे उनको पहचानकर हिंदी बनाना।

पर्वताः दूरतः रम्याः । सर्वदा कर्म आचरणीयम् । आलस्यकर्मणं मूर्खः इच्छति । धन्यः गृहस्थाश्रमः । ऐश्वर्यं न हि शाश्वतं (नित्यं)। महत् अपि ऐश्वर्यं नाशं गच्छति । दुर्गं (किला) तुल्यं निजगृहम् । दुःखरहितं सर्वं सुखम् । दैवाधीनं सर्वं सुतः पत्नी धनादिकम् ।

संस्कृत बनाओ—

निर्गुण लावण्य शोचनीय होता है । संतोष बड़ा धन है । छोटे लोग बड़े लोगोंके पीछे चलते हैं । जितेंद्रिय मनुष्य धन्य है । पण्डित परिमित बोलते हैं । ज्ञानी लोग निरहंकार होते हैं । पापचारी दुःखसागरमें प्रवेश करते हैं । पापी नीचे (अधः) जाते हैं । सन्तुष्ट मनुष्य सर्वदा सुखी होता है । निराशा परम दुःख देती है । दुःख सुख पहियेके समान (चक्रवत्) घूमते हैं । जीवन सुखदुःखमय है । भूखा (बुभुक्षित) क्या (किं) पाप नहीं करता है । अन्यायोपार्जित द्रव्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है (नश्यति) । मन सुख चाहता है । राजशासन अनुल्लंघनीय होता है । विद्या सर्वत्र गौरव है । असत्यभाषी लोग शपथ करनेके लिये (कर्तुं) सर्वदा उद्यत रहते हैं । जीवित बुद्बुद तुल्य है । ज्ञानरहित जीवन शून्य है । सूर्य अंधकार (तमस्) को नष्ट करता है ।

नवम पाठ ।

(नपुंसकलिंग विशेष्यशब्दोंके साथ विशेषणका व्यवहार)

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सजलं अभ्रं	निर्मलं अंभः	वितरति ।	सजल मेघ	निर्मल जल	बरसाता है ।
सजले अभ्रे	श्यामलं वनं	सिञ्चतः ।	सजल दो मेघ	हरे बनको	सींचते हैं ।

कर्ता कर्म क्रिया।	कर्ता कर्म क्रिया।
तीक्ष्णे चक्षुषी श्यामायमाने वने पश्यतः।	तीक्ष्ण आँखें हरे दो वनोंको देखती हैं।
प्रस्फुटिते कमले सौरभहारं भूषतः।	प्रफुल्लित दो कमल सौरभ हारको भूषित करते हैं।
मनोहराणि सरांसि नयनानि लुभन्ति।	मनोहर तालाब नयनोंको लुभाते हैं।
बालकाः उपदेशपूर्णानि पुस्तकानि पठन्ति।	बालक उपदेशसे पूर्ण पुस्तकोंको पढ़ता है।
भ्रमराः साधु मधु पिबन्ति।	भ्रमर अच्छे मधुको पीते हैं।
गच्छत् अभ्रं चन्द्रं वृणोति।	चलता हुआ मेघ चन्द्रमाको ढाँकता है।
(१) गच्छन्ती अभ्रे पर्वतं वृणुतः।	चलते हुये दो मेघ पर्वतको ढाँकते हैं।
गच्छन्ति अभ्राणि पर्वतानि भूषयन्ति।	चलते हुये मेघ पर्वतोंको भूषित करते हैं।
गर्जन्ति अभ्राणि पयांसि वितरन्ति।	गाजते हुये मेघ जल बरसाते हैं।
बालकाः श्रीमत् अंबरं पश्यन्ति।	लड़के सुन्दर बादल देखते हैं।
श्रीमती अगुरुणी शोभेते।	सुन्दर दो अगुरु शोभते हैं।
ज्योतिष्मन्ति नक्षत्राणि रात्रिं भूषयन्ति।	चमकते नक्षत्र रात्रिको शोभित करते हैं।
राजानः रत्नवन्ति सद्मानि इच्छन्ति।	राजा लोग रत्नवाले घरोंको चाहते हैं।
जनाः बलवन्ति वपूंषि इच्छन्ति।	लोग बलिष्ठ शरीरोंको चाहते हैं।

१—नपुंसक लिंगमें शत्र प्रत्ययान्त शब्दोंके द्विवचनमेंभी ती से पहिले 'न्' आता है। जैसे—गर्जन्ती।

तरल (चंचल) भवति। तप्तं जलं पेयं। नवानि पत्राणि हरितानि।
सज्जनहृदयं सदयं भवति।

स उक्त मनाओ—

पंडित लोग असभय पदार्थकी इच्छा नहीं करते हैं। लोघ उपस्थित दु ■ भोगता है। धन सुलभ नहीं है। अर्थी लोग और शरणागत लोग विमुख होकर (रूत) जाते हैं। कहावत (किंवदंती) प्रसिद्ध है। मेघ वनवासी जन्तुओंकी रक्षा करते हैं। दुर्ग (किला) दुर्गवासियोंको बचाता है। विद्वान् मन्त्रीलोग राजाओंकी रक्षा करते हैं। वन वनवासियोंकी रक्षाकरते हैं। मगर तालाव छोड़ता है। हिरण्यकादिक विपत्को भक्षा करते हैं (भक्षते)। व्याध वनमें घूमते घूमते मगरको देखता है। तीक्ष्ण भक्ष गलुभिरको काटता है। हरे पत्ते मनको लुभाते हैं। श्वेत कपड़ा अच्छा लगता है। शत्रु हृदय भग्न हो गया (जात)। शीतल जल पेय होता है। चुराया (अपहृत) धन सुखकर नहीं है। पुरानी पुस्तकें प्राय शुद्ध होती हैं। पढ़ाहुआ (पठित) पुराण हृदयको ज्ञान देता है। दुष्कृत दुखकर होते हैं। निद्रासम पाप नहीं है। मोहसम भय नहीं है। अच्छे वचनको विद्वान् बोलता है। यमुनाजल काला है। विंध्याचलवन भीषण है। गोदुग्ध मीठा और पुष्टिकर होता है। विद्यार्थी घीको चाहते हैं। नवीन पुस्तक सुंदर होती है। पढनेवाले सर्वदा नवीन पुस्तक चाहते हैं। लोग नवीन चीज चाहते हैं। लड़का लाल कोकनद देखता है। प्राणी शुभाशुभ कर्मोंको भोगते हैं। ज्ञान अधिक सुखकारी है।

हिंदी मनाओ—

सवत्सा मृग इतस्ततः (इधर उधर) धावति। नदी सागरं गच्छति। बलवती सिंही निर्बलां हस्तिनीं तुदति। विकसिता,

(खिलौड़ई) कमलिन्य सुगन्ध वितरति। साध्वी नारी गृहं गच्छति। भगिनी (बहिन) भ्रातर भवति। सुपरिष्कृता वाच जनान् पवति। सकला' सम्पद' नश्वरा' वर्तते। मनोहर सर, सपङ्कज (कमलसहित) वर्तते। विद्याहीना' जना न शोभते। धावन् अश्व पतति। मुण्डित परिव्राड् इह (यहां) आगच्छति। पठन् पुत्र मोदं यच्छति। फलित वृक्षा नमति। गुणिन जना नमंति। पर (लेकिन) शुष्का तरव मूर्खा नरा च (और) न नमति। सरलस्वभावी जन दुर्लभ। सतत (सर्वदा) प्रियवादिन जना सुलभा.। अप्रिया तथा पथ्या' (हित करने वाली) वाच दुर्लभा। शोभति जिनभवनानि सर्वदा शोभते। व्याकुल पांथ तरुमूल आश्रयति। मधुव छात्रा इह पठति। महत् छिन्न शरीर रुदति। कोमल चरण क्षत। ज्ञान इव सुख कार, मधु इव पापदायक द्वितीय न वर्तते। शेषिरत्नानि-जल, अन्न सुभाषित (अच्छेवचन)। भावि कार्य अन्यथा (विपरीत) न भवति। चिन्तासम न अस्ति (है) शरीरशोषक। स्वल्पनरायु' बहुल च शास्त्र। धर्मतत्त्व अदृश्यन। न उचित कृतमारण। वर मृत्यु न पुन अपमान। पंडितसेवन एव श्रेय। पुण्यार्थ स्वकीय अर्थ प्रयच्छत जन मुक्ति इच्छति, लक्ष्मी व्रजति, कीर्त्ति इच्छते, प्रीति पुष्णाति सौभाग्य' सेवते, नीरोगता आश्रयति। यथा (जैसे) वनाग्नि वन दहति, तथा सत् तप कर्माणि दहति,। एक वैराग्य' एव समस्त कर्म अतं नयति। ईश्वरपूजा पाप लुम्पति, श्रिय वितरति, नीरोगता पोषति, स्वर्ग यच्छति मुक्ति रचति। धर्मसेवक जन—कदाचिद् (कभी) अपि रोग मृत्यु इव न पश्यति, दारिद्र्य भयभीत इव त्यजति। मूर्खा पुरुषा देव, कुदेव, सुगुरु, कुगुरु, धर्म, अधर्म, गुणिन न सीदते।

चतुर्थ अध्याय।

भ्वादि और तुदादिगणकी अकर्मक धातुओं का व्यवहार।

प्रथम पाठ।

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
१ राजा	जीवति।	राजा	जीता है।
चमू	जवति।	सेना	जाती है।
अश्वा	जवति।	घोड़े	दौड़ते हैं।
नद्य	सरति।	नदियाँ	सर्वदा बहती हैं।
धेनु	अयति।	गाय	जाती है।
धनहीन	कठति।	निर्धन (आदमी)	कष्टसे जीवन बिताता है।
रौप्यमुद्रा	कमति।	चाँदीकी मुद्रा (रुपया)	चमकती है।
मूढा	कर्वति।	मूर्ख	घमण्ड करते हैं।
पक्षिण	कूर्जति।	पक्षी	कूजते हैं।
चौर	क्रामति।	चोर	पदोंसे चलता है।
बालका	क्रीडति।	लड़के	खेलते हैं।
शरीराणि	क्षयति।	शरीर	नष्ट होजाते हैं।
हस्तिन	गर्दति।	हाथी	चिंघाड़ते हैं।
सिंह	गर्जति।	सिंह	गर्जता है।
शरीर	म्लायति।	शरीर	म्लान होता है।
मृगा	चरति।	हरिण	घूमते हैं।
शाखा	चलति।	डालियाँ	हिलती हैं।
सेनापति	जयति।	सेनापति	जीतता है।
शिशु	ज्वरति।	लड़केको	ज्वर आता है।

कर्ता	क्रिया	कर्ता	क्रिया
ओषधयः	ज्वलति ।	ओषधियां	दीप्त होती हैं।
मनः	भ्रमति ।	मन	घूमता है।
दैवं	फलति ।	भाग्य	फल देता है।
पुष्पाणि	पुष्पति ।	फूल	फूलते हैं।
देवदत्तः	हठति ।	देवदत्त	हठ करता है।
सीता	मूर्च्छति ।	सीता	मूर्च्छित होती है।
छात्राः	वसति ।	विद्यार्थी	निवास करते हैं।
सर्पाः	सरति ।	सांप	सरकते हैं।
वज्र	स्फूर्जति ।	वज्र	शब्द करता है।
बालिका	ह्रीच्छति ।	लड़की	लज्जित होती है।
शिशुः	गुवति ।	बच्चा	मल त्याग करता है।
दाम्भिक	मिषति ।	कपटी	स्पर्धा करता है।
पुष्पाणि	स्फुटति ।	फूल	खिलते हैं।

अकर्मक धातुओंके पहिचाननेका उपाय—

उन्मादे च पलायनभ्रमणयोः खेदे क्षवार्थे तथा,
मोहे धावन युद्ध-शुद्धि दहने शांतौ प्लुतौ मज्जने ।
दीप्तौ जागर-शोष वक्रगमनोत्साहे मृतौ सम्भ्रमे,
कम्पोद्वेग-निमेष लग्न पवन खेदे प्रबोधोऽकर्मकाः ॥

मस्त होना, भागना, घूमना, खेद करना, छींक लेना, मुग्ध होना, दौडना, युद्ध करना, शुद्ध होना, जलना, शांत होना, कूदना, डूबना, चमकना, दीप्त होना, जागना, सूखना, टेढा चलना, उत्साहित होना, मरना, सम्भ्रम करना, कांपना, उद्विग्न होना, पलक मारना, पवित्र होना, पसीना आना, इन अर्थोंमें जो धातुयें हैं वे सब अकर्मक होती हैं।

द्वितीय पाठ।

आत्मनेपदी धातुओंका व्यवहार।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
सीता	सरयूं	ईक्षते।	सीता	सरयू नदीको	देखती है।
निन्दकाः	श्रीमतः	ईर्ष्यन्ते।	निन्दक लोग	श्रीमानोंकी	निंदा करते हैं।
बालकाः		कूर्दन्ते।	बच्चे		कूदते हैं।
परिश्रमिणौ		ईहेते।	दो परिश्रमी		चेष्टा करते हैं।
सम्पत्		एधते।	सम्पत्ति		बढ़ती है।
चपला	कीर्तिं	कत्थते।	जो	[illegible]	बोलती है।
गुणग्राहिणः	बुद्धिमतः	श्लाघन्ते।	गुणग्राहि लोग	बुद्धिमानोंकी	प्रशंसा करते हैं।
मनः		क्षोभते।	मन		विचलित होता है।
स्वामी	भृत्यं	गर्हते।	स्वामी	नौकरकी	निंदा करता है।
पण्डिताः	शास्त्राणि	गाहन्ते।	पंडित लोग	शास्त्रोंका	मनन करते हैं।
बालकः	पयः	घसते।	लड़का	दूध	खाता है।
अध्यवसायिनः		चेष्टन्ते।	उद्योगी लोग		चेष्टा करते हैं।
समर्थाः	दुर्बलान्	क्षमन्ते।	समर्थ लोग	दुर्बलोंको	क्षमा करते हैं।
याचकः		दीयते।	याचक		दीन होता है।
रत्नानि		द्योतन्ते।	रत्न		दीप्त होते हैं।
नद्यः		वर्धन्ते।	नदियां		बढ़ती हैं।
भारतवर्षं		प्रथते।	भारत देश		प्रसिद्ध होता है।
साम्राज्यं		प्रसरते।	साम्राज्य		फैलता है।
भिक्षुकः	पयः	भिक्षते।	भिखारी	दूध	मांगता है।
शिष्यः	अध्यापकं	मानते।	विद्यार्थी	गुरुका	सम्मान करता है।
चित्तं		मोदते।	चित्त		आनंदित होता है।
छात्राः		अयन्ते।	विद्यार्थी लोग		जाते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
मोदक		रोचते ।	लड्डू		अच्छा लगता है ।
प्रदीप		वर्धते ।	दीपक		जलता है ।
भृत्य:	खाद्य	लभते ।	नौकर	खाद्य पदार्थ	पाता है ।
राम	जानकीं	उद्वहते ।	रामचंद्र	जानकीको	विवाहते हैं ।
प्रणय		प्यायते ।	प्रेम		बढ़ता है ।
हृदय		व्यथते ।	मन		दुःखित होता है ।
शीतार्त: शिशु		वेपते ।	शीतसे पीड़ित लड़का		कांपता है ।
कापुरुषा	मृत्यु	शङ्कते ।	कायर आदमी	मौतको	शंका करते हैं ।
ब्रह्मचारी	शास्त्र	शिक्षते ।	ब्रह्मचारी	शास्त्रको	पढ़ाता है ।
प्रासाद		शोभते ।	महल		शोभता है ।
कवय	वीरान्	श्लाघते ।	कवि लोग	वीरोंकी	प्रशंसा करते हैं ।
पुष्पाणि		श्वेतते ।	कमल		श्वेत होते हैं ।
वधू		स्मयते ।	बहू		मुस्कराती है ।
रोगी	औषधं	स्वादते ।	रोगी	दवाईको	चाखता है ।
पुष्पाणि		स्फुटते ।	फूल		विकसित होते हैं ।
दुग्धं		स्यन्दते ।	दूध		बहता है ।
लोका	असत्यवादिनं न	विश्रम्भते ।	लोग	झूठ बोलनेवालेका	विश्वास नहीं करते हैं
पिता	पुत्र	स्वजते ।	पिता	पुत्रको	आलिङ्गन करता है ।
लोका	शिशून्	आद्रियते ।	लोग	बच्चोंका	आदर करते हैं ।
मानवा		म्रियते ।	मनुष्य		मरते हैं ।
मन		उद्विजते ।	मन		उद्विग्न होता है ।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर एक २ वाक्य बनाओ—

जयत, ग्लायति, सरति, वर्तति, चयत, मर्दति, कठत:, श्लोक्यत:, मियति एधते, कम्पते, शोभते, रोचते, द्योतते, प्रसेते, मोदते, वर्धते, दीक्षते, शिक्षते, भिक्षते, काचते, खेलते, चयति,

सरतः ध्यायतः, कर्दति, मयेते, मन्मथेते, मानेते, भाषंते, मयते, मयेते ईहते, वेपंते, कत्थते, क्रन्दीते, तिजेते, यर्थते, मर्षते।

इन इन रूप रखकर वाक्य पूरे करो—

दर्दुरा ——— रटति। ——— हस्तिन्यो जयत। सहायहीनः ———कटति। ———जन व्यथते। तुषारपीडिता ———पतति। वृष्टिजलमग्ना ———पधते। विद्यानुरागिण ——— विद्यामानि ———गाधते। ———जैतारो धनमार्जयन्त———तिजेते। रामाय धनर्पिता ———मयते। परस्परं———मयेते। भयविह्वला——— वेपते।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रयोग	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१। जीव	जीना	(जीव्+अ+ति)	जीवति,	जीवतः,	जीवन्ति।
जव	जल्दी से चलना	(जव+अ+ति)	जवति,	जवतः,	जवन्ति।
चत	निश्चय करना	(चत्+अ+ति)	चतति,	चततः,	चतन्ति।
चच	जाना	(चंच्+अ+ति)	चचति,	चंचतः,	चचन्ति।
कठ	कष्ट से जीवन काटना	(कठ्+अ+ति)	कठति,	कठतः,	कठन्ति।
कनी	चमकना	(कन्+अ+ति)	कनति,	कनतः,	कनन्ति।
कर्व	घमंड करना	(कर्व+अ+ति)	कर्वति,	कर्वतः,	कर्वन्ति।
कूज	कूजना	(कूज+अ+ति)	कूजति,	कूजतः,	कूजन्ति।
क्रमु	पैदल चलना	(क्राम्+अ+ति)	क्रामति,	क्रामतः,	क्रामन्ति।
क्रीड़	खेलना	(क्रीड्+अ+ति)	क्रीडति,	क्रीडतः,	क्रीडन्ति।
क्षि	नष्ट होना	(क्षय्+अ+ति)	क्षयति,	क्षयतः	क्षयन्ति।
नर्द	शब्द करना	(नर्द+अ+ति)	नर्दति,	नर्दतः	नर्दन्ति।
गर्ज	गर्जना	(गर्ज+अ+ति)	गर्जति,	गर्जतः,	गर्जन्ति।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
ग्लै	विषादकरना	(ग्लाय्+अ+ति)	ग्लायति,	ग्लायतः,	ग्लायन्ति
चर	खाना, घूमना	(चर्+अ+ति)	चरति,	चरतः,	चरन्ति ।
चल	चलना	(चल्+अ+ति)	चलति,	चलतः,	चलन्ति ।
जि	जीतना	(जय्+अ+ति)	जयति,	जयतः,	जयन्ति ।
ज्वर	ज्वरआना	(ज्वर्+अ+ति)	ज्वरति,	ज्वरतः,	ज्वरन्ति ।
ज्वल	दीप्तहोना	(ज्वल्+अ+ति)	ज्वलति,	ज्वलतः,	ज्वलन्ति ।
तप	तपना	(तप्+अ+ति)	तपति,	तपतः,	तपन्ति ।
फल	फलना	(फल्+अ+ति)	फलति,	फलतः,	फलन्ति ।
फुल्ल	फूलना	(फुल्ल्+अ+ति)	फुल्लति,	फुल्लतः,	फुल्लन्ति ।
वस	रहना	(वस्+अ+ति)	वसति,	वसतः,	वसन्ति ।
सृ	सरकना	(सर्+अ+ति)	सरति	सरतः,	सरन्ति ।
स्फूर्ज	ध्वनिकरना	(स्फूर्ज्+अ+ति)	स्फूर्जति,	स्फूर्जतः,	स्फूर्जन्ति ।
क्षीच्छ	गर्भकरना	(क्षीच्छ+अ+ति)	क्षीच्छति,	क्षीच्छतः,	क्षीच्छन्ति ।
गु	मलत्यागना	(गुव+अ+ति)	गुवति,	गुवतः,	गुवन्ति ।
मिष	स्पर्धाकरना	(मिष्+अ+ति)	मिषति,	मिषतः,	मिषन्ति ।
स्फुट	विकसितहोना	(स्फुट+अ+ति)	स्फुटति,	स्फुटतः,	स्फुटन्ति ।
मूर्च्छ	बेहोशहोना	(मूर्च्छ+अ+ति)	मूर्च्छति,	मूर्च्छतः,	मूर्च्छन्ति ।
२ ईक्षे	देखना	(ईक्ष्+अ+ते)	ईक्षते,	ईक्षेते,	ईक्षन्ते ।
ईजे	निंदाकरना	(ईज्+अ+ते)	ईजते,	ईजेते,	ईजन्ते ।
ईषे	जाना	(ईष्+अ+ते)	ईषते,	ईषेते,	ईषन्ते ।
ईहे	चेष्टाकरना	(ईह्+अ+ते)	ईहते,	ईहेते,	ईहन्ते ।
कचिड	चमकना	(कच्+अ+ते)	कचते,	कचेते,	कचन्ते ।
शुभे	शुभहोना	(शुभ+अ+ते)	शोभते,	शोभेते,	शोभन्ते ।
गर्हे	निंदाकरना	(गर्ह्+अ+ते)	गर्हते,	गर्हेते,	गर्हन्ते ।
गाहृङ्	आलोचनाकरना	(गाह्+अ+ते)	गाहते,	गाहेते,	गाहन्ते ।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
चेष्टै	चेष्टाकरना	(चेष्ट्+अ+ते)	चेष्टते,	चेष्टेते,	चेष्टन्ते।
तिजौङ्	क्षमाकरना	(तिज्+अ+ते)	तिजते,	तिजेते,	तिजन्ते।
दीक्षे	दीक्षालेना	(दीक्ष्+अ+ते)	दीक्षते,	दीक्षेते,	दीक्षन्ते।
द्युतै	दीप्तहोना	(द्योत्+अ+ते)	द्योतते,	द्योतेते,	द्योतन्ते।
प्रथैप्	प्रसिद्धहोना	(प्रथ्+अ+ते)	प्रथते,	प्रथेते,	प्रथन्ते।
प्रसैप्	विस्तृतहोना	(प्रस्+अ+ते)	प्रसते,	प्रसेते,	प्रसन्ते।
भिक्षै	मांगना	(भिक्ष्+अ+ते)	भिक्षते,	भिक्षेते,	भिक्षन्ते।
मानै	पूजाकरना	(मान्+अ+ते)	मानते,	मानेते,	मानन्ते।
मुदैप्	हर्षितहोना	(मोद्+अ+ते)	मोदते,	मोदेते,	मोदन्ते।
मयै	जाना	(मय्+अ+ते)	मयते,	मयेते,	मयन्ते।
रुचै	अच्छालगना	(रोच्+अ+ते)	रोचते,	रोचेते,	रोचन्ते।
वर्चै	जलना	(वर्च्+अ+ते)	वर्चते,	वर्चेते,	वर्चन्ते।
वल्भ	खाना	(वल्भ्+अ+ते)	वल्भते,	वल्भेते,	वल्भन्ते।
वहहौञ्	विवाहना	(वहह्+अ+ते)	वहहते,	वहहेते,	वहहन्ते।
वृधुङ्	बढ़ना	(वर्ध्+अ+ते)	वर्धते,	वर्धेते,	वर्धन्ते।
व्यथैप्	पीडितहोना	(व्यथ्+अ+ते)	व्यथते,	व्यथेते	व्यथन्ते।
टुवेपृङ्	कांपना	(वेप्+अ+ते)	वेपते,	वेपेते,	वेपन्ते।
शकिङ्	शंकाकरना	(शक्+अ+ते)	शकते,	शकेते,	शकन्ते।
शिक्षै	पढाना	(शिक्ष्+अ+ते)	शिक्षते,	शिक्षेते,	शिक्षन्ते।
शुभै	शोभना	(शोभ्+अ+ते)	शोभते,	शोभेते,	शोभन्ते।
श्विताङ्	श्वेतहोना	(श्वेत्+अ+ते)	श्वेतते,	श्वेतेते,	श्वेतन्ते।
स्मिङ्	मुस्कराना	(स्मय्+अ+ते)	स्मयते,	स्मयेते,	स्मयन्ते।
स्वादै	चाखना	(स्वाद्+अ+ते)	स्वादते,	स्वादेते,	स्वादन्ते।
स्फुटै	फूटना	(स्फुट+अ+ते)	स्फुटते,	स्फुटेते	स्फुटन्ते।
स्यन्दूङ्	बहना	(स्यन्द्+अ+ते)	स्यन्दते,	स्यन्देते,	स्यन्दन्ते।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
संभुङ्	विश्वासकरना	(सं'भ्+अ+ते)	सभते,	सं'भेते	सभन्ते।
ष्वञ्जीङ्	आलिंगनकरना	(स्वज्+अ+ते)	स्वंजते,	स्वजेते,	स्वजन्ते।
आदृङ्	आदरकरना	(आद्रिय्+अ+ते)	आद्रियते,	आद्रियेते,	आद्रियन्ते।
मृ (१)	मरना	(म्रिय्+अ+ते)	म्रियते,	म्रियेते,	म्रियन्ते।
विजीङो	उद्विग्नहोना	(विज्+अ+ते)	विजते,	विजेते,	विजन्ते।
ओप्यायीङ्	बढ़ना	(प्याय्+अ+ते)	प्यायते,	प्यायेते,	प्यायन्ते।

तृतीय पाठ।

(२) उभयपदी (तुदादि और भ्वादिगणीय) धातुओंका व्यवहार।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
कर्षक	गर्तं	खनति (ते)	किसान	गड्ढा	खोदता है।
चोर	हृत धन	गूहति (ते)	चोर	चुराये धनको	छिपाता है।
बालक	खादनीय	चर्वति (ते)	बालक	भक्ष्य पदार्थको	खाता है।
बालक	बालक	तर्पति (ते)	बालक	बालकको	मारता है।
चन्द्र		लेपति (ते)	चंद्रमा		हीन होता है।
असहाय	धनवत	भजति (ते)	निस्सहाय	धनीको	शरणमें जाता है।
धनी जन'	निःस्व	भरति (ते)	धनी आदमी	निर्धनका	पोषण करता है।
श्रावक	जिन	यजति (ते)	श्रावक	जिनकी	पूजा करते हैं।
अतिथि	धन	याचति (ते)	अतिथि	धनको	मांगता है।
रजक'	वस्त्राणि	रजति (ते)	धोबी (रंगरेज)	कपड़े	रंगता है।
नृप		राजति (ते)	राजा		शोभता है।
क्षेत्रस्वामी	बीज	वपति (ते)	खेतका मालिक	बीज	बोता है।

१—इस धातुमें 'ङ' अथवा 'ए', कुछभी इत् नहीं है तबभी वर्तमानकालमें विशेषनियमसे आत्मनेपद होता है। २—जिस धातुके दोनों प्रकारसे (आत्मनेपद और परस्मैपद) रूप चलें उसको उभयपदी कहते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
भृत्यः	भारं	वहति (ते)	नौकर	भार (बोझा)	ढोता है।
तन्तुवायाः	वस्त्राणि	वयंति (ते)	जुलाहे	कपड़े	बुनते हैं।
मृगाः	पल्लवान्	चषंति (ते)	मृग	पत्तोंको	चबाया करते हैं।
शिष्याः	समिधः	आहरंति (ते)	विद्यार्थी	लकड़ी	लाते हैं।
पुत्रशोकः	हृदयं	तुदति (ते)	पुत्रका शोक	हृदयको	व्यथित करता है।
प्रभुः	भृत्यान्	आदिशति (ते)	मालिक	नौकरोंको	आज्ञा देता है।
पाचकः	अन्नं	भृज्जति (ते)	रसोइया	अन्न	पकाता है।
साधवः	गात्रं	लिंपति (ते)	साधु लोग	शरीरको	लिप्त करते हैं।
भृत्यः	तृणं	लुपति (ते)	नौकर	तृण	काटता है।

नीचे लिखे शब्दोंके वाक्य बनाओ—

खनंते, वयेते, लुपते, तुदेते, चषेते, झषंते, लिपतः, लुपते, सिचतः, भृज्जतः, आहरते, भृज्जति।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
खनुञ्	खोदना	(खन्+अ+ति)	खनति,	खनतः,	खनंति।
,,	,,	(खन्+अ+ते)	खनते,	खनेते,	खनंते।
गुहूञ्	छिपाना	(गूह्+अ+ति)	गूहति,	गूहतः,	गूहंति।
,,	,,	(गूह्+अ+ते)	गूहते,	गूहेते,	गूहंते।
चषञ्	खाना	(चष्+अ+ति)	चषति	चषतः,	चषंति।
,,	,,	(चष्+अ+ते)	चषते,	चषेते,	चषंते।
झषञ्	मारना	(झष्+अ+ति)	झषति,	झषतः,	झषंति।
,,	,,	(झष्+अ+ते)	झषते,	झषेते,	झषंते।
भजीञ्	सेवाकरना	(भज्+अ+ति)	भजति,	भजतः,	भजंति।
,,	,,	(भज्+अ+ते)	भजते,	भजेते,	भजंते।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भृञ्	पालना	(भर्+अ+ति)	भरति,	भरतः,	भरन्ति।
,,	,,	(भर्+अ+ते)	भरते,	भरेते,	भरन्ते।
यजीञ्	पूजाकरना	(यज्+अ+ति)	यजति,	यजतः,	यजन्ति।
,,	,,	(यज्+अ+ते)	यजते,	यजेते,	यजन्ते।
याचृञ्	मांगना	(याच्+अ+ति)	याचति,	याचतः	याचन्ति।
,,	,,	(याच्+अ+ते)	याचते,	याचेते,	याचन्ते।
रञ्जीञ्	रंगना	(रज्+अ+ति)	रजति,	रजतः	रजन्ति।
,,	,,	(रज्+अ+ते)	रजते,	रजेते,	रजन्ते।
टुवपीञ्	बीजबोना	(वप्+अ+ते)	वपते,	वपेते,	वपन्ते।
,,	,,	(वप्+अ+ति)	वपति,	वपतः,	वपन्ति।
वहीञ्	लेजाना	(वह्+अ+ते)	वहते,	वहेते,	वहन्ते।
,,	,,	(वह्+अ+ति)	वहति,	वहतः,	वहन्ति।
वेञ्	कपड़ा बुनना	(वय्+अ+ते)	वयते,	वयेते,	वयन्ते।
,,	,,	(वय्+अ+ति)	वयति,	वयतः,	वयन्ति।
श्रिञ्	सेवा करना	(श्रय्+अ+ते)	श्रयते,	श्रयेते,	श्रयन्ते।
,,	,,	(श्रय्+अ+ति)	श्रयति,	श्रयतः,	श्रयन्ति।
हृञ्	हरना	(हर्+अ+ते)	हरते,	हरेते,	हरन्ते।
,,	,,	(हर्+अ+ति)	हरति,	हरतः	हरन्ति।
भ्रस्जीञ्	पकाना	(भृज्ज्+अ+ते)	भृज्जते,	भृज्जेते,	भृज्जन्ते।
,,	,,	(भृज्ज्+अ+ति)	भृज्जति,	भृज्जतः,	भृज्जन्ति।
लिपीञ्	लेपकरना	(लिप्+अ+ते)	लिपते,	लिपेते,	लिपन्ते।
,,	,,	(लिप्+अ+ति)	लिपति,	लिपतः	लिपन्ति।
लुप्लृञ्	छेदना	(लुप्+अ+ते)	लुंपते,	लुंपेते,	लुंपन्ते।
,,	,,	(लुप्+अ+ति)	लुंपति,	लुंपतः,	लुंपन्ति।

पञ्चमाध्याय।

प्रथम पाठ।

विसर्ग सन्धिका व्यवहार।

(इन सन्धि नियम कंठ करानेकी आवश्यकता नहीं है केवल हितोपदेश पञ्चतन्त्रादि ग्रन्थोंके वाक्योंको समझा समझाकर सन्धिके नियमोंको बतलाना चाहिये)

(१) अकारसे पर विसर्गका लोप।

भृत्य आगच्छति—भृत्यः + आगच्छति। नौकर आता है।

जिनदत्त इष्टस्थानं गच्छति—जिनदत्तः + इष्टस्थानं गच्छति। जिनदत्त इष्टस्थानको जाता है।

राम सरः ईक्षते—रामः सरः + ईक्षते। राम तालाब देखता है।

परिश्रमिण ईहन्ते—परिश्रमिणः + ईहन्ते। परिश्रमी लोग चेष्टा करते हैं।

बालक ईयते—बालकः + ईयते। बालक जाता है।

पर्वत उन्नत—पर्वतः + उन्नतः। पर्वत ऊंचा है।

उन्नत उष्ट्र धावति—उन्नतः + उष्ट्रः धावति। ऊंचा ऊंट दौड़ता है।

धूम ऊर्ध्व गच्छति—धूमः + ऊर्ध्वं गच्छति। धुंआ ऊपरको जाता है।

मनस्विन ऋषय शास्त्राणि मनन्ति—मनस्विनः + ऋषयः शास्त्राणि मनन्ति। मनस्वी ऋषी लोग शास्त्रोंका अभ्यास करते हैं।

वृक्ष एजति—वृक्षः + एजति। वृक्ष हिलता है।

मत्त ऐरावत—मत्तः + ऐरावतः गच्छति। मत्त ऐरावत हाथी जाता है।

उज्ज्वल ओषधिपति द्योतते—उज्ज्वलः + ओषधिपतिः द्योतते। उज्ज्वल चंद्रमा चमकता है।

रुग्ण औषध इच्छति—रुग्णः + औषधं इच्छति। रोगी औषध चाहता है।

१—यदि ह्रस्व अकारके बाद विसर्ग होंगे और उन विसर्गों के बाद ह्रस्व अकारको छोड़कर कोई भी स्वर होगा तो उन विसर्गों का लोप हो जायगा।

पद	अपद	
बालक पचति।	बालक पचति।	लड़का पकाता है।
नद्य पतति।	नद्य पतति।	नदी सर्वदा बहती है।
सधन अर्थी धनं काङ्क्षति।	सधन अर्थी धनं काङ्क्षति।	स धनी भिखारी धन चाहता है।

शुद्ध करो—

माधव महेशं इच्छति। माधव भाति इच्छति। ऐरावत मधु पिबति। वध्र वाच वदति। तरुण अरुण किरण वितरति। सरित नयनानि लुभति। पर्वत अभ्र स्पृशति। ऐरावत गगां गच्छति। बालक नदी गच्छति। उदारचेतस दरिद्रान् भरति। राजान मन्त्रिण विश्वसते। सज्जन आश्रितं रक्षति। बाल आशु (शीघ्र) गच्छति। मनुष्य इन्दु पश्यति। छात्र इतिहास पठति। दुर्जन ईर्ष्या आचरति। लोक ईश भजते। पाठक उत्तरं यच्छति। मूर्ख उद्धत भवति धार्मिक ऊर्ध्वलोक व्रजति। समुद्र ऊर्मिमान्। धनाढ्य ऋण यच्छति। बालक ऋतु वर्तते। अष्टम स्वरवर्ण ऋकार। जीव एकाकी गच्छति। मूर्ख एव वदति। परिषद ऐक्य वाञ्छति। देवा ऐलविल (कुबेर) नमति। योषित ओक (घर) गच्छति। ओकार ओष्ठ्यवर्ण। समाज औन्नत्य (उन्नति) इच्छति। शीतार्त औरभ्र (कम्बल) काङ्क्षति।

द्वितीय पाठ।

(१) आकारसे पर विसर्गका लोप।

१ बालका अमृतां वाच भाषन्ते—बालकाः + अमृतां वाचं भाषन्ते।
लड़के अमृतके समान मीठी वाणी बोलते हैं।

---

१ दीर्घ आकारसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बाद कोई भी स्वर अथवा वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर तथा य र ल व ह, होंगे तो उन विसर्गों का लोप हो जायगा।

पञ्चमाध्याय।

प्रथम पाठ।

विसर्ग संधिका व्यवहार।

(संधिके नियम कंठ करानेकी आवश्यकता नहीं है केवल हितोपदेश अमरुकादि आदि ग्रन्थोंके शब्दोंको समझा समझाकर सन्धिके नियमोंको बतलाना चाहिये)

(१) अकारसे पर विसर्गका लोप।

भृत्य आगच्छति—भृत्यः + आगच्छति। नौकर आता है।
जिनदत्त इष्टस्थानं गच्छति—जिनदत्तः + इष्टस्थानं गच्छति। जिनदत्त इष्टस्थानको जाता है।
राम सर ईक्षते—रामः सरः + ईक्षते। राम तालाब देखता है।
परिश्रमिण ईहते—परिश्रमिणः + ईहते। परिश्रमी चेष्टा करते हैं।
बालक ईयते—बालकः + ईयते। बालक जाता है।
पर्वत उन्नत—पर्वतः + उन्नतः। पर्वत ऊंचा है।
उन्नत उष्ट्र धावति—उन्नतः + उष्ट्रः धावति। ऊंचा ऊंट दौड़ता है।
धूम ऊर्ध्वं गच्छति—धूमः + ऊर्ध्वं गच्छति। धुंआ ऊपरको जाता है।[1]
मनस्विन ऋषय शास्त्राणि मनन्ति—मनस्विनः + ऋषयः शास्त्राणि मनन्ति। मनस्वी ऋषि लोग शास्त्रोंका अभ्यास करते हैं।
वृक्ष एजति—वृक्षः + एजति। वृक्ष हिलता है।
मत्त ऐरावत —मत्तः + ऐरावतः गच्छति। मत्त ऐरावत हाथी जाता है।
उज्ज्वल ओषधिपति द्योतते—उज्ज्वलः + ओषधिपतिः द्योतते। उज्ज्वल चंद्रमा चमकता है।
रुग्ण औषधं इच्छति—रुग्णः + औषधं इच्छति। रोगी औषध चाहता है।

१—यदि ह्रस्व अकारके बाद विसर्ग होंवे और उन विसर्गों के बाद ह्रस्व अकारको छोड़कर कोई भी स्वर होवे तो उन विसर्गोंका लोप हो जायगा।

पद अपद

बालक अयति। बालक अयति। लड़का आता है।

नद्य पतति। नद्य पत ति। नदी सर्वदा चलती हैं।

अयत अर्थी धनं कांक्षति। अयत अर्थी धन कांक्षति। य यमी भिखारी धन चाहता है।

पद करो—

माधव अर्हणां इच्छति। माधव आति इच्छति। ऐरावत मधु पिबति। अध्व वाच वदति। तरुण अरुण किरण वितरति। सरित नयनानि लुभति। पर्वत अभ्र स्पृशति। ऐरावत गगा गच्छति। बालक नदीं गच्छति। उदारचेतस दरिद्रान् भरति। राजान, सविण विग्रमते। सज्जन चायित रक्षति। बाल आस (ग्रोष्म) गच्छति। मनुष्य इंदु पश्यति। छात्र इतिहास पठति। दुर्जन ईर्ष्या आचरति। लोक ईश भजते। पाठक उत्तर यच्छति। मूर्ख उद्धत भवति धार्मिक ऊर्ध्वलोक व्रजति। समुद्र ऊर्मिमान्। धनाढ्य ऋण यच्छति। बालक ऋतु वर्तते। अष्टम स्वरवर्णः ऋकार। जीव एकाकी गच्छति। मूर्ख, एव वदति। परिषद ऐक्य वाञ्छति। देवा ऐलविल (कुवेर) नमति। योषित ओक (घर) गच्छति। ओकार ओष्ठ्यवर्ण। समाज औन्नत्य (उन्नति) इच्छति। श्रोतार औरभ्र (कम्बल) काङ्क्षति।

द्वितीय पाठ।

(१) आकारसे पर विसर्गका लोप।

१ बालका अमृता वाच भाषते—बालका + अमृता वाच भाषते। लड़के अमृतके समान मीठी वाणी बोलते हैं।

---

१ दीर्घ आकारसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गोंके बाद कोई भी स्वर अथवा वर्गका तीसरा, चौथा, पांचवां अक्षर तथा य र ल, व ह, होंगे तो उन विसर्गों का लोप हो जायगा।

लता पत्रं इच्छति—लता + पत्रं इच्छति। लता पत्तेको चाहती है।

बालिका पाठं स्मरति—बालिका + पाठं स्मरति। लड़की पाठ याद करती है।

प्रचेता इन्द्रं जयति—प्रचेता + इन्द्रं जयति। वरुण इन्द्रको जीतता है।

वेधा ईशं भजते—वेधा + ईशं भजते। ब्रह्मा महादेवका भजन करता है।

बालका ईहन्ते—बालका + ईहन्ते। बालक चाहते हैं।

पर्वता उन्नता भवन्ति—पर्वता + उन्नता भवन्ति। पर्वत ऊँचे होते हैं।

चन्द्रमा उस्रं सृजति—चन्द्रमा + उस्रं सृजति। चन्द्रमा किरण फैलाता है।

कन्या ऊर्मिकां वहति—कन्या + ऊर्मिकां वहति। कन्या अंगूठी पहनती है।

तापसा ऋषीन् सेवन्ते—तापसा + ऋषीन् सेवन्ते। तपस्वी ऋषियोंकी सेवा करते हैं।

बालका एला खादन्ति—बालका + एला खादन्ति। लड़के इलायची खाते हैं।

राजपुत्रा ऐश्वर्यं इच्छन्ति—राजपुत्रा + ऐश्वर्यं इच्छन्ति। राजपुत्र विभूति चाहते हैं।

सैनिका ओजस्विनं सेनापतिं मानयन्ते—सैनिका + ओजस्विनं सेनापतिं मानयन्ते। सैनिक तेजस्वी सेनापतिका सम्मान करते हैं।

नागरिका औरसं राजपुत्रं मानयन्ते—नागरिका + औरसं राजपुत्रं मानयन्ते। नगरवासी लोग औरस राजपुत्रको मानते हैं।

२ प्रचेता गोविन्दं जयति—प्रचेता + गो… जयति। …है।

प्रजा जयति—प्रजा + जयति।
कृष्णा डिंभा विलपति—कृष्णा
बालका
लता मुञ्चति

बुभुक्षिता बहु खादन्ति—बुभुक्षिताः + बहु खादन्ति। भूखे लोग खूब खाते हैं।

३। कुम्भकारा घटान् सृजन्ति—कुम्भकाराः + घटान् सृजन्ति। कुम्हार घड़ोंको बनाते हैं।

बालका झटिति गच्छन्ति—बालकाः + झटिति गच्छन्ति। लड़के जल्दी जाते हैं।

बालका ढक्कां स्पृशन्ति—बालकाः + ढक्कां स्पृशन्ति। लड़के ढक्का छूते हैं।

मेघा धवला सञ्जाता—मेघाः + धवलाः सञ्जाताः। मेघ श्वेत हो गये।

कन्या भृत्यान् आदिशन्ति—कन्याः + भृत्यान् आदिशन्ति। कन्यायें नौकरोंको आज्ञा देती हैं।

४। दिग्गजा नदन्ति—दिग्गजाः + नदन्ति। दिग्गज (दिशाओंके हाथी) चिंघाड़ते हैं।

बालका मातुलालयं गच्छन्ति—बालकाः + मातुलालयं गच्छन्ति। लड़के मामाके घर जाते हैं।

५। गृहस्था यतीन् पूजयन्ति—गृहस्थाः + यतीन् पूजयन्ति। गृहस्थ यतियोंको पूजते हैं।

चन्द्रमा रात्रिं भूषयति—चन्द्रमाः + रात्रिं भूषयति। चन्द्रमा रातको भूषित करता है।

बालिका लता कृन्तन्ति—बालिकाः + लताः कृन्तन्ति। लड़कियां लताओंको काटती हैं।

भृत्या वदन्ति—भृत्याः + वदन्ति। नौकर बोलते हैं।

ब्राह्मणा हरिद्रां भिक्षन्ते—ब्राह्मणाः + हरिद्रां भिक्षन्ते। ब्राह्मण हल्दी मांगते हैं।

शुद्ध	अशुद्ध
६। बालकाः + कोकिलं पश्यन्ति।	बालका कोकिलं पश्यन्ति।
भृत्याः + चौरं प्रहरन्ति।	भृत्या चौरं प्रहरन्ति।
उन्नताः + तरवः मेघं स्पृशन्ति।	उन्नता तरवः मेघं स्पृशन्ति।
प्रजाः + प्रजापतिं पूजयन्ति।	प्रजा प्रजापतिं पूजयन्ति।

७। तपोवना + मुनिव भिक्षते। तपोवना मुनिव भिक्षते।
आचार्या + छात्रान् उपदिशति। आचार्या छात्रान् उपदिशति।
वृक्षा + फलानि मुञ्चति। वृक्षा फलानि मुञ्चति।

तृतीय पाठ।

(१) अकारसे पर विसर्ग और अकारको ओकार।

बालकोऽस्ति—बालकः + अस्ति।
विद्वांसोऽस्मान् उपदिशन्ति—विद्वांसः + अस्मान् उपदिशन्ति।
गृहस्थोऽतिथीन् सेवते—गृहस्थः + अतिथीन् सेवते।
हरिणोऽरण्ये गच्छति—हरिणः + अरण्ये गच्छति।

प्रश्न। उत्तर।

बालकः + आगच्छति—बालकोऽगच्छति—बालक आगच्छति।
साधवः + इन्द्र अर्चति—साधवोऽन्द्र अर्चति—साधव इन्द्र अर्चति।
मानवः + ईश्वर पूजति—मानवोऽश्वर पूजति—मानव ईश्वर पूजति।
छात्रः + उपाध्याय सेवते—छात्रोऽपाध्याय सेवते—छात्र उपाध्याय सेवते।
बालकः + उष्ण दुग्ध पिबति—बालकोऽष्ण दुग्धं पिबति—बालक उष्ण दुग्ध पिबति।
गृहस्थः + ऋषि अर्चति—गृहस्थोऽर्षि अर्चति—गृहस्थ ऋषि अर्चति।
बालकः + एकाकी गच्छति—बालकोऽकाकी गच्छति—बालक एकाकी गच्छति।

१। यदि अकारके बाद विसर्ग हों और उन विसर्गोंके बाद ह्रस्व अकार हो तो उन (पहिला अकार, बीचके विसर्ग और अकार) तीनोंके स्थानमें एक ओकार हो जायगा।

सरित: + ऐरावत लुभति—सरितो ऽरावत लुभति—सरित ऐरावत लुभति।

भ्रमर + ओष्ठ दशति—भ्रमरोऽष्ठ दशति—भ्रमर ओष्ठ दशति।

भिषज + औदरिकान् निदति—भिषजो ऽदरिकान् निदति—भिषज औदरिकान् निदति।

पद।	पद्य।
कोकिल + कूजति।	कोकिलो ऽकूजति।
वृषभ. + केशरिणं पश्यति।	वृषभोऽकेशरिणं पश्यति।
जाल्म + खट्वां आरोहति।	जाल्मोऽखट्वां आरोहति।
जन + चक्रवाक ईचते।	जनोऽचक्रवाक ईचते।
अश्व + चरति।	अश्वो ऽचरति।
छात्र + छत्र वहति।	छात्रोऽछत्र वहति।
बाल + टिट्टिभ पश्यति।	बालोऽटिट्टिभ पश्यति।
धार्मिक + ठक्कुर अर्चति।	धार्मिकोऽठक्कुर अर्चति।
योषित + तडित पश्यति।	योषितोऽतडित पश्यति।
मलिन + थूत्कार आचरति।	मलिनोऽथूत्कार आचरति।
नार्य + पति मानते।	नार्योऽपति मानते।
सर्प + फणा वहति	सर्पोऽफणा वहति।

चतुर्थ पाठ।

विसर्गको ओकार (१)

१। हरिणो गुहां श्रयते—हरिण + गुहा श्रयते। हरिण गुहाका आश्रय लेता है।

१—इस प्रकारके बाद वियम और उन विदर्गों के बाद वर्गका तीसर चौथा पांचवां ... ग ल व और ह इन्हीं को विसर्गों के स्थानमें ओ ...

बालको जननीं ईक्षते—बालक + जननीं ईक्षते। लड़का माको देखता है।
बालो डमरु पश्यति—बाल + डमरु पश्यति। लड़का डमरु देखता है।
धनिनो दरिद्रान् भरति—धनिन + दरिद्रान् भरति। धनी लोग गरीबों को पालते हैं।

साधवो बालकान् स्पृशति—साधव बालकान् स्पृशति। साधु लोग लड़कोंको स्पर्श करते हैं।

२। चौरो घोटकं इच्छति—चौर + घोटकं इच्छति। चोर घोड़ेको चाहता है।
मधुरो झंकार श्रुत—मधुर + झंकार श्रुत। मधुर झंकार सुना।
बालको ढक्कां पश्यति—बालक + ढक्कां पश्यति। लड़का ढक्काको देखता है
गृहस्थो धर्मं शिक्षते—गृहस्थ + धर्मं शिक्षते। गृहस्थ धर्मको सीखता है।
सर्पो भेकं लभते—सर्प + भेकं लभते। सांप मेंडकको खाता है।
३। हस्तिनो नटंति—हस्तिन + नटंति। हाथी नाचते हैं।
पक्षिणो मत्स्यान् खादति—पक्षिण + मत्स्यान् खादति। पक्षि मच्छोंको खाते हैं।

४। बालको यतते—बालक + यतते। बालक यत्न करता है।
चन्द्रो रोचींषि वितरति—चन्द्र + रोचींषि वितरति। चंद्रमा किरण फैलाता है।
नृपो लोध्रद्रुमं पश्यति—नृप + लोध्रद्रुमं पश्यति। राजा लोध्रवृक्षको देखता है।
बालको वदति—बालक + वदति। लड़का बोलता है।
बालको हसति—बालक + हसति। लड़का हंसता है।

अशुद्ध शुद्ध

गृहस्थ + साधु सेवते—गृहस्थोसाधु सेवते—गृहस्थ साधु सेवते।
बालक + छोवन क्षिपति—बालको छोवन क्षिपति—बालक छोवन क्षिपति।

विद्वांस + शिशून् उपदिशति—विद्वांसो शिशून् उपदिशति—विद्वांस शिशून् उपदिशति।

भृत्य + आगच्छति—भृत्योऽगच्छति—भृत्य आगच्छति।

मद्य + एधते—मद्यो ऽधते—मद्य एधते।

शांतिरक्षक + चौर प्रहरति—शांतिरक्षको चौर प्रहरति—शांति रक्षक चौर प्रहरति।

अरुण + तपन शोभते—अरुणो तपन शोभते—अरुण तपन शोभते

पंचम पाठ।

विसर्गों को रकार। (१)

१ हविरावर्जित—हवि + आवर्जित। घी लाया।

मतिरेधते—मति + एधते। बुद्धि बढ़ती है।

साधुरागच्छति—साधु + आगच्छति। साधु आता है।

वधूरीहते—वधू + ईहते। वधू चेष्टा करती है।

२ मुनिर्गच्छति—मुनि + गच्छति। मुनि जाता है।

गुरुर्जीवति—गुरु + जीवति। गुरु जीवता है।

चमूर्दुर्गतिं प्राप्ता—चमूः + दुर्गति प्राप्ता। सेना दुर्गतिको प्राप्त हुई।

ऋषिर्बंधु वदति—ऋषि + बंधु वदति। ऋषि बंधुको कहता है।

३ अग्निर्घृतं दहति—अग्नि + घृत दहति। आग घीको जलाती है।

कारुर्झषान् पश्यति—कारु + झषान् पश्यति। बन्दे मच्छलियोंको देखता है।

गुरुर्ध्यायति—गुरु + ध्यायति। गुरु ध्यान करता है।

१—अकार और आकारसे भिन्न किसी भी स्वरके पर यदि विसर्ग होंगे और उन विसर्गों के आगे कोई भी स्वर अथवा वर्गका तीसरा, चौथा पांचवा अक्षर, और य ल व

शिशुर्भास्करं पश्यति—शिशु + भास्करं पश्यति। लड़का सूरजको देखता है।

४ यतिर्नौकां आरोहति—यति + नौकां आरोहति। यति नाव पर चढ़ता है।

साधुर्मागधीं पठति—साधु + मागधीं पठति। साधु मागधीको पढ़ता है।

५ मधुर्युद्ध इच्छति- मधु + युद्ध इच्छति। मधु युद्धको चाहता है।

नरपतिर्यतिं पूजति—नरपति + यतिं पूजति। राजा यतिको पूजा करता है।

कपिर्लोध्रद्रुम आरोहति—कपि + लोध्रद्रुम आरोहति। बंदर लोध्रवृक्ष पर चढ़ता है।

साधुर्वसति—साधु + वसति। साधु रहता है।

शिशुर्हसति—शिशु + हसति। लड़का हंसता है।

असत्।	सत्।
बालक आगच्छति—बालकरागच्छति।	बालको आगच्छति।
अश्व धावति—अश्वर्धावति	अश्वो धावति।
शिष्य यतते—शिष्यर्यतते।	शिष्यो यतते।
सुनय अर्चति—सुनयरर्चति।	सुनयोऽर्चति।
बालका आगच्छन्ति—बालकारागच्छन्ति।	बालका आगच्छन्ति।
प्रचेता नाथ अर्चन्ति—प्रचेता नार्थ अर्चन्ति।	प्रचेता नाथ अर्चति।
कोकिला कूजति—कोकिलाकूजति।	कोकिला कूजति।

शुद्ध करो—

अग्निर्हविर्कांक्षति। साधुर्मधुरांवाचर्भाषते। मनोज्ञार्वीरध दृष्टा। रामरभर्पिबति। वध्वर्मार्गटशाणि गच्छति। निरंकुशा-र्हिं कथय। बुद्धिमतर्नार्यर्मनभवे।

षष्ठपाठ ।

विसर्गोंको श, ष, स, (१) ।

१ चतुरश्चौरो हृत —चतुर +चौरो हृत ।
चौराश्चर्माणि इच्छति—चौरा +चर्माणि इच्छति ।
रविश्चक्षुषी तुदति—रवि +चक्षुषी तुदति ।
लक्ष्मीश्चंद्र गच्छति—लक्ष्मी. +चद्र गच्छति ।
साधुश्चण्डो जात —साधु +चण्डो जात ।
वधूश्चन्द्रमस पश्यति—वधू' +चन्द्रमस पश्यति ।
क्षुधार्त्ता गौश्चरति—क्षुधार्त्ता गौ +चरति ।
आचार्यंश्छात्र उपदिशति—आचार्यं +छात्र उपदिशति ।
भृत्याश्छिन्नान् तरून् आहरति—भृत्या. +छिन्नान् तरून् आहरति
२ काष्ठष्टंक इच्छति—काष्ठ +टंक इच्छति ।
छात्रष्ठकार पठति—छात्र +ठकार पठति ।
३ भृत्यस्तरून् लुनति—भृत्य +तरून् लुनति ।
तपनस्ताप वितरति—तपन +ताप वितरति ।
बालस्थूत्कार करोति—बाल +थूत्कारं करोति ।

शुद्ध करो—

रामो (२) सौमित्रि आभाषते। विविधा काननद्रुमाश्शोभते। चंदनशीतलरनिलवँहति। शैलाविँराजते। सुगन्धयुक्तसुँखस्पर्शंहिँमालय वायु वहति। विशालो शाल्मलीतरु तिष्ठति। पक्षिण निवसंति। मायसो प्रवुद्धो पाशवत व्याध पश्यति। कपोतराजो सपरिवारश्चियत

१—किसी भी स्वर के पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गों से पर यदि च, छ होंगे तो उन विसर्गों के स्थानमें 'श' यदि ट, ठ होंगे तो 'ष' और त, थ, होंगे तो 'स' हो जायगा ।

२—स्वरसे पर विसर्ग होंगे और उन विसर्गों से पर क, ख, प फ, श ष, स, होंगे तो विसर्गों रहेंगे कुछ भी परिवर्तन न होगा ।

गच्छति। कपोतराजो तण्डुलकणलुब्धान् कपोतान् वदति। हृष्टपुष्टो गर्दभो भ्राम्यन् अवलोकति। गलितनखनयनजीर्णश्च वृद्धो प्रति वसति। गृहवासिन धर्मज्ञानरता विश्वासभूमय। अभ्यागतर तिथि पूज्य। मार्जाराश्चिं मांसरुचया ऽभवति। मार्जारभूमिं स्पृशति।

साहित्य परिचय।

(चन्द्रप्रभचरित हितोपदेश आदि ग्रन्थोंके नाना प्रकारके वाक्य यहां १ कर अर्थान्तरोंसे मिलादेना चाहिये।)

१ कुरुवंशीया नृपतय शूरा सफलकर्माण सार्वभौमा स्वर्गमुक्ति गामिनश्च भवति। श्रेयांसादयो राजानो यथाविधि जिनं अर्चंति, यथाकामं अर्थिनोऽर्चति, यथापराधं च दोषिणोऽदंति, इति प्रसिद्धि। कौरवास्त्यागिनोऽल्पभाषिणो विजिगीषवश्च। कुरुवंशीया युवराजा शिक्षिता भवति युवकाश्च यथाकालं उद्वहंति। परन्तु इमा जैनीं दीक्षां धारयंतो मुनिवृत्तयो धर्म ध्यायंतस्तु मुक्ता भवति।

अपरिचितशब्द—

यथाविधि—विधिके अनुसार। यथापराध—अपराधके अनुसार।

यथाकाम—इच्छाके अनुसार। यथाकाल—ठीक समय पर।

भाषा अर्थ—

२ कुरु वंशके राजा लोग शूर सफलप्रयत्न, संपूर्ण पृथिवीके ईश्वर, और स्वर्ग तथा मुक्तिको जाने वाले होते हैं। श्रेयांस आदिक राजा विधिके अनुसार जिनेंद्रको पूजते थे। अतिथियोंको इच्छाके अनुसार संतुष्ट करते हैं और अपराधके अनुसार दोषियोंको दण्ड देते हैं इसभांतिकी प्रसिद्धि है। कौरवलोग दानी परिमित बोलनेवाले, और जयके अभिलाषी होते हैं। कुरुवंश

के युवराज निश्चित होते हैं और युवा होने पर योग्यअवस्थामें विवाह करते हैं। परन्तु वृद्ध होने पर जैनधर्मकी दीक्षा धारण कर मुनिकी वृत्ति वाले होते हुये और धर्मको ध्याते हुये शरीर को छोडते हैं।

१ प्रश्नोत्तर—

प्र॰ के (कौनसे) नृपतय	प्र॰ कान् अर्चति, कान् अर्चंति
उ॰ कुरुवंशीया ते (वे)	उ॰ अर्थिन, दीपिन
प्र॰ किं विधा नृपतय	प्र॰ पुन किं विधाः कुरुवंशीया
उ॰ ते शुद्धा इत्यादि	उ॰ ते त्यागिन इत्यादि
प्र॰ के शुद्धा इत्यादि	प्र॰ अपि राजपुत्रा निश्चिता भवति
उ॰ कुरुवंशीया नृपतय	
प्र॰ का (क्या) प्रसिद्धि	उ॰ ते निश्चिता भवति एव
उ॰ श्रेयांसादयो राजानो यथा-विधि जिन अर्चंति इत्यादि	प्र॰ के उद्वहंते
	उ॰ युवका न तु शिशव
प्र॰ का (किसको) अर्चंति	प्र॰ के मुनिवृत्तयः
उ॰ जिन	उ॰ वृद्धा न तु युवका।

प्र॰ किंविध वृद्धचरित (बूढोंका क्या काम है)

उ॰ वृद्धा जिनदीक्षां धारयंती मुनिवृत्तयो धर्मं ध्यायंत इत्यादि

संस्कृत बनाओ—

रामचंद्र लक्ष्मणको कहते हैं। वर्षा आगई है। बादल (नभ स्थल) मेघछन्न है। ग्रीष्मपीडित पृथिवी आंसू छोडती है। ठंडी २ हवा चलरहीहै। प्रफुल्लितवृक्षोंको मेघधारा सींच रही है। मेघ गर्ज रहा है। विद्युत् नीलमेघोंका आश्रय लेती है और शोभती है। सूर्य मेघबद्ध है इसलिये प्रकाशित नहीं होता है। नदियां बढ़ती है। वनवासी जीव अपने अपने (स्व) स्थानका आश्रय

ले रहे हैं। मृग समूह जहां (यत्र) तहां (तत्र) स्थित हैं। अष्टापद मेघको स्पर्श करता है ऊपर (उपरि) कूदता है (कूर्दति) पर विफल प्रयत्न होता है। हाथी चिंघाड़ते हैं, सिंह गर्जते हैं, खरगोश (शशक) बिलमें घुसते हैं, समय दृष्टव्य है। दिशायें बहुत (बहु) शोभती हैं। इन्द्र धनुष मनको हरण करता है।

प्रश्नमाला—

का समागता। किंविधं नभः। का वाप्यापि सुषति। अपि (क्या) पवनो वहति। को नदति। का गीतमधं श्रूयते। कीदृशं धनुः। का एधते। किंविधा वनवासिनो जीवाः। कुत्र (कहां) तिष्ठति मृगसमूहः। कं स्पृशते अष्टापदः, किं च आचरति। अधुना गजसिंहशशकाः किं आचरति (करते हैं)। कीदृशं वनं।

निम्न लिखित विषय पर संस्कृतमें प्रश्नोत्तर करो—

(१) हन्त (हर्ष है) प्रभातप्रायो जातः। अस्तोन्मुखो भगवान् निशाकरः, दिनकरस्तु उदयोन्मुखः। मलिनं पश्चिम दिग्गगनं उज्ज्वलं तु पूर्वं। म्लानानि कुमुदानि, उत्फुल्लानि तु कुवलयानि। महान् रमणीयः समयः। उद्बुद्धाः कूजनमुखरा विहगमाः। विकसितानि सुरभीणि कुसुमानि। शिशिरसुन्दराणि श्यामलानि दूर्वाक्षेत्राणि। सुरभिशीतलः समीरणो वहति। लोहितो मधुरो बालातपः भासते। अनुचितं अधुना शयनं। परिहरणीयं इदम् (यह) इदानीं क्षुद्रा मधुकरा अपि स्वकर्मनिरताः छात्रास्तु मानवाः अतः पठनीयं।

हिंदी अर्थ—

हर्ष है कि प्रायः सवेरा हो चुका है। भगवान् चन्द्र अस्त होने वाले हैं सूरज उदयके सम्मुख है। पश्चिम दिशाका आंगन अंधकार

१—अव्ययोंके न कोई लिंग होता है और न कोई वचन। इस लिये अव्ययोंके रूप नहीं चलते। वाक्योंमें अव्ययोंको ज्योंके त्योंही रखदी जाता है। जिस वाक्यमें कोई क्रिया न लिखी हो उसमें अस्ति (है) भवति (होता है) समझना चाहिये।

मय और पूर्वदिशाका प्रकाशमय है। कुमुद (कुई फूल) म्लान हो गये हैं लेकिन सूरजमुखो फूल खिलगये हैं। समय बड़ाही मनोहर है। कूजनेवाले पक्षी जाग गये हैं। सुगंधित फूल विकसित हो गये हैं। हरे हरे दूबके खेत ओससे सुंदर दीख पड़ते हैं खुशबूदार ठंडी हवा चल रही है। लाल और सुंदर सूरज चमक रहा है। इस समय सोना अयोग्य है। इसको छोड़ना चाहिये। इस समय छोटे भौंरे भी अपने काममें लगे हैं विद्यार्थी तो मनुष्य हैं इसलिये पढना चाहिये।

हिंदी बनाओ—

ब्रह्मदत्तनामा सम्राट् एकं स्वभवनमायात परिव्राजककृपिय देव पृच्छति। "कुत्र मङ्गामिष्टानि एताहशानि (ऐसे) फलानि वर्तते? तत् श्रुत्वा परिव्राट् वदति।" "मदीयमठसमीपस्था बहवो वृक्षा तत्र बहूनि वर्तते" तत (इसके बाद) शुभाशुभमविचारयन् जिह्वालम्पटो नृपस्तत्र गन्तु (जानेके लिये) आरभते। तत सागरसमीप गत्वा (जाकर) परिव्राट् सम्राज पतितु च पृच्छति। दु खं अनुभवन् सम्राट पचनमस्कारमन्त्र स्मरति। देवय मारयितु समर्थो न भवति।

अधुना मध्याह्नसमय, महान् निदाघ (धूप), उष्ण पवनो वहति। पथिका मार्ग गच्छतो महांत कष्ट अनुभवति अत एव एकोऽपि (भो) पाथा नयनपथ न अवतरति। सर्वत्र निस्तब्धता (सुनसान) वर्तते। पक्षिणोऽपि स्वकीयान् नीडान् आश्रयति। परं (लेकिन) क्षत्रियपुत्रौ अश्वारोहिणी (घुड सवार) वीरौ युवानौ कुत्र अपि गच्छतो दृष्टिपथ (नेत्रोंके सामने) अवतरत। एको श्वेत घोटकारोही द्वितीयश्च लोहिताश्वारोही। द्वावपि भ्रातरौ।

प्रश्नोत्तरमाला—

१ क क पृच्छति। क प्रश्न। किम् उत्तरं? नृप किं आचरति।

२ कीदृश समय। पथिका कि न मार्ग गच्छति। कौ नयन गोचरतां गतौ?।

षष्ठ अध्याय।

सर्वादि शब्दोंका व्यवहार।

प्रथम पाठ।

अकारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ सर्वे	सर्वं न	अवगच्छन्ति।	सब लोग	सब (पदार्थ)	नहीं जानते हैं।
दुर्जना	सर्वं	ईंजति।	दुर्जन	सबको	निंदा करते हैं।
अन्य	अन्यं	पृच्छति।	दूसरा	दूसरेको	पूछता है।
२ अन्यौ	शास्त्राणि	गर्हेते।	अन्य दो पुरुष	शास्त्रोंकी	आलोचना करते हैं।
अन्य	अन्यौ प्रश्नौ	पठति।	दूसरा	अन्य दो प्रश्नोंको	पढ़ता है।
३ सर्वे	अध्यापकान्	मानन्ति।	सब लोग	अध्यापकोंको	मानते हैं।
देवा	सर्वान्	तिजति।	देव	सबको	क्षमा करते हैं।
साधव	अन्यान्	सेवते।	साधु लोग	दूसरोंकी	सेवा करते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

अन्यौ, सर्व, अन्य, सर्वौ, सर्वे।

सर्व शब्दके रूप—

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा—	(१)सर्वः	सर्वौ	सर्वे।
द्वितीया—	सर्वं	,,	सर्वान्।

१—इसी तरह विश्व, उभ, अन्यतर इतर कतर कतम के रूप होते हैं।

द्वितीय पाठ।

तद् (१) यद्, किम् (२) शब्द।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	सः	बालकान्	पृच्छति।	वह	बालकोंको	पूछता है।
	सर्वे	[illegible]	निन्दति।	सब	उसको	निंदा करते हैं।
	यः	घटं	सृजति।	जो	घड़ेको	बनाता है।
	सर्वे	यं	पृच्छन्ति।	सब	जिसको	पूछते हैं।
	कः	तं	उपदिशति।	कौन	उसको	उपदेश देता है।
	स्वामी	कं	आदिशति।	स्वामी	किसको	आज्ञा देता है।
२	तौ	यौ	मानेते।	वे दो	जिनदोनोंको	मानते हैं।
	यौ	तौ	पृच्छतः।	जो दो	उन दोनोंको	पूछते हैं।
	कौ	मातुलालयं	गच्छतः।	कौन दो	मामाके घर	जाते हैं।
	तौ	कौ	इच्छतः।	वे दो	किन दोनोंको	चाहते हैं।
३	ते	यान्	पृच्छन्ति।	वे	जिनको	पूछते हैं।
	के	कान्	मानते।	कौन लोग	किनका	सन्मान करते हैं।
	ये	तान्	उपदिशन्ति।	जो लोग	उनको	उपदेश देते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

य, ये, तान्, यौ, के, कान् स, तं, तौ, ।

१—तद् शब्दके तकारको प्रथमाके एकवचनमें 'स' आदेश होता है। त्यद् तद्, यद्, अदस्, इदम् एतद्, और कि ये सात शब्दोंके अन्त्य अक्षरको स्थानमें 'अ' हो जाता है इस लिये इनको अकारान्त समझना चाहिये और इनके रूप सर्व शब्दकी भांति चलाने चाहिये। जैसे—यद् शब्दको 'य' समझा तो रूप य, यौ ये आदि सर्व शब्दकी भांति हुये। २—किम् शब्दको 'क' शब्द समझना चाहिये।

तृतीय पाठ।

इदम् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ अय	सुख	इच्छति।	यह	सु	चाहता है।
स्वामी	इम	तिजते।	स्वामी		क्षमा करता है।
२ इमौ	क	पृच्छतः।	ये दोनों	किसको	पूछते हैं।
स	इमौ	वदति।	वह	इन दोनों	कहता है।
३ इमे	पुस्तकानि	पठन्ति।	ये	पुस्तकें	पढ़ते हैं।
सर्वे	इमान्	गर्हन्ते।	सब	इनकी	निंदा करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
कौ	अय	पृच्छत।	कौ	इम	पृच्छतः।
इम	सुख	इच्छति।	इमे	सुख	इच्छन्ति।
ते	इमे	मानति।	ते	इमान्	मानन्ति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अय, इमौ, इमे, इम, इमौ, इमान।

चतुर्थ पाठ।

अदस् शब्द।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ असौ	आश्रम	गच्छति।	यह	आश्रमको	जाता है।
अय	अमु	वदति।	यह	इसको	कहता है।
२ अमू	वस्तूनि	विनिमयेते।	यह दो जने	वस्तुओंका	लेनदेन करते हैं।
शिक्षक	अमू	पृच्छति।	शिक्षक	इन दोनोंको	पूछता है।
३ अमी	सर्वान्	ईर्जते।	ये	इनकी	निंदा करते हैं।
सर्वे	अमून्	तिजते।	सब	इनको	क्षमा करते हैं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
बालक: अमी पृच्छति।	बालक अमून् पृच्छति।
अमी गृह गच्छति।	असौ गृहं गच्छति।
अमू तान् उपदिशंति।	अमी तान् उपदिशन्ति।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अमू, अमी, अमु, अमू, अमून्।

पंचम पाठ।

पुंलिंग सर्वनाम शब्दोंके साथ विशेषणका प्रयोग।

पापात्मा अयं गुणवन्तं तं हिनस्ति।	पापी यह उस गुणवान्‌को मारता है।
गरीयांसौ इमौ क्षीणान् सर्वान् निन्दत।	बड़े ये दो जने क्षीण सब लोगोंकी निंदा करते हैं।
उदारमतय सर्वे दरिद्रान् अपरान् भरति।	उदारमति सब लोग दूसरे दरिद्रोंको पालते हैं।
लघुचेतस इमे निस्वान् अमून् गर्हते।	लघुचित्तवाले ये लोग इन दरिद्रोंकी निन्दा करते हैं।
बुद्धिमंतौ तौ विदुष इमान् पृच्छत।	ये दो बुद्धिमान् इन बुद्धिमानोंको पूछते हैं।
निर्बोध कः तं ज्ञानिन न व्रजति।	कौन मूर्ख उस ज्ञानीके पास नहीं जाता है।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पापकृत अय पुण्यात्मान तान् गर्हेति।	पापकृत् अय पुण्यात्मन तान् गर्हति।
विद्वांसौ इमे मूढान अमू उपदिशति।	विद्वांस इमे मूढौ अमू उपदिशति।

अशुद्ध	शुद्ध
संहिता: पथ जाल हरति।	संहिता: इमे जालं हरति।
श्रोकार्त्तं तौ विलपतौ इव	श्रोकार्त्तौ तौ विलपत इव
वामिनः सर्वान् पृच्छति।	वामिनः सर्वान् पृच्छति।

नीचे लिखे विशेषणोंको भिन्न भिन्न शब्दोंके साथ लगाकर वाक्य बनाओ—

मतिमत, ज्यायांसो, गुणिन, मार्गभौमान मेधाव्यिप, लघु चेता, पापकर्माणो, विद्यावत, कनीयांस गच्छत, हृष्टा, स्तुवत ध्यायत, रोदनानुसारिणो।

शुद्ध करो—

कन्याभिप्सु ते स्वयंवरा कन्या इच्छते। क सुग त्रासितवत'। ज्यायांस अमू कनीयास तान् उपदिश ति। विदुष सर्वं मूर्खान् इमे तिजते। गायत स' श्रोतार अमून् वदति। आप्मागतो असौ ध्याय'त तान् प्रणमत। मारगर्भा अमू स्तुता'। विचारक इमे दीपिप' न पटेलि।

एक एक योग्य विशेषण रखकर वाक्य पूरे करो—

———असौ———इमान् पठति। ———ते———अमू निंदति। ——सर्वे———तान् पश्यति। ———अमू———तौ महत'।

उपयुक्त सर्वनाम लगाकर वाक्य पूरे करो—

———महामतय ———अपराधिन ———तिजते। बलवान्——— दुर्बलान———मर्दति। गच्छत ———तिष्ठत———उपदिशति। साधुयोनी———परोपकारिण ———मानिते। शिक्षानुरागो——— विद्यादातार———सेवते।

संस्कृत बनाओ—

वह जीवधर उसी काष्ठांगारको मारता है जिसने उसके पिता को मारा था (हतिवत्)। ये लोग उस रावणके पास जाते हैं, जिसने

सीताको हरा था (हरतिस्म)। ये ही शास्त्रभक्त हृदसेवी भूपतिगण शत्रुओंको पराजित करते हैं। इस बैलको वह किसान चाहता है। यह बड़ा भारी अपराध है पर इसको भी वह सहता है। अन्य विद्वान क्या कहते हैं। दरिद्रताको कोई भी नहीं चाहता है। वह श्रेणिक (बिंबसार) सर्वत्र प्रसिद्ध है जो पहिले बौद्ध और पश्चात् जैन हुआ (भवतिस्म)।

हिंदी बनाओ—

अन्यधर्मविद्वो माला अमु राजान तथा अतिक्रामति यथा सागर गत्वो स्रोतोवहा (नदी) मार्गस्थ महीधर अतिक्रामति। सागरोऽय महागभीर। असौ सूर्या मरीचि वितरति। अमी मत्स्या जलान् उत्क्षिपति। कोऽय जन ? य एव स्नानाय नदीं गच्छति। स एव अर्थ यो मुनीन् सेवते छात्रान् च उपदिशति। श्मशानभूमि गतास्ते त मुनि प्रणतवत। सोऽपि मुनिराशीर्वाद दत्तवान्। अमु ग्रथ पठित्वा (पढकर) सर्वे छात्रा गृह गता। एष निर्धनो वन गच्छति। केचित् त श्लाघते अन्ये च निदति। अय एव प्रिय सखा। सर्वे गुणा काचने आश्रयति। का अपि शबरी (वारईलिनी) नदीजल विम्बतो प्रतिबिम्बित आत्मरूप दृष्ट्वा महत् मुद लब्धवती। तत पादप्रभृति (वगैरे) शिर पर्यंत सर्वान् अवयवान् एकैकशो (एक एक करके) निरूपयती गदित- वती "एतद् विषाण (सींग) युगल कियत् (कितने) मनोहर वर्तते। कथ (कैसे) सु दरे नयने, ये कमलानि अपि जयत। अथ अग कुसुमसदृश कोमल। पर (लेकिन) पादा एव लज्जा करा। इमे छाया दुर्दर्शनाय वर्तते।

परिशिष्ट।

पूर्व शब्द। (१) एतद् (यह) शब्द (एवं इदम्)

	एक	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु
प्रथ०—	पूर्वं	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः	एषः	एतौ	एते।
द्वि०—	पूर्वं	पूर्वौ	पूर्वान्	एतं,एनं	एतौ,एनौ	एतान्,एनान्

इसी तरह स्व, अंतर, पर, अवर, उत्तर, दक्षिण, अपर, अधरके रूप समझना।

स्यद् (यह) के रूप प्रथमाके एकवचन में स्यः होगा।

(२) एक (एक, कोई) शब्द। (३) द्वि (दो) शब्द।

प्रथ०—	एकः	एकौ	एके	०	द्वौ	०
द्वि०—	एकं	एकौ	एकान्	०	द्वौ	०

(४) प्रथम (पहिला)

प्रथ०—	प्रथमः	प्रथमौ	प्रथमे, प्रथमाः।
द्वि०—	प्रथमं	प्रथमौ	प्रथमान्।

१—एतद् तथा इदम् शब्दके द्वितीया विभक्तोमें—एनं एनौ एनान् इस तरहके भी रूप होते हैं। इन रूपोंका प्रयोग सब जगह नहीं करते। जब एक बार इदम् अथवा एतद्, शब्दका प्रयोग एक पदार्थके लिये कर चुके हैं और फिर दूसरी बारभी उसी पदार्थके लिये इदम् अथवा एतद्का प्रयोग करना है तब इन रूपोंका प्रयोग करते हैं। जैसे—अयं भगवान् वदति (यह भगवान् है) अतः एनं सर्वे मानन्ति (इस लिये इसका सब सत्कार करते हैं) यहां एनं सर्वे मानन्ति कहना चाहिए है। २। एक शब्दका अर्थ जब कि अकेला होता है अर्थात् जब किसीको संख्या बताता है तब एकवचन में रूप चलते हैं द्विवचन बहुवचनमें नहीं। ३—द्वि शब्दका एकवचन बहुवचन नहीं होता। ४—इसी तरह—चरम, अल्प अर्ध कतिपय नम और जिन शब्दोंके अंतमें तय है उन शब्दोंके रूप होते हैं।

उक्षत बनाओ—

यह लडका सुशील है इसलिये इसको सब मानते हैं। इस विद्यार्थीने संस्कृतप्रवेशिनी पढली है (पठितवान्) इसलिये इसको अंग्रेज पढाया (पाठय) ये दोनों दुष्ट हैं इससे लोग इनको निंदा करते हैं। ये धार्मिक हैं इसलिये देव भी इनको नमते हैं। ये लोग विद्वान हैं इससे इनको सब पूजते है। कोई कहते है कि (यत्) यह जीव मोक्ष जाकर (गत्वा) लौट आता है (प्रत्या गच्छति) फोर भ्रमण करता है पर पूर्वाचार्योंने इस बातका खंडन किया है (प्रत्याख्यातवत)।

हिन्दी बनाओ—

ज्ञातिकुलैकमयया भर्तृमतीं नारीं सतीं अपि जनोऽन्यथा विशकते। अतो अधव प्रियां अप्रियां वा स्त्रीं पतिरच्छ प्रति प्रेषयति (भेजते हैं)। परपीडन दुष्टस्वभावो अस्मान् सज्जनास्त्यजन्ति। बुद्धि मत स्वसामर्थ्यं वोक्ष्य दानादिक आचरति। ये विचारशून्यास्ते आत्मान पंडित मन्यमाना गव वहति। महान्तो जना परस्पर विवदते होनाय दु ख अनुभवति। यो हिताहित न बोधति स महतोऽपि हानि एव यच्छति। मधुरा वाणी कल्याणकारिणी। पंडित स खलु श्रेयो यो नित्यं भाषते मितं। जीवन् नरो भद्र(कल्याण) शतानि पश्यति। धार्मिका एते अत एनान् देवा अपि नमति। इम तडाग भ्रमरा सेवते अयो (और) एत विहगसत्र। एतो जनो अर्थिन सेवते अयो एनो मित्राणि अपि। सर्व स्वार्थं पश्यति। सूर्यो हि महान् उपकारक।

—*—

षष्ठ पाठ ।

स्त्रीलिंग ।

(१)—आकारांत ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सर्वा	प्रभुं	पूजति ।	सब (स्त्री)	प्रभुको	पूजती है ।
साधु	सर्वां	उपदिशति ।	साधु	सब (स्त्री) को	उपदेश देता है ।
जननी	अन्यां	सेवते ।	मा	दूसरी (स्त्री) की	सेवती है ।
२ अन्ये	सर्वां	सेवेते ।	अन्य दो स्त्रियां	सब (स्त्री) को	सेवें हैं ।
पुत्रशोक	अन्ये	तुदति ।	पुत्र शोक	अन्य दो (स्त्री) को	कष्ट देता है ।
३ सर्वाः	देवान्	अर्चन्ति ।	सब (स्त्रियां)	देवोंको	पूजा करती हैं ।
साधुः	सर्वाः	उपदिशति ।	साधु	सब (स्त्रियों) को	उपदेश देता है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

सर्वां, अन्ये, अपरा, अन्या, अपरे, सर्वे, अपरा ।

सप्तम पाठ ।

तद् यद् किम् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ सा	बालिकां	वदति ।	वह	बालिकाको	कहती है ।
बालिका	तां	पृच्छति ।	लड़की	उसको	पूछती है ।
या	तं	अर्दति ।	जो (लड़की)	उसको	दुःख देती है ।

१—पहिले बतला चुके हैं कि प्रायः अकारांत शब्दोंको दीर्घ आकारांत कर देनेसे वे प्रायः स्त्रीलिंग हो जाते हैं उसी नियमके अनुसार सर्व आदिक शब्दोंको भी स्त्रीलिंगमें दीर्घ आकारांत कर देना चाहिये। सर्व आदिक पहिले बताये गये शब्द व्यंजनांत होने पर भी अकारांत हो जाते हैं यह भी बता चुके हैं इस लिये उनको भी उसी तरह स्त्रीलिंग बनाकर रूप चलाने चाहिये। द्वितीय अध्यायके पहिले पाठके समान इन सब आदिकोंके रूप होंगे कुछ अन्तर नहीं होता है।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
	स	यां	उद्वहति।	वह	जिसको	ब्याहता है।
	का	वाचं	भाषते।	कौन (स्त्री)	वाणी	बोलती है।
	बालिका	कां	स्पृशति।	लड़की	किस (लड़की) को	छूती है।
२	ते	बालिकां	वदतः।	वे दो (स्त्रियां)	लड़कीको	कहती हैं।
	बालिका	ते	पृच्छति।	लड़की	उन दो (स्त्रियां) को	पूछती है।
	ये	तं	पीडयतः।	जो दो (स्त्री)	उसको	पीड़ा देती हैं।
	बालिका	के	स्पृशति।	लड़की	किन दो (स्त्री) को	छूती है।
३	ताः	बालिकां	वदन्ति।	वे स्त्रियां	लड़कीको	कहती हैं।
	ताः	याः	उपदिशन्ति।	वे स्त्रियां	जिन (स्त्रियों) को	उपदेश देती हैं।
	प्रभवः	काः	आदिशन्ति।	स्वामी लोग	किन (स्त्रियों) को	आज्ञा देते हैं।

निम्नलिखित शब्दोंको वाक्यमें लाकर वाक्य बनाओ—

या, ये, याः सा, ते ताः, का, के, काः, यां, ये, याः, तां, ते, ताः, कां, के, काः,।

अष्टम पाठ।

इदम् शब्द।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१	इयं	वाचं	भाषते।	यह (स्त्री)	वाणी	कहती है।
	जननी	इमां	पृच्छति।	मा	इस (स्त्री) को	पूछती है।
२	इमे	श्वशुरालयं	गच्छतः।	ये दोनों (स्त्रियां)	ससुरालको	जाती हैं।
	श्वश्रूः	इमे	आदिशति।	सास	इन दो (स्त्रियों) को	आज्ञा देती है।
३	इमाः	कं	पृच्छन्ति।	ये स्त्रियां	किसको	पूछती हैं।
	कः	इमाः	ईक्षते।	कौन	इन स्त्रियोंको	देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

इयं, इमे, इमाः, इमां, इमे, इमाः।

नवम पाठ ।

अदस् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ असौ	भृत्यां	तर्जति ।	यह (स्त्री)	नौकरनीको	ताड़ना देती है ।
परिचारिका	अमूं	मानते ।	नौकरनी	इस (स्त्री) को	मानती है ।
२ अमू	बालिकां	पृच्छतः ।	ये दो स्त्रियां	लड़कीको	पूछती हैं ।
बालिका	अमू	पृच्छति ।	लड़की	इन दो स्त्रियोंको	पूछती है ।
३ अमूः	वार्त्ता	भाषन्ते ।	ये स्त्रियां	बात	करती हैं ।
स्वामिनी	अमूः	पृच्छति ।	मालकिन	इन स्त्रियोंको	पूछती है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अमू अमूः, अमू, अमूं, अमूः ।

दशम पाठ ।

(स्त्रीलिंग सर्वनामशब्दोंका विशेषणोंके साथ व्यवहार)

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सुंदरी सा	मनोज्ञां इमां	पश्यति ।	सुंदरी वह	मनोज्ञ इसको	देखती है ।
सुंदर्यौ अमू	मनोज्ञे ते	पश्यतः ।	सुंदरी ये दोनों	मनोज्ञ उन दोनोंको	देखती हैं ।
ज्यायस्यः इमाः	रुदतीः ताः	उपदिशन्ति ।	श्रेष्ठ ये (स्त्रियां)	रोती हुई उनको	उपदेश देती हैं ।
भृत्याः	महानुभावाः इमाः	सेवन्ते ।	भृत्य लोग	इन महानुभाव स्त्रीको	सेवते हैं ।
दात्र्यौ इमे	अलोलाः सर्वाः	स्पृशतः ।	देने वाली ये दो स्त्रियां	लेने वाली	सब स्त्रियोंको छूती हैं ।

कर्ता कर्म क्रिया ।	कर्ता कर्म क्रिया ।
शिक्षार्थिनी असौ शिक्षयित्रीं तां प्रणमति ।	शिक्षाकी चाहने वाली यह स्त्री उस शिक्षिका स्त्रीको प्रणाम करती है
गच्छन्त्यौ एते पृच्छन्तीं इमाम् वदत ।	जाती हुई ये दो स्त्रियां पूछने वाली इस स्त्रीको कहती हैं ।
धर्मपरा एषा साध्वीं इमाम् अर्चति ।	धर्ममें तत्पर यह स्त्री इस साध्वी को पूजती है ।
पृष्टा कथा श्रुता ।	पूछी बतायी सुनी ।
ब्रह्मचारिणि उत्तरा पुस्तिका पठति ।	ब्रह्मचारी लोग बादकी पुस्तकें पढ़ते हैं ।
स्वर्गं गन्त्री सा कठोर तप चरति ।	स्वर्गको जानेवाली वह स्त्री कठोर तप करती है ।
श्वेतवस्त्रधारिणी इयं साध्वी अर्चन्तीं इमां वदति ।	श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली यह साध्वी पूजनेवाली इस स्त्रीको कहती है ।

अशुद्ध	शुद्ध
शुद्धवसना एते दात्री अमू पंचत ।	शुद्धवसने एते दात्री अमूं पचत ।
रामदास भिक्षां इमा, वांछति ।	रामदास भिक्षा इमा वांछति ।
रुदती सर्वा अस्पष्टां एता भाषते ।	रुदत्य सर्वा अस्पष्टा एता भाषन्ते ।
इय जैनपुस्तिका सर्वां पठिता ।	इयं जैनपुस्तिका सर्वा पठिता ।
शिष्यां पवित्रां एता आचरति ।	शिष्या पवित्रा एता आचरति ।

नवम पाठ ।

अदस् शब्द ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ असौ	भृत्यान्	तर्जति ।	यह (स्त्री)	नौकरोंको ताड़ना	देती है ।
परिचारिका	अमूं	मानति ।	नौकरनी	इस (स्त्री) को	मानती है ।
२ अमू	बालिकां	पृच्छतः ।	ये दो स्त्रियां	लड़कीको	पूछती हैं ।
बालिका	अमू	पृच्छति ।	लड़की	इन दो स्त्रियोंको	पूछती है ।
३ अमूः	वाचं	भाषन्ते ।	ये स्त्रियां	वचन	बोलती हैं ।
स्वामिनी	अमूः	पृच्छति ।	मालकिन	इन स्त्रियोंको	पूछती है ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

असौ, अमूं अमू, अमूः, अमूः, अमूः ।

दशम पाठ ।

(स्त्रीलिंग सर्वनामशब्दोंका विशेषणोंके साथ व्यवहार)

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
सुन्दरी सा	मनोज्ञां इमां	पश्यति ।	सुंदरी वह	मनोज्ञ इसको	देखती है ।
सुन्दर्यौ अमू	मनोज्ञे ते	पश्यतः ।	सुंदरी ये दोनों	मनोज्ञ उन दोनोंको	देखती हैं ।
ज्यायस्यः इमाः	वदन्तीः ताः	उपदिशन्ति ।	श्रेष्ठ ये (स्त्रियां)	बोलती हुई उनको	उपदेश देती हैं ।
भृत्याः	महानुभावां इमां	सेवन्ते ।	भृत्य लोग	इस महानुभाव स्त्रीको	सेवते हैं ।
दात्र्यौ इमे	गृहीत्रीः सर्वाः	स्पृशतः ।	देने वाली ये दो स्त्रियां	लेने वाली सब स्त्रियोंको	छूती हैं ।

कर्ता कर्म क्रिया ।	कर्ता कर्म क्रिया ।
शिक्षार्थिनी अमी शिक्षयित्री तां प्रणमति ।	शिक्षाको चाहने वाली यह स्त्री उस शिक्षिका स्त्रीको प्रणाम करती है
गच्छन्त्यौ एते पृच्छन्तीं अमूं वदतः ।	जाती हुई ये दो स्त्रियां पूछने वाली इस स्त्रीको कहती हैं ।
धर्मपरा एषा साध्वी अमूं अर्चति ।	धर्ममें तत्पर यह स्त्री इस साध्वी को पूजती है ।
पत्नी कथा श्रुता ।	पत्नीने कथायें सुनी ।
ब्रह्मचारिणी उत्तरा पुस्तिका पठति ।	ब्रह्मचारी स्त्री बादकी पुस्तकें पढ़ती है ।
स्वर्गं गन्त्री सा कठोरं तपः चरति ।	स्वर्गको जानेवाली वह स्त्री कठोर तप करती है ।
श्वेतवस्त्रधारिणी इयं साध्वी अर्चन्तीं इमां वदति ।	श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली यह साध्वी पूजनेवाली इस स्त्रीको कहती है ।

अशुद्ध	शुद्ध
शुद्धवसना एते दात्री अमू अवत ।	शुद्धवसने एते दात्र्यौ अमूः अवत ।
रामदास मेधां इमां वाञ्छति ।	रामदास मेधा इमां वाञ्छति ।
वदती सर्वा अस्पष्टा एता भाषते ।	वदन्त्य सर्वा अस्पष्टा एता भाषते ।
इयं जैनपुस्तिका सर्वां पठिता ।	इयं जैनपुस्तिका सर्वा पठिता ।
शिष्यां पवित्रां एता आहरति ।	शिष्या पवित्रा एता आहरति ।

इमा साध्व्य अमू पवित्रा पश्यति ।	इमाः साध्वीः अमू पवित्रे पश्यति ।
उज्ज्वला एते द्योतते ।	उज्ज्वला एषा द्योतते ।
क्लेशदायिन्य इय सञ्जाता ।	क्लेशदायिन्य इमा' सञ्जाता ।
वेगवत्य अमी एधते ।	वेगवत्य अमू एधते ।
बुद्धिमत्यो असौ लज्जमाना अमू पृच्छत ।	बुद्धिमत्यौ अम लज्जमाने अमू पृच्छत ।

शुद्ध करो—

सपीवारा एषा वर्तते। श्वेता अमू शोभेते। विदुषी सर्वां मनोहारिणीं इमा वदति। क्षुधिता इमे पिपासिता एता पृच्छत। साध्व्य असौ अर्चितवतीं अमू स्मरति। कै ता गच्छति। असौ बालिका किंविधा एता पश्यति। का अमू आगच्छति। बालकं का राज्ञीं पश्यति। सा कां पृच्छति। ता अमू पृच्छ'ति। अपि (यथा) ते विदुष्य। ये गुणवत्य ते यश लभते।

नीचे लिखे शब्दोंसे एक २ वाक्य बनाओ लेकिन सर्वादि शब्दोंका प्रयोग करना आवश्यक है।

पराजिता परियतमाना, बिभ्रती, गच्छती, वदती, म्रियमाणी, गरीयसी, ज्यायसी, मायाविन्य, सहर्षी, लज्जायती, हिरण्मयीं, यशस्कर्यं द्योतस्मती, दात्र, भवित्री (होने वाली), आगता ।

एक एक उपयुक्त शब्द लगाकर नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

———एता वहति, ———असौ एधते, योषित्———इमां पश्यति। दृष्टि ——एता उघति। ——इय——सर्वा तर्जति। ——इमा प्रत्यावर्तते। परोपकारी———इमां लभते। लोका ——अमू महति।——एता आकाश कथते। स्त्रियः ——सर्वा ———मनंति । वन्हि——एते दहति। ——इमे शोभेते। विदुष्य ——इमे अनुगच्छति।

एकादश पाठ।

अशुद्ध।	शुद्ध।
श्यामल इव शोभते।	श्यामला (नीली) इव शोभते।
मनस्वी एषा राजते।	मनस्विनी एषा राजते।
कर्त्री कार्यकुशल अमू आदिशति।	कर्त्री कार्यकुशलां अमू आदिशति।
विद्वान् अमू वदंत इमा उपदिशति।	विदुष्य' अमू वदतीं इमां उपदिशति।
ब्रह्मचारी एता ज्ञानदातार परिषद गच्छति।	ब्रह्मचारिण्य एता' ज्ञानदात्रीं परिषदं गच्छति।
रत्नाभरण' एषा दयावत अमू अर्चति।	रत्नाभरणा एषा दयावती अमू अर्चति।
सुग्रीव रत्नभूषित अयोध्यां दृश्यते।	सुग्रीव रत्नभूषिता अयोध्या दृश्यते।
वेगवत एता एधते।	वेगवत्य. एता एधते।
ज्ञानवान् इव शोभा पश्यत ता भाषते।	ज्ञानवती इव शोभां पश्यतीं ता भाषते।
धूसरी एते आगच्छत।	धूसरे एते आगच्छत।

शुद्ध करो—

गुणवत अमू विद्यार्थी इमा पृच्छति। शुभ्र एता मेघमुक्ता इमाम् उपगता (प्राप्त हुई)। मनस्विन ता मधुराणि इमे भाषते। कृष्ण अय नील एतां कुर्वति। पवित्र इमा साधून् एता भाषते। साधु इमे सुयतान् अमू नृशति।

उपयुक्त सब नाम शब्दोंको प्रयोगमें लाकर वाक्य पूरे करो—

गुणवत्य ——देवसद्गों——सेवन्ते। तृष्णार्त्ता ——तृष्णातुरा ——दयन्ते। सरलस्वभावा.——साध्वी.——वहति। ज्ञानार्थिन्य

——निर्मलसलिलां——अवगाहते। कलमौलापरिल्याग —रत्नाकर धौता——रचयति। मधुपानमत्ता (मधुकेपानेमें लगी हुये)—— प्रफुल्लानि——न त्यजति। धर्मार्थी——क्षेमकरी—— इच्छति।

नीचे लिखे वाक्योंमें एकवचनके स्थानमें बहुवचन और बहुवचनके स्थानमें एकवचन करो—

विद्वांस एते विचिन्ता धनम् लभन्ते। पण्डितबुद्धिरसौ धर्मं ज्ञानी इमां न भावते। पुत्रार्थिन्य एता साध्वीं वर्द्धन्ति। सम विवाहा इव नवोढां इमां उपदिशन्ति। कन्याद्रष्टुकामा (लड़कीको देखनेकी इच्छावाले) वधू स्फटिकमयीं तां पश्यति।

स्त्रीलिङ्गके स्थानमें पुलिंग और पुलिंगके स्थानमें स्त्रीलिंग बना करो—

निपुण अय गुणवतीं इमां नर्तां उपदिशति। चपला एषा सुन्दरी एतो इच्छति। वेगवत्यो इमे विशालं वस्तु कांक्षन्त। अत्र मित्रो इव तं पुत्रं पश्यति। विमलमतिमो वसो मत (अच्छा योग्य) न लजति। प्रियवादिन एते निर्बोधां लुभंति। गरीयांसो इमो श्रेयसी धनम् लभन्ते। कनीयसी सा ज्यायांसं अभिलषति।

ऊपर लिखे वाक्योंकी हिंदी लिखो।

हिंदी बनाओ—

योऽन्यं पीडाग्रस्तं पश्यति, तथा (और) तदीयां (उसकी) तां पीडां चिन्तयति (विचारता है) सोऽधम एव चिन्तासमाकुलो भवति। अधम उपदेष्टु (उपदेश देनेके लिये) को न पण्डित। आकार एव (ही) सर्वान् गुणान् वदति। ये धूर्त्तास्ते मूर्खान् आश्रित्य (आश्रयकरके) जीवन्ति। या तु असाध्या चपला दुरन्ता सा लक्ष्मी कथं (क्यों) न त्याज्या (छोड़ने योग्य)। सर्वं सुखं न अनुभवति। सर्वा सम्पदो नश्वरा। या सर्वदा पतिं अनुसरति सा एव भार्या पतिव्रता। इमां विदुषीं वीक्ष्य के न आनन्दं लभन्ते। ता स्त्रियो हि (निश्चयसे) धन्या या भवति पतिव्रता। या एका अपि

क्षुत्पिता याच वदति सा नून (निश्चयसे) दण्डनीया (दण्ड देनेके योग्य)। ते एव मानवा धन्या ये जितेन्द्रिया। इमा ज्ञानशून्या (१) अत (इस लिये) सर्वत्र अभिभवति (तिरस्कृत होती हैं)। असौ मनो जयति अत सर्वान् जयति। अमू दाता गर्व न वहति।

संस्कृत बनाओ—

जो स्त्री परिमित बोलती है वह पण्डिता है। यहही कार्य्य कुशल है जो विजयपाता है। यह स्वय सुखसहित है इस लिये अन्य सबोंको भी सुखी समझती है। यह कौन आती है? यह वह भी साध्वी है जो याचकोंको उपदेश देती है। यह बिचारी (वराका) दु खसे जीवन काटती है (कठति) इसको देखकर पापाणहृदय मनुष्य पिघल जाता है (गलति)। यद्यपि वह शूद्र है तथापि उसका सब लोग आदर करते हैं क्योंकि (यत) गुणी है। यह बहुत भूखी है इस लिये शीघ्रही (शीघ्र) गुस्सा होती है। यह नीति है इसका कौन जानता है। स्त्रियां पतिका विश्वास करती हैं। यह बात सबत्र प्रसिद्ध हो रही है।

द्वादश पाठ।

नपुसकलिंग—अकारांत।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ सब (२) हष्टि		इच्छति।	सब वस्तु	वर्षाको	चाहती है।
हष्टि	सर्वं	सिञ्चति।	वर्षा	सबको	सींचती है।
२ अपरे	हष्टि	इच्छत।	अन्य दो वस्तु	वृष्टिको	चाहती हैं।
कर्ता	अपरे	पश्यति।	कर्ता	अन्य (दो वस्तु) को	देखता है।

१—विसर्गका लोप होनेसे एकवचन और बहुवचनमें भेद नहीं रहता सो सधि क्रिया तथा विशेषणोंका पूरा २ ध्यान रखना आवश्यक है। २—जब कि किसी विशेष पदार्थका नहीं कहते तब किसी लिगका निश्चय न होनेसे (सामान्यमें) नपु सक लिगकी विभक्ती आते हैं।

३ सर्वाणि सर्वं इच्छति । सब चीजें सर्वको चाहती हैं।
कर्ता सर्वाणि पश्यति । कर्ता सब (वस्तुओं) को देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(१) सर्वं, सर्वे, सर्वाणि ।

त्रयोदश पाठ ।

तद् यद् किम् शब्द ।

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म[1]	क्रिया ।
१	तत्	तं	तुदति ।	वह (वस्तु)	उसको	पीड़ा देती है।
	स	तत्	पश्यति ।	वह	उस (वस्तु) को	देखता है।
	यत्	मन	हरति ।	जो	मनको	हरता है।
	मन	यत्	इच्छति ।	मन	जिसको	चाहता है।
	किं	कथाम्	जानाति ।	कौन (वस्तु)	कथाको	जानता है।
	वृक्ष	किं	विकिरति ।	वृक्ष	क्या	बखेरता है।
२	ते	हृदयं	लुभत ।	वे दो (वस्तु)	मनको	लुभाती हैं।
	सलिल	ते	सिचति ।	जल	उन दो (वस्तु) को	सींचता है।
	के	हृदयं	लुभत ।	कौन दो (वस्तु)	हृदयको	लुभाती हैं।
	ये	मन	हरत ।	जो दो वस्तु	मनको	हरती हैं।
३	वृक्षा	कानि	विकिरन्ति ।	वृक्ष	किन वस्तुओंको	बखेरते हैं।
	कानि	हृदय	लुभन्ति ।	कौन (वस्तुएं)	हृदयको	लुभाती हैं।
	राजा	तानि	पश्यति ।	राजा	उन (वस्तुओं) को	देखता है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

किं, के, कानि तत्, ते तानि, यत्, ये, यानि ।

१—नपुंसक लिंगमें प्रथमा (कर्ता) और द्वितीया (कर्म) विभक्तीके समान रूप होते हैं।

चतुर्दश पाठ।

इदम् शब्द।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१	इदं	मन	हरति।	यह (वस्तु)	मन	हरती है।
	राजा	इदं	इच्छति।	राजा	इस (वस्तु) को	चाहता है।
२	इमे	जल	वितरत।	ये दो (वस्तु)	जल	देते हैं।
	शिशिर	इमे	तुदति।	शिशिर (ठण्ढ) इन दो वस्तुओंको सताती है।		
३	इमानि	अग्नि	गूहति।	ये (वस्तुयें)	आगको	छिपाती है।
	अग्नि	इमानि	दहति।	आग	इन (वस्तु) को	जलाती है।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

इदं, इमे, इमानि।

पंचदश पाठ।

अदस् शब्द।

	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१	अदः	विहङ्गमान्	लुभति।	यह (वस्तु)	पक्षियों को	लुभाती है।
	भ्रमरा	अदः	पिबति।	भ्रमर	इस (मधु) को	पीते हैं।
२	अमू	पर्वत	भूषतः।	ये दो (वस्तु)	पर्वतको	भूषित करते हैं।
	अग्नि	अमू	दहति।	आग	इन दोको	जलाती है।
३	अमूनि	पृथिवीं	सिंचति।	ये	पृथिवीको	सींचते हैं।
	बालका	अमूनि	खादति।	बालक	इनको	खाते हैं।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अदः, अमू, अमूनि।

इमानि दुर्लभानि। जम्बुक नित्यादु स्नायुबंधन खादति। अय यतानि जलजन्तूनि रचति।

हिन्दी (१) वाक्यों—

इद वपुर्मोहात्मा दौरात्मा च वदति। अपराधि मानस सर्वदा आत्मान शकते। हित मनोहारि च दुर्लभ वच। अचार्यं 'ग्टइयो ग्टइ" इति वदति। मद्य यशो दुर्लभं वर्तते। भाव न सर्वं नित्य भवति। कुशलिनो जना नव मित्र' न विय भते। सर्वे विद्वासो न भवति। प्रतिक्षण यत् वस्तु नवता (नवीनपना) गच्छति तद एव रमणोय। एको धर्म एव सुहृत् य सर्वदा इम जीव अनुगच्छति। सुतप्त अपि वारि पावक शमयति (बुझाता) एव। इच्छानुकूल ऐश्वर्य कोऽपि (इस लोकमें) लभते पुमान्। स्वचेष्टि तानि एव नर गौरव अपमान वा नयति। यदो जल शुचि (पवित्र) वर्तते। स्वभावजनिता प्रकृति कोऽपि न त्यजति। यत् वार्त (बाल) वयो बोधति तत् सर्वं एव बोधति। जीवन् नरो भद्रशतानि (सैकड़ों कल्याण) पश्यति। स्त्रीस्वभावो हि मात्सर्य। स्त्रीमनो नित्य चचल भवति। पांडित्य क्षुध न शमयति। मायामय इद अखिल (सपूर्ण) विश्व (जगत्)। ससारोऽय रगभूमि (नाटक घर) जैन नाय च नर्तका। सकृत् (एकबार) नष्टं यश' प्रायो न पुनर्लभते नर।

संस्कृत बनाओ—

इस लोकमें (अत्र) जो मनुष्य धनवाला है वहही पंडित शास्त्र ज्ञाता, गुणज्ञ, वक्ता, दर्शनीय है क्योंकि (यत) सब गुण धनका आश्रयण करते हैं। यह संपूर्ण जगत् दु:खमय है। यहां कोई

१—इंकारार्थं—जहां पहिलेही रक्खा जाय और कम तथा क्रिया बादको ही रक्खी जावे ऐसा कोई नियम नहीं है चाहे जहां रख सकते हैं इस लिये हिंदी व्याकरणके अनुसार विद्यार्थियोंको अर्थ समझ २ कर शुद्ध भाषा लिखनी चाहिये।

भी सुख नहीं पाता। आप (भवान्) कहां जाते हैं। यह किसी वृक्षपर चढ़ती है (या रुह)। भ्रमर बार२ फूलपर बैठता है। यह बड़ा परिश्रमी है। यह पुस्तक सुन्दर है। यह एक टुकड़ा है। जो परदूषणको नहीं कहता है संतोष धारता है अपनी प्रशंसा नहीं करता नीतिको नहीं छोडता अपराधको क्षमा करता है वह सज्जन है। जो मूढ़ इस दुष्प्राप्य नरजन्मको पाकर (लब्ध्वा) धर्मका आचरण नहीं करता है वह दुर्लभ चिंतामणि रत्नका पाकर छोड़ देता है। जो धर्मको छोडकर इधर उधर इन्द्रिय सुखके लिये (इन्द्रियसुखाय) दौडते हैं वे कल्पवृक्षको उखाड़ कर (उन्मूल्य) धत्तूर तरुको बोते हैं। यदि मनुष्य धर्म नहीं करता है तो यह जीवन निष्फल है। मगधनामका बडाभारी देश है। वह (तत्र) पुष्पपुरी नगरीको जाती है। यह कौन लडका है और क्यों दीन है। वह राजपुत्र इस समय तरुणावस्थाका अनुभव करता है। वह वृद्धा क्यों रोती है। वे लोग ईश्वरका ध्यान करते हैं। वे माता पिता प्रशंसाके योग्य हैं, जो अपने पुत्रोंको पढाते हैं। वह मुझे धर्मका उपदेश देती है। यह बात राजाने सुनी (श्रुतवान्)। मैंने भी यह काम किया है। परीक्षा बडी भयंकर चीज है। सब लोग इससे (भत) डरते हैं। यह लडका बडा उद्दंड है।



धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रुह	चढना	(रोह+आ+मि)	रोहामि,	रोहाव,	रोहाम।
तुट	टूटना	(तुट्+आ+मि)	तुटामि,	तुटाव,	तुटाम।
सृजी	बनाना	(सृज+आ+मि)	सृजामि,	सृजाव,	सृजाम।
मृश	विचारना	(मृश्+आ+मि)	मृशामि,	मृशाव,	मृशाम।
ग्रस	चाबना	(ग्रस्+आ+मि)	ग्रसामि,	ग्रसाव,	ग्रसाम।
जिघि	सूंघना	(जिघ्+आ+मि)	जिघामि,	जिघाव,	जिंघाम।
तक	हसना	(तक्+आ+मि)	तकामि,	तकाव,	तकाम।
गुजि	गूंजना	(गुज्+आ+मि)	गुंजामि,	गुंजाव,	गुंजाम।
रट	रटना	(रट्+आ+मि)	रटामि,	रटाव	रटाम।
नट	नाचना	(नट्+आ+मि)	नटामि,	नटाव	नटाम।
लुठि	आलस्यकरना	(लुठ+आ+मि)	लुंठामि,	लुंठाव	लुंठाम।
मडि	भूषित करना	(मड्+आ+मि)	मडामि,	मडाव	मडाम।
मुडि	मूंडना	(मुड्+आ+मि)	मुंडामि,	मुंडाव	मुंडाम।
लुटि	लूटना	(लुट्+आ+मि)	लुटामि,	लुटाव,	लुटाम।
जप	जपना	(जप्+आ+मि)	जपामि,	जपाव,	जपाम।
पच	पक्काहोना	(पच्+आ+मि)	पचामि	पचाव,	पचाम।
यभी	मैथुनकरना	(यभ्+आ+मि)	यभामि,	यभाव,	यभाम।
धण	धनशब्दकरना	(धण्+आ+मि)	धणामि,	धणाव,	धणाम।
रण	,,	(रण्+आ+मि)	रणामि,	रणाव,	रणाम।
क्षण	,,	(क्षण्+आ+मि)	क्षणामि,	क्षणाव,	क्षणाम।
कण	,,	(कण्+आ+मि)	कणामि,	कणाव,	कणाम।
कील	बांधना	(कील्+आ+मि)	कीलामि,	कीलाव,	कीलाम।
मील	पलकमारना	(मील्+आ+मि)	मीलामि,	मीलाव,	मीलाम।
फल	फलना	(फल्+आ+मि)	फलामि,	फलाव,	फलाम।
स्खल	विचलितहोना	(स्खल्+आ+मि)	स्खलामि,	स्खलाव,	स्खलाम।

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एक०	द्वि०	बहु०
ग्लसु	निगलना खाना	(ग्लस्+आ+मि)	ग्लसामि,	ग्लसाव ,	ग्लसाम ।
चर्व	चबाना	(चर्व्+आ+मि)	चर्वामि,	चर्वाव ,	चर्वाम ।
लगे	लगना।आसक्तहोना	(लग्+आ+मि)	लगामि,	लगाव,	लगाम ।
श्रण	देना	(श्रण्+आ+मि)	श्रणामि,	श्रणाव ,	श्रणाम ।
स्वन	शब्दकरना	(स्वन्+आ+मि)	स्वनामि,	स्वनाव ,	स्वनाम ।
वमु	उगलना।वमनकरना	(वम्+आ+मि)	वमामि,	वमाव ,	वमाम ।
षद्लृ	दुःखपाना	(सीद्+आ+मि)	सीदामि,	सीदाव ,	सीदाम ।
बुधञ्	जागना	(बोध्+आ+मि)	बोधामि,	बोधाव ,	बोधाम ।
चिती	विचारना।चीह्नना	(चेत्+आ+मि)	चेतामि	चेताव ,	चेताम ।
श्च्युतिर्	चूना, झरना	(श्च्योत्+आ+मि)	श्च्योतामि,	श्च्योताव ,	श्च्योताम
इदि	महाऐश्वर्यकोपाना	(इन्द्+आ+मि)	इन्दामि,	इन्दाव ,	इंदाम ।
वल्ग	कूदना	(वल्ग्+आ+मि)	वल्गामि,	वल्गाव ,	वल्गाम ।
अक्षू	व्याप्तकरना	(अक्ष+आ+मि)	अक्षामि,	अक्षाव ,	अक्षाम.।
मूष	चोरी करना	(मूष्+आ+मि)	मूषामि,	मूषाव ,	मूषाम ।
घृषु	संघर्षणकरना	(घर्ष्+आ+मि)	घर्षामि,	घर्षाव ,	घर्षाम ।
कृषौ	जोतना	(कर्ष्+आ+मि)	कर्षामि,	कर्षाव ,	कर्षाम ।
भ्रम	कूदकरचलना	(भ्रम्+आ+मि)	भ्रमामि,	भ्रमाव ,	भ्रमाम ।
गुफ	गूथना	(गुफ्+आ+मि)	गुफामि,	गुफाव ,	गुफाम ।
ब्रुड	डूबना	(ब्रुड्+आ+मि)	ब्रुडामि,	ब्रुडाव ,	ब्रुडाम ।
सृप	रेंगना	(सर्प्+आ+मि)	सर्पामि,	सर्पाव ,	सर्पाम ।
ह्वेञ्	बुलाना	(ह्वय्+आ+मि)	ह्वयामि,	ह्वयाव ,	ह्वयाम ।

धातु		प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रुह	चढना	(रोह्+आ+मि)	रोहामि,	रोहाव,	रोहाम।
त्रुट	टूटना	(त्रुट्+आ+मि)	त्रुटामि,	त्रुटाव,	त्रुटाम।
सृजौ	बनाना	(सृज्+आ+मि)	सृजामि,	सृजाव,	सृजाम।
मृश	विचारना	(मृश्+आ+मि)	मृशामि,	मृशाव,	मृशाम।
ग्रस	चाहना	(ग्रस्+आ+मि)	ग्रसामि,	ग्रसाव,	ग्रसाम।
शिघि	सूघना	(शिघ+आ+मि)	शिघामि,	शिघाव,	शिघाम।
तक	हंसना	(तक्+आ+मि)	तकामि,	तकाव,	तकाम।
गुजि	गूंजना	(गुंज्+आ+मि)	गुंजामि,	गुंजाव,	गुंजाम।
रट	रटना	(रट्+आ+मि)	रटामि,	रटाव	रटाम।
नट	नाचना	(नट्+आ+मि)	नटामि,	नटाव	नटाम।
लुठि	आलस्यकरना	(लुंठ+आ+मि)	लुंठामि,	लुंठाव	लुंठाम।
मडि	भूषित करना	(मंड्+आ+मि)	मंडामि,	मंडाव	मंडाम।
मुडि	मूंडना	(मुंड्+आ+मि)	मुंडामि,	मुंडाव	मुंडाम।
लुटि	लूटना	(लुंट्+आ+मि)	लुंटामि,	लुंटाव,	लुंटाम।
जप	जपना	(जप्+आ+मि)	जपामि,	जपाव,	जपाम।
पच	पक्काहोना	(पच्+आ+मि)	पचामि,	पचाव,	पचाम।
यभी	स्त्रीसंगकरना	(यभ्+आ+मि)	यभामि,	यभाव,	यभाम।
अण	अव्यक्तशब्दकरना	(अण्+आ+मि)	अणामि,	अणाव,	अणाम।
रण	,,	(रण्+आ+मि)	रणामि,	रणाव,	रणाम।
क्षण	,,	(क्षण्+आ+मि)	क्षणामि,	क्षणाव,	क्षणाम।
कण	,,	(कण्+आ+मि)	कणामि,	कणाव,	कणाम।
कील	बांधना	(कील्+आ+मि)	कीलामि,	कीलाव,	कीलाम।
मील	पलकमारना	(मील्+आ+मि)	मीलामि,	मीलाव,	मीलाम।
फल	फलना	(फल्+आ+मि)	फलामि,	फलाव,	फलाम।
स्खल	विचलितहोना	(स्खल्+आ+मि)	स्खलामि,	स्खलाव,	स्खलाम।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

लुटे, लज्जावहे, ईहामहे, ग्रसामहे, मानावहे, सेवामहे, क्षये, यतावहे, भाषे, ईजावहे, गाहामहे, वपामहे, याचे, भजामहे, लु पावहे, कत्थामहे।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गाधृ	पानेकीइच्छाकरना	(गाध् + अ + ए[1])	गाधे,	गाधावहे,	गाधामहे।
बाधृङ्	रोकना, दु:ख देना	(बाध्+अ+ए)	बाधे,	बाधावहे,	बाधामहे।
नाथृङ्	मांगना	(नाथ्+अ+ए)	नाथे,	नाथावहे,	नाथामहे।
दधे	धारणकरना	(दध्+अ+ए)	दधे,	दधावहे,	दधामहे।
वदिङ्	स्तुति,नमस्कारकरना	(वद्+अ+ए)	वदे,	वदावहे,	वदामहे।
खदिङ्	हिलना	(खद्+अ+ए)	खदे,	खदावहे,	खदामहे।
ददे	देना	(दद्+अ+ए)	ददे,	ददावहे,	ददामहे।
ह्लादीङ्	सुखीहोना	(ह्लाद्+अ+ए)	ह्लादे	ह्लादावहे,	ह्लादामहे।
यतीङ्	यत्नकरना	(यत्+अ+ए)	यते,	यतावहे,	यतामहे।
श्रथिङ्	शिथिल होना	(श्रथ्+अ+ए)	श्रथे,	श्रथावहे,	श्रथामहे।
लघिङ्	लांघना	(लघ्+अ+ए)	लघे,	लघावहे,	लघामहे।
चेष्टे	चेष्टाकरना	(चेष्ट+अ+ए)	चेष्टे,	चेष्टावहे,	चेष्टामहे।
चडिङ्	क्रोधकरना	(चड्+अ+ए)	चडे,	चडावहे,	चडामहे।
गुपोङ्	छिपाना	(गोप्+अ+ए)	गोपे,	गोपावहे,	गोपामहे।
टुवेपृङ्	कांपना	(वेप्+अ+ए)	वेपे,	वेपावहे,	वेपामहे।
कपिङ्	कांपना	(कप्+अ+ए)	कपे,	कपावहे,	कपामहे।

१—एकवचनमें धातुसे 'अ+ए, द्विवचनमें 'आ+वहे, और बहुवचनमें आ+महे, प्रत्यय समझना चाहिये।

द्वितीय पाठ।

अस्मद्शब्द—आत्मनेपदी धातु।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	अहं	सरयू	ईक्षे (१)	मैं	सरयूको	देखता हूं।
	अहं	बुद्धिमतः	श्लाघे।	मैं	बुद्धिमानोंकी	प्रशंसा करता हूं।
	अहं	भृत्यान्	गर्हे।	मैं	नौकरोंकी	निन्दा करता हूं।
२	आवां	अन्नं	भक्षावहे।	हम दो जने	अन्नको	खाते हैं।
	आवां	अध्यापकं	मानावहे।	हम दो जने	अध्यापकको	मानते हैं।
	आवां	पुस्तकानि	मयावहे।	हम दो जने	पुस्तकोंको	चाहते हैं।
	आवां	मृत्युं	शङ्कावहे।	हम दोनों	मृत्युकी	शंका करते हैं।
३	वयं	अन्नं	भक्षामहे।	हम सब	अन्नको	खाते हैं।
	वयं	वीरान्	श्लाघामहे।	हम	वीरोंकी	प्रशंसा करते हैं।
	वयं	सत्यवादिनं	विश्रंभामहे।	हम	सत्यवादीका	विश्वास करते हैं।
	वयं	तान्	स्वजामहे।	हम	उनको	आलिंगन करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
अहं	सरयू	ईक्षामि।	अहं	सरयू	ईक्षे।
अहं	भिक्षुं	आद्रियते।	अहं	भिक्षुं	आद्रिये।
अहं	औषधं	खादावहे।	अहं	औषधं	खादे।
आवां		भिक्षाव।	आवां		भिक्षावहे।
आवां		वेपे।	आवां		वेपावहे।
वयं	खाद्यं	भक्षाम।	वयं	खाद्यं	भक्षामहे।
वयं		दीक्षाम।	वयं		दीक्षामहे।

१—धातुओंमें लिखे गये प्रत्यय 'अ+ते अ+एते अ+न्ते' के स्थानमें क्रमसे 'अ+ए आ+वहे आ+महे' समझना चाहिये। अतः ईक्ष+अ+ते आदिके स्थानमें 'ईक्ष्+अ+ए आदि करनेसे ईक्षे, ईक्षावहे ईक्षामहे रूप होते हैं।

निम्न लिखित शब्दोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

तुदे, स्वजावहे, ईहामहे, ग्रसामहे, मानावहे, सेवावहे, क्षये, यतावहे, भाषे, ईजावहे, गाहामहे, वपामहे, याचे, भजामहे, लुपावहे, कत्थामहे ।

धात्वर्थ

धातु	अर्थ	प्रत्यय	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गाधृ	पानेकी इच्छा करना	(गाध् + अ + ए[1])	गाधे,	गाधावहे,	गाधामहे ।
बाधृङ्	रोकना, दुःख देना	(बाध + अ + ए)	बाधे,	बाधावहे,	बाधामहे ।
नाथृङ्	मांगना	(नाथ + अ + ए)	नाथे,	नाथावहे,	नाथामहे ।
दधे	धारण करना	(दध् + अ + ए)	दधे,	दधावहे,	दधामहे ।
वदिङ्	स्तुति, नमस्कार करना	(वद् + अ + ए)	वदे,	वदावहे,	वदामहे ।
स्पदिङ्	हिलना	(स्पद् + अ + ए)	स्पदे,	स्पदावहे,	स्पदामहे ।
ददे	देना	(दद् + अ + ए)	ददे,	ददावहे,	ददामहे ।
ह्लादीङ्	सुखी होना	(ह्लाद् + अ + ए)	ह्लादे	ह्लादावहे,	ह्लादामहे ।
यतीङ्	यत्न करना	(यत् + अ + ए)	यते	यतावहे,	यतामहे ।
श्रथिङ्	शिथिल होना	(श्रथ् + अ + ए)	श्रथे,	श्रथावहे,	श्रथामहे ।
लघिङ्	लांघना	(लघ + अ + ए)	लघे,	लघावहे	लघामहे ।
चेष्ट	चेष्टाकरना	(चेष्ट + अ + ए)	चेष्टे,	चेष्टावहे,	चेष्टामहे ।
चडिङ्	क्रोधकरना	(चंड् + अ + ए)	चडे,	चडावहे,	चडामहे ।
गुपीङ्	छिपाना	(गोप् + अ + ए)	गोपे,	गोपावहे,	गोपामहे ।
टुवेपृङ्	कांपना	(वेप् + अ + ए)	वेपे,	वेपावहे,	वेपामहे ।
कपिङ्	कांपना	(कप् + अ + ए)	कपे,	कपावहे	कपामहे ।

१—एकवचनमें धातुसे 'अ+ए' द्विवचनमें 'आ+वहे' और बहुवचनमें आ+महे, प्रत्यय समझना चाहिये ।

धातु	अर्थ	प्रकृति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन।
त्रपूँष्	लज्जाकरना	(त्रप्+अ+ए)	त्रपे	त्रपावहे,	त्रपामहे।
डुलभिष्	कमाई लेना	(लभ्+अ+ए)	लभे,	लभावहे,	लभामहे।
पणे	व्यापारकरना	(पण्+अ+ए)	पणे,	पणावहे,	पणामहे।
घूर्णँ	घूमना	(घूर्ण्+अ+ए)	घूर्णे	घूर्णावहे,	घूर्णामहे।
दये	दयाकरना	(दय+अ+ए)	दये,	दयावहे,	दयामहे।
स्फायीङ्	बढ़ना	(स्फाय्+अ+ए)	स्फाये,	स्फायावहे,	स्फायामहे।
षिवुङ्	सेवाकरना	(सेव्+अ+ए)	सेवे,	सेवावहे,	सेवामहे।
भ्यसँ	भयकरना	(भ्यस+अ+ए)	भ्यसे,	भ्यसावहे,	भ्यसामहे।
ऊहँ	वितर्ककरना	(ऊह+अ+ए)	ऊहे	ऊहावहे,	ऊहामहे।
त्रैङ्	रक्षाकरना	(त्राय्+अ+ए)	त्राये	त्रायावहे	त्रायामहे
काशृङ्	दीप्तहोना	(काश्+अ+ए)	काशे,	काशावहे	काशामहे।

संस्कृत बनाओ—

मैं गांवको जाता हूं। मैं जगत्पूज्य श्रीजिनेंद्र भगवान्को नमस्कार करता हूं। हम दो जने कांपते हैं। मैं धर्म धारण करता हूं। हमलोग वीतराग मुनियोंकी स्तुति करते हैं। मैं दुष्टजीवोंको बाधा देता हूं। मैं स्त्री हूं (बहू) इसलिये लज्जा करती हूं। हम लोग डरते हैं इसलिये पाप नहीं करते। मैं एक समाचार कहता हूं। हम दोनों इस बातको जानते हैं। हम दोनों कमाई लेते हैं। इसको अभी (अधुना एव) जांचता हूं। हम लोग पढ़ते हैं इसलिये सुखी होते हैं। हम लोग तर्क वितर्क करते हैं।

हिंदी बनाओ—

वयं इमां वेदनां कथं (कैसे) सहामहे। अहं अत्र वसामि। प्रातः (सवेरे) शीतपीडिता वयं कम्पामहे। आर्या जीवान् दयावहे। वयं आपदं लभामहे। अहं गतं (व्यतीत) न शोचामि, ज्ञातं न मन्ये, इदम् न जल्पामि। वयं सुमयोऽतो न चलामहे।

नटौ आवां नटाव । ध्यानिनो वयं जिनं जपामः । अहं पुष्पाणि जिघ्रामि । वयं सीदामः ।

तृतीय पाठ ।

उत्तमपुरुष (अस्मद्) के साथ पुल्लिंग विशेषणका (१) प्रयोग ।

१ पण्डितः अहं सत्यं वदामि—पण्डित मैं सत्य बोलता हूं ।
तृष्णार्त्तः अहं तृप्तिं न लभे—तृष्णासे पीड़ित मैं तृप्तिको नहीं पाता हूं ।
जैनः अहं जीवान् न प्रहामि—जैन मैं जीवोंको नहीं मारता हूं ।
क्रुद्धः अहं शिशून् तर्जामि—क्रुद्ध हुआ मैं बच्चोंको ताड़ना देता हूं ।
सेवकः अहं स्वामिनं सेवे—सेवक मैं स्वामीकी सेवा करता हूं ।
सभ्याः सभ्यं मां श्लाघन्ते—सभ्य लोग मुझ सभ्यकी प्रशंसा करते हैं ।
शिष्यः गुरुं मां मानते—शिष्य मुझ गुरुका सन्मान करता है ।
क्रूराः धर्मज्ञं मां रिपन्ति—क्रूर लोग मुझ धर्मज्ञ पर क्रोध करते हैं ।
२ छात्रौ आवां संस्कृतं शिक्षावहे—विद्यार्थी हम दो जने संस्कृत पढ़ते हैं ।
विनीतौ आवां न विवदावहे—नम्र हम दो जने विवाद नहीं करते हैं ।
भक्तौ आवां गुरून् नमाव—भक्त हम दो जने गुरुओंको पूजते हैं ।
धर्मज्ञौ आवां धर्मं दिशाव—धर्मको जानने वाले हम दो जन धर्मका उपदेश देते हैं ।
जनाः विपश्चितौ आवां निन्दन्ति—लोग विपश्ची हम दो जनोंकी निंदा करते हैं ।
वृद्धाः नम्रौ आवां कत्थन्ते—वृद्ध लोग नम्र हम दोकी प्रशंसा करते हैं ।

१—पहिले बताया जा चुका है कि अस्मद् और युष्मद् शब्दके रूप तीनों लिंगोंमें समान होते हैं इसलिये विशेषणका लिंग बतानेके अनुसार रखना चाहिये अर्थात् अस्मद् या युष्मद् जिस वस्तुके लिये प्रयोगमें आये गये हैं उसका जो लिंग हो वह ही विशेषणका रखना चाहिये । २—वि" पूर्वक 'वद' धातुका अर्थ विवाद करना होता है और धातु आत्मने पदी हो

पिता सह द्वौ आवां तर्जति—पिता सह व हम दोनोंको ताड़ना देता है।

२ शिष्टा वयं महान् मानयामहे—शिष्ट हम लोग बड़ोंका सम्मान करते हैं।

पापभीरवः वयं दानं ददामहे—पापसे डरने वाले हम लोग दान देते हैं।

अपथ्यभोजका वयं ज्वरामः—अपथ्य खानेवाले हम लोग ज्वरसे पीड़ित होते हैं।

वैद्या रुग्णान् अस्मान् तर्जंति—वैद्य लोग रोगी हम लोगोंको डांटते हैं।

दुष्टा धार्मिकान् अस्मान् अर्दंति—दुष्ट लोग धार्मिक हम लोगोंको दुःख देते हैं।

मुनयः श्रावकान् अस्मान् उपदिशंति—मुनि लोग श्रावक हम लोगोंको उपदेश देते हैं।

चतुर्थ पाठ।

उत्तमपुरुष (अस्मद्) के साथ स्त्रीलिंग विशेषणका प्रयोग।

१ साध्वी अहं जिनं जपामि—साध्वी मैं जिन भगवान्‌को जपती हूं।

मन्दबुद्धिः अहं सूत्राणि रटामि—मन्द बुद्धिवाली मैं सूत्रोंको घोखती हूं।

विदुषी अहं शास्त्रविरुद्धं वाक्यं न भणामि—विदुषी मैं शास्त्रसे विरुद्ध नहीं कहती हूं।

पापिनी अहं सीदामि—पापिनी मैं दुःख पाती हूं।

शूद्रा ब्राह्मणीं मां स्पृशति—शूद्र स्त्री मुझ ब्राह्मणीको छूती है।

सर्वे पारिव्राजिकां मां कत्थते—सब लोग मुझ संन्यासिनीको नमस्कार करते हैं।

शिष्या पाठिकां मां वंदते—शिष्या मुझ पढ़ाने वालीको वंदना करती है।

२ प्रसन्ने आवां नृत्यावः—प्रसन्न हम दोनों नाचती हैं।

पंडिते आवां प्रथावहे—पंडित हम दो प्रसिद्ध होती हैं।

बुभुक्षिते आवां स्वादु अन्नं ग्रसावहे—भूखी हम दो जनी स्वादिष्ट अन्नको खाती हैं।

ज्ञानिन्यौ आवां संस्कृतं बोधावः—ज्ञानवाली हम दोनों संस्कृत जानती हैं।

दयालव दीने आवां दयते—दयालु लोग हम दो दीनाओं पर दया करते हैं।
दुर्जना सत्यौ आवां बाधते—दुर्जन लोग हम दो सतीयोंको दुःख देते हैं।
सेवका. दयावत्यौ आवां श्रयन्ते—सेवक लोग दयावाली हम दोका आश्रय लेते हैं।

१ निराश्रया वयं सीदाम—आश्रय हीन हम सब दुःख पाती हैं।
हृष्टा वयं वल्गाम—हर्षित हम सब कूदती हैं।
भक्ता वयं माला गुम्फाम—भक्त हम सब मालाओंको गूथती हैं।
नार्यो वयं त्रपामहे—स्त्रियां हम सब लज्जा करती हैं।
श्राविका आर्यिका अस्मान् अर्चति—श्राविकायें हम आर्यिकाओंको पूजती हैं।
परिचारिका स्वामिनी अस्मान् सेवते—दासियां हम स्वामिनियोंकी सेवा करती हैं।
निर्दया अपि वराकी. अस्मान् दयते—दया रहित लोग भी हम दीनाओं पर दया करते हैं।

पंचमपाठ ।

(मध्यम पुरुष)

युष्मद् शब्द (परस्मैपदी धातु)—(१)

	कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१	त्वं	पुष्पाणि	जिघ्रसि ।	तुम	फूलोंको	सूंघते हो ।
	त्वं	पुस्तकानि	मुष्णसि ।	तुम	किताबोंको	चुराते हो ।

१—पहिले बतला आये हैं कि युष्मद् शब्दके साथ मध्यम पुरुष क्रियाके रूप वाक्यमें रक्खे जाते हैं । प्रथम अध्यायके धात्वर्थ के 'प्रत्यय' में जो प्रत्यय बतलाये हैं उन (अ+ति, अ+त अ+अन्ति) के स्थानमें मध्यमपुरुषके रूप बनानेके लिये 'अ+सि अ+थ अ+थ' कर देना चाहिये। जैसे—व्रज (जाना) धातुके प्रथम पुरुषके रूप व्रज+अ+ति व्रजति आदि होते हैं तो मध्यम पुरुषमें उन 'अ+ति आदि प्रत्ययोंके स्थानमें अ+सि आदि कर देनेसे व्रजसि, व्रजथ, व्रजथ रूप होते हैं।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
त्वं	सर्पान्	कोपयसि।	तुम	सर्पों को	कोपाते हो।
जना	त्वां	चेतति।	लोग	तुमको	याद करते हैं।
छात्रा	त्वां	नमति।	विद्यार्थी लोग	तुमको	नमस्कार करते हैं।
२ युवां	चणकान्	चर्वथ।	तुम दो जन	चनों को	चबाते हो।
युवां	शाकं	पचथ।	तुम दो जने	शाक को	पकाते हो।
युवां		वमथ।	तुम दो जने	वमन	करते हो।
जना	युवां	आह्वयन्ते।	लोग	तुम दोनों को	बुलाते हैं।
दीना	युवां	याचन्ते।	दीन लोग	तुम दोनों से	याचना करते हैं।
३ यूयं	कदली	खादथ।	तुम लोग	केलों को	खाते हो।
यूयं		पिबथ।	तुम लोग	दूध को	पीते हो।
यूयं		धावथ।	तुम लोग		दौड़ते हो।
यूयं		मोदथ।	तुम लोग		आनन्द मनाते हो।
सर्वे	युष्मान्	बोधन्ति।	सब लोग	तुमको	जानते हैं।
के	युष्मान्	निन्दन्ति।	कौन लोग	तुम्हारी	निन्दा करते हैं।

अशुद्ध			शुद्ध		
त्वं	मातरं	चेतथ।	त्वं	मातरं	चेतसि।
युवां	क्षेत्रं	कर्षथ।	युवां	क्षेत्रं	कर्षथ।
यूयं	अश्वं	आरोहसि।	यूयं	अश्वं	आरोहथ।
त्वं		खेलामि।	त्वं		खेलसि।
युवां	ग्रन्थान्	स्पृशाथ।	युवां	ग्रन्थान्	स्पृशथ।
यूयं	घटान्	सृजाम।	यूयं	घटान्	सृजथ।
त्वं	शिरांसि	मुण्डति।	त्वं	शिरांसि	मुण्डसि।
युवां	ग्रामं	सेधथ।	युवां	ग्रामं	सेधथ।
यूयं		भवति।	यूयं		भवथ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

(क) मोदथ बोधसि, पचथ , वल्गसि, त्यजसि, लिखथः खादसि पृच्छथ, वहसि, त्यजसि, मुचथ , इच्छथ दशसि क्रन्दथ, पठथ , मुञ्चसि ।

(ख) त्वं युवां, यूयं, त्वां युवा, युष्मान् ।

हिंदी बनाओ—

यदि त्वं जलं न मुञ्चसि तर्हि (तो) वत्स किं पिपसि। त्वं एव गर्वितो भवसि यत् (जो) छात्रान् अपि क्रामसि। त्वं मां किमथं पृच्छसि अहं किमपि न बोधामि। युवां किं प्रष्टुं (पूछनेके लिये) इच्छथ ?। एकाकिनीं मां मुक्त्वा कुत्र त्वं व्रजसि। हा! नवपल्लव-निर्मिता शय्या अपि त्वां दहति। यूयं किमर्थं अत्र आगच्छथ। त्वं कामपि विद्यां बोधसि किं ?। अहं त्वां वदामि। कापुरुषा एव व्यथते न धीरा। हा! निर्दयस्त्वं मां किं प्रहरसि। गात्राणि अमूनि न वहति सचेतनत्वं, श्रोत्रं (कान) स्फुटाक्षरपदां (स्पष्ट अक्षर और पदवाली) न गिरं शृणोति (सुनता है)। अथ निमो-लितमिदं सहसा (अचानक) एव चक्षुरिति (इस तरह) असौ असव (प्राण) मां त्यजति। त्वं चतुरम्मीक्ष्य (चदकार) कां स्तिरं चेतसि। त्वं दयालोऽपि इमं जनं कथं (क्यों) न रक्षसि। तद् (इसलिये) अहं गृहं गत्वा (जाकर) गृहिणीमाहूय (बुला कर) समीतकमनुतिष्ठामि(१)। इदं गृहं प्रविशामि। त्वं किमकारण क्रन्दसि ?। तत् मलयपर्वतमेव आवां गच्छाव। यूयं किं अनुतिष्ठथ। युवां पुनः पुनः तद् एव वदथ। यूयं कथं न धनं श्रयथ। वयं किं अनुतिष्ठाम क्व (कहां) व्रजाम सर्वं इदं जगत् शून्यं इव (तरह) लगति। यदि यूयं कमपि उपायं बोधथ तर्हि

१—अनु स्था (तिष्ठ) धातुका अर्थ 'करना' होता है।

किं न मां उपदिशथ। हा मंदभाग्योऽहं एवं म्रिये। युवां किं पठथ। यूयं तथा एव दीनान् जन्तून् कोपयथ। भारस्तथा मां न बाधते यथा 'बाधति' बाधते।

अनुवाद बनाओ—

तुम दुःखसे जीवन बिताते हो। क्यों बार बार पीछे मोड़ते हो। सांप तुमको काटता है। तुम दोनों भक्तोंको जानते हो। तुम लोग धर्मको करते हो। तुम क्या सीखते हो। क्या तुम दूध पीते हो। हमें पानी भी नहीं मिलता है। तुमको कौन रोकता है। तुम दोनों हमका विश्वास करते हो। हम सबका विश्वास नहीं करते हैं। तुम आलस्य करते हो। मैं प्रतिदिन (प्रतिदिन) एक पत्र लिखता हूं। तुम लोग पंचमंत्रको जपते हो यह जान कर (बुद्ध्वा) मैं मलिन होता हूं। तुम क्या काम करते हो। हम जैनेंद्र पढते हैं। तुम लोग दुःख पाते हो। क्या तुम लोग नट हो जो (यत्) नाचते हो। तुम लोग क्यों कूदते हो।

षष्ठ पाठ।

युष्मद् (शब्द) आत्मनेपदी(१) धातु।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ त्वं		वेपसे।	तुम		कांपते हो।
त्वं		त्रपसे।	तुम		लज्जित होते हो।
त्वं		भ्यससे।	तुम		डरते हो।

१—आत्मनेपदी धातुओंके मध्यमपुरुषके रूप बनानेके लिये धात्वर्थमें दिये हुये प्रत्यय 'अ+ते अ+एते अ+न्ते' के स्थानमें क्रमसे अ+से अ+एथे अ+ध्वे कर देना चाहिये जैसे—वेप+अ+ते आदिके स्थानमें 'वेप+अ+से' आदि करनेसे वेपसे वेपेथे वेपध्वे बनते हैं।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
जना	त्वां	वन्दते।	लोग	तुम्हारी	वंदना करते हैं।
राजा	त्वां	त्रायते।	राजा	तुम्हारी	रक्षा करता है।
सेवक	त्वां	सेवते।	नौकर	तुम्हारी	सेवा करता है।
२ युवां		चण्डेथे।	तुम दो जने		क्रोध करते हो।
युवां		कम्पेथे।	तुम दो जने		कांपते हो।
युवां		श्लथेथे।	तुम दो जने		शिथिल होते हो।
ते	युवां	दयन्ते।	वे लोग	तुमपर	दया करते हैं।
सिंह	युवां	घूर्णते।	सिंह	तुम्हारी तरफ	घूमता है।
३ यूयं		ह्लादध्वे।	तुम लोग		प्रसन्न होते हो।
यूयं	धन	दधध्वे।	तुम लोग	धनको	रखते हो।
यूयं	विपद	लघध्वे।	तुम लोग	विपत्तियोंको	लांघते हो।
यूयं		ऊहध्वे।	तुम लोग		तर्कवितर्क करते हो।
छात्रा	युष्मान्	श्लाघते।	छात्र लोग	तुम्हारी	प्रशंसा करते हैं।

अशुद्ध।			शुद्ध।		
त्वं	वृथा	चेष्टे।	त्वं	वृथा	चेष्टसे।
त्वं	आत्मानं	श्लाघते।	त्वं	आत्मानं	श्लाघसे।
त्वं		वेपसि।	त्वं		वेपसे।
युवां	दीनान्	त्रायावहे।	युवां	दीनान्	त्रायेथे।
युवां		प्रथेते।	युवां		प्रथेथे।
युवां	दुर्जनान्	गर्हथ।	युवां	दुर्जनान्	गर्हेथे।
यूयं	अपराधिनं	तिजामहे।	यूयं	अपराधिनं	तिजध्वे।
यूयं		दीधते।	यूयं		दीधध्वे।
यूयं		ईहथ।	यूयं		ईहध्वे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ईक्षध्वे, ईक्षसे, एधेथे, काचसे, शोभसे, गाहध्वे, द्योतेथे, मानध्वे,

रोचसे, वन्दध्वे, व्ययसे, शोभध्वे, भजेथे, म्रियध्वे, उद्विजसे, मज्जध्वे ।

हिन्दी वाक्य—(क्रिया आत्मनेपदी हो)

तुम लोग कौनसी नदी देखते हो। तुम दोनों मल्लोंकी निंदा करते हो। तुम लोग किसवास्ते (किमर्थं) क्षोभित होते हो। तुम दोनों कौनसे शास्त्रको सीखते हो। तुम साधुओंकी पूजा करते हो। क्यों वृथा पीडित होते हो। क्या शंका करते हो। तुम चन्द्रके समान शोभते हो। तुम किससे विवाह करते हो। क्यों मुस्कराते हो। तुम लोग क्यों विश्वास नहीं करते। लड़कोंका तुम दोनों आदर करते हो। क्या औषधि चाहते हो ?

सप्तम पाठ।

युष्मद् शब्दके साथ विशेषणका प्रयोग।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१ पंडित त्वं सत्यं वदसि।	साध्वी त्वं जिनं जपसि।
दुःखार्त त्वं तृप्तिं न लभसे।	मन्दबुद्धि त्वं सूत्राणि रटसि।
क्षेम त्वं ग्रामान् न गच्छसि।	विदुषी त्वं शास्त्रविरुद्धं न भणसि।
क्रुद्ध त्वं शिशून् तर्जसि।	पापिनी त्वं शोचसि।
सेवक त्वं स्वामिनं सेवसे।	शूद्रा ब्राह्मणीं त्वां स्पृशति।
सभ्या सभ्य त्वां श्लाघते।	सर्वे संन्यासिनो त्वां कत्थन्ते।
शिष्य गुरु त्वां मानते।	शिष्या पाठिका त्वां वन्दते।
क्रूरा धर्मज्ञ त्वां क्षिपति।	क्रूरा धर्मज्ञा त्वां क्षिपति।
२ छात्रौ युवां संस्कृतं शिक्षेथे।	प्रसन्ने युवां ___ तरथ।
विनीतौ युवां [illegible] विवदेथे।	पण्डिते यु
भक्तौ युवां गुरून् भजथ।	बुभुक्षि
धर्मज्ञौ युवां धर्मं दिशथ।	

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
जना विषयिणो युवां निंदन्ति ।	दयालवः दीनौ युवां दयते ।
वृद्धा मन्दौ युवां कत्थन्ते ।	दुर्जना सत्यौ युवां बाधते ।
पिता उद्दण्डौ युवां तर्जति ।	सेवका दयावत्यौ युवां सेवते ।
१ शिष्टा यूयं वृद्धान् मानध्वे ।	निराश्रया यूयं खोदथ ।
पापभीरव यूयं दानं ददध्वे ।	वृद्धा यूयं वल्गथ ।
अपथ्यभोजका यूयं ज्वरथ ।	भक्ता यूयं मालां गुम्फथ ।
वैद्या रुग्णान् युष्मान् तर्जन्ति ।	नार्यः यूयं त्रपध्वे ।
दुष्टा धार्मिकान् युष्मान् अर्दन्ति ।	श्राविका आर्यिका युष्मान् अर्चन्ति ।
सुनय श्रावकान् युष्मान् दिशन्ति ।	परिचारिका स्वामिनी युष्मान् सेवते ।

अष्टम पाठ ।

साहित्य परिचय

(वचनानि पुरुष और क्रियाका सम्बन्ध आत्मनेपद और परस्मैपदका व्यवहार लिंग और वचनके अनुसार विशेषणका प्रयोग तथा विसर्ग सन्धिके नियम अच्छी तरह ध्यानमें रखने चाहिये)

प्रश्नमालाका उत्तर लिखो—

निरपराधिनी अञ्जनाको सास और श्वसुर छोड़ते हैं । पवनंजय इस बातको जानकर बहुत दुःखित होते हैं, अञ्जनाको ढूंढनेके (अन्वे ष्टु १) लिये वे जंगल २ फिरते हैं। अञ्जनाने एक पुत्र जना है (सूतवती) वह बड़ा प्रतापी है मामा (मातुल) उसे पालता है ।

---

१ अनु-पूर्वक इषे (जाना) धातुका अर्थ ढूंढना होता है।

प्रश्नमाला—

किमर्थं पवनजयो व्ययते। कीदृशीं (कैसी) चंजना कस्य- जति। क का चन्द्रीयते। का क सतवती। कथभूत (कैसा) स पुत्र। कस्य जायते?

प्रश्नोत्तर बनाकर लिखो—

मयनाभिरामो लक्ष्मीसमन्वितस्तु दशांग कुमार पवनञ्जय शनै शनै (धीरे २) चन्द्र इव वर्धते। राजपुत्र सम्यग् (अच्छी तरह) गुरून् सेवते। सर्वा विद्या उपविद्याश्च पठति। विवाहयोग्य स सु दशांगी राजकन्यामुद्वहते। त कुमार राजा युवराजपद ददते। पुनर्पि कदाचित् (किसी समय) पतती तडित दृष्ट्वा चेतति "एव एव समस्त जीवितयौवनादि अनित्य तथापि (तो भी) मूढोऽय जनो न बोधति। तथा तु खुमदान् दायान न स्मरति"।

संस्कृत बनाओ—

प्रात कालमें (प्रात) राजा सम्पूर्ण नित्यक्रियाओंको करके (समुत्थाय) सिंहासनपर बैठता है छोटेछोटे बहुतसे राजा लोग उसको नमस्कार करते हैं। इसके बाद (अथ) एक द्वारपाल आकर (आगत्य) कहता है कि—एक मस्त हाथी नगरके लोगोंको दु ख दे रहा है। वह आदमियोंको इस तरह कि कता है (आस्फालयति) कि वे विचारे गिरते हुये ही प्राण छोड देते हैं इस बातको सुनकर (आकर्ण्य) राजा क्रुद्ध होता है।

प्रश्नमाला—

कीदृशो राजा? के क प्रणमति। क क वदति। कथभूतो गज। क क अर्दति। क कान् कि विधं (किस तरह) आस्फा लयति। क कि श्रुत्वा चडती।

हिंदी भाषामें अनुवाद करो।

मुनि राजान धर्मश्रवणार्थं ब्रूते। ... ...

ध्यानपूर्वक शृणोति (सुनती है) । तृतीयद्वीपस्थित सुगंधिनामा देशो वर्तते। स (१) देश स्रोतोदान्दोतट अधिवसति। यत्र (जहां) कुसुमानि स्वकीय सुगंध विकिरति, नित्यप्रमोदिन्य प्रजा ह्लादते तथा अथ धर्मार्थ, काम सतानवृद्ध्यर्थं सेवते न व्यसनार्थं। पथिका अध्वान (मार्ग) स्वगृहप्रांगणसन्निभ। (घरके आंगनके समान) बोधति। स जनाभिलाषित वस्तु, अजस्रम् (हमेशा) सपादयन् कल्पपादपमण्डिता महीं जेतु (जीतने लिये) मिच्छति। यत्र विद्युत चपला, न सपद, प्राहृडभ्राणि, (वर्षाऋतुके मेघ) कृष्णानि न जनचरितानि।

नीचे लिखे शब्दोंको व्यवहारमें लाकर किसी नगर या देशका वर्णन करो—

प्राकार', (शहरका कोट) बहुभूमिसहिता, प्रासादा, कुसुमानि, काम्यते, कूजति, चपललोचना, आनंद, भ्रमरसमूह जीवितेश्वर, वधू, अनाकुल,, इच्छति आरामा (बगीचे), स्तुत्या, जिनालया', कामिन, अनुभय ति, वहते, विभूति, धनिका, शोभते, मेघा इव, क्रामति,

इस गद्यको हिंदीको रूपमें लिखाओ—

इषुकारनामा सुरसेव्यसानुदक्षिणदिग्व्यापी पर्वतो वर्तते। तत्पूर्वभरत विभूषन् अलकाभिधो देशो वर्तते। यो देश कमला-मना मधुकरीमयास्तनुमाश्रुवता हृदयहारिणोऽरण्यो, ध्यानानि खिलधिनितत्म्लान् धान्यचयान् च दधते। यत्रत्या विविधसस्यसमुदायपरिपूर्णा भूमिर्जनमनांसि लुभति। यत्र सन्दा जना सुखिन, वृचपत्रय सकुसुमा., कुसुमानि फलवति, फलानि मधुराणि। तत्र किंचिदपि तत् वस्तु न, यत् जनतामुद न वितरति। तत्र विभुवन-

१ एस और तद शब्दके प्रदमाके एक वचनके विसर्ग व्यञ्जन वर्णोंके रहनेसे नष्ट हो जाते हैं।

प्रसिद्धा बहुधनसमृद्धा प्रचुरपुण्यजनपूर्णा कोशलानाम्नी नगरी वर्तते।

हिंदी बनाओ—

देवताओंसे सेवनीय शिखरोंवाला दक्षिण दिशामें व्याप्त इषुकार नामका पर्वत है। उसके पूर्वभरतको शोभित करता हुआ अलका नामक देश है। जो देश चन्द्रमाके समान मुखवाली, भ्रमरीके समान आंखवाली पतलीबाहुवाली हृदयको हरण करनेवाली युवतियोंको और तमाम पृथ्वीतलको व्याप्त करनेवाले धान्यके ढेरोंको धारण करता है। जिस देशकी (जहांकी) नाना प्रकारके धान्य समूहसे परिपूर्ण भूमि लोगोंके मनोंको मोहित करती है। जहां लोग हमेशा सुखी हैं। वृक्षोंको पत्र फूलवालें, फूल फल वाले, और फल मधुर हैं। वहां कोई भी वह चीज नहीं, जो कि लोगोंको हर्ष न करती हो। उस देशमें तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध बहुत धनसे धनवाली, महान् पुण्यवाले जनोंसे भरी हुई कोशला नामकी नगरी है।

शुद्ध करो—

गुण एव पुरुष गुरुतां नयते। स महतीं उपवासपूर्वं जिनपूजा मनुतिष्ठति। पौरा जन महोत्सव चरति। यत अहमपि बधुत्व इच्छति। अखिलोऽपि भीत शूर भवति। लक्ष्मी नक्त तुषारशिम भजती, दिवा (दिनमें) सरोज गच्छति इति चपला यपि तदीय ततु मुंचति। स सर्वगुणसपन्न यत खलस्वभावो द्विषतोऽपि ता दृष्ट्वा मोदते।

अष्टम अध्याय।

तुदादि और भ्वादि गणकी धातुओंका भूतकाल वाची शब्दके साथ प्रयोग

(१) स्म—योग

प्रथम पाठ।

योधाः स्वजीवितानि रक्षन्ति स्म।	योद्धाओंने अपने जीवनकी रक्षा की।
तत्कटकं प्रतिदिनं वर्धते स्म।	उसकी सेना दिनपर दिन बढ़ने लगी।
पवतीया स सेवन्ते स्म।	भिक्षुलोग उसको सेवते थे
ब्रह्मचारिणः दीक्षन्ते स्म।	ब्रह्मचारियोंने दीक्षा ली।
दीपौ शोभेते स्म।	दो दीपक शोभते थे।
चन्द्रः काशते स्म।	चन्द्रमा चमकता था।
रजका वस्त्राणि रजन्ति (न्ते) स्म।	रंगरेज लोग कपड़े रंगते थे।
मेघा समुद्रं आचामति स्म।	मेघोंने समुद्रका आचमन किया।
भृत्यौ द्रुमान् लुनतः (नीते) स्म।	दो सेवक वृक्षोंको काटते थे।

संस्कृत बनाओ—

(क) भव्यलोग महावीर स्वामीके पास गये। राजा अपने पुत्रको देखकर हर्षित हुआ। दो किसानोंने दो गड्ढे खोदे थे। मुनींद्र इस तरह (एव) उपदेश देते थे। राजपुत्रको असुरने डाटा। किस रोगीने औषध नहीं खाई थी। उस देवने राजकुमारको कहा। शीतपीडित हम दो जने कांपे थे। तुम दोनों क्यों हसते थे। धीरे २ पुत्र बढ़ने लगा।

१—पहिले बतलाये गये क्रियाके रूपोंके साथ 'स्म' लगादेनेसे वर्तमान कालकी जगह भूतकालका अर्थ होजाता है। जैसे—गच्छति (जाता है) गम्लृ धातुका रूप है इसके साथ 'स्म' लगादेनेसे गच्छति स्म (गया) ऐसा हो जायगा।

प्रसिद्धा बहुधनसमृद्धा प्रचुरपुण्यजनपूर्णा कोशलानाम्नी नगरी वर्तते।

हिंदी भाषार्थ—

देवताओंसे सेवनीय शिखरोंवाला दक्षिण दिशामें व्याप्त इषुकार नामक पर्वत है। उसके पूर्वभरतको शोभित करता हुआ धनधा नामक देश है। जो देश यमनके समान सुखवाली, भ्रमरोंके समान आंखवालों चललीबाहुवाली हृदयको हरण करनेवाली युवतियोंको और तमाम पृथ्वीतलको व्याप्त करनेवाले धान्यके ढेरोंको धारण करता है। जिस देशकी (जहांकी) नाना प्रकारके धान्य समूहसे परिपूर्ण भूमि लोगोंके मनोंको मोहित करती है। तथा लोग हमेशा सुखी हैं। वृक्षोंकी पंक्ति फूलवाली, फूल फल वाले, और फल मधुर हैं। वहां कोई भी वह चीज नहीं, जो कि लोगोंको हर्ष न करती हो। उस देशमें तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध बहुत धनसे धनवाली, महान् पुण्यवाले जनोंसे भरी हुई कोशला नामकी नगरी है।

एव करी—

गुण एव पुरुष गुरुतां नयते। स महती उपवासपूर्वं जिनपूजा मनुतिष्ठति। पौरा जना महोत्सव चरंति। अत अहमपि बहुत्व इच्छति। अखिलोऽपि भोक शूर भवति। लक्ष्मी नरा तुषाररश्मि भजते, दिवा (दिनमें) सरोज गच्छति इति चपला अपि तदीय तनु मुञ्चति। स सर्वगुणसंपन्न अत खलस्वभावो द्विषतोऽपि तां दृष्ट्वा मोदते।

अष्टम अध्याय ।

तुदादि और भ्वादि गणकी धातुओंका भूतकाल स्म शब्दके साथ प्रयोग

(१) स्म—योग[1]

प्रथम पाठ ।

याचकाः स्वजीवितानि रक्षन्ति स्म।	याचकोंने अपने जीवनकी रक्षा की।
तत्कटकं प्रतिदिनं वर्धते स्म।	उसकी सेना दिनपर दिन बढ़ने लगी।
पर्वतीयाः तं सेवन्ते स्म।	भिल्लोग उसको सेवते थे
ब्रह्मचारिणः दीक्षन्ते स्म।	ब्रह्मचारियोंने दीक्षा ली।
दीपाः शोभन्ते स्म।	वे दीपक शोभते थे।
चन्द्रः काशते स्म।	चन्द्रमा चमकता था।
रजकाः वस्त्राणि रजन्ति (न्से) स्म।	रंगरेज लोग कपड़े रंगते थे।
मेघाः समुद्रं आश्रयन्ते स्म।	मेघोंने समुद्रका आश्रय किया।
भृत्यौ कुशान् लुपतः (पेते) स्म।	दो सेवक कुशोंको काटते थे।

संस्कृत बनाओ—

(क) भव्यलोग महावीर स्वामीके पास गये। राजा अपने पुत्रको देखकर हर्षित हुआ। दो किसानोंने दो गड्ढे खोदे थे। मुनींद्र इस तरह (एव) उपदेश देते थे। राजपुत्रको असुरने डांटा। किस रोगीने औषध नहीं खाई थी। उस देवने राजकुमारको कहा। शीतपीड़ित हम दो जने कांपे थे। तुम दोनों क्यों हंसते थे। धीरे २ पुत्र बढ़ने लगा।

१—पहिले बतलाये गये क्रियाके रूपोंके साथ 'स्म' लगादेनेसे वर्तमान कालकी जगह भूतकालका अर्थ होजाता है। जैसे—'गच्छति (जाता है) गमन धातुका रूप है इसके साथ 'स्म' लगादेनेसे गच्छति स्म (गया) ऐसा हो जायगा।

वीर लोगोंने भयको छोड़ दिया। तुमने उसी मार्गों नहीं छोड़ा
स्रयवर्मा इस प्रकारस्वबंधु कुमारको पाकर (मुख्यथा
महोत्सव नगरमें प्रवेश करता हुआ। संपूर्ण फूल खेत व
हो गये। पिताने पुत्रका आलिंगन किया। समस्त
लोगोंने धनिकोंका सहारा लिया। राजाने अपने पुत्र
पूछा। उसने कहा हम कहीं (क्वापि) नहीं गये थे
गुणी लोग और भाटमियोंको प्रशंसा करते थे। विद्वा
पण्डितोंने शास्त्रों की आलोचना की। कौन २ दे
प्रसिद्ध हुये।

(ख) राजाने कहा—मैंने पूर्व भवोंको जाना तथापि मन संशयवं
प्राप्त होता है,, मुनिने इस बातको सुनकर (आकर्ण्य) उ
देश दिया। राजाने उसको पूजाको और व्रतोंको धार
किया।

(ग) वनमाली विपुलाचलको सब फलफूलोंसे सहित देखक
हर्षित हुआ और राजगृही नगरीको आया वहां (तत्र
उसने रत्नखचितसिंहासनपर बैठे हुये शांतमूर्ति श्रीश्रेणि
कको देखा, सेवक लोग चरणोंकी सेवा करते थे विद्वा
संक्लिष्ट गूढ विषयोंका विचार करते थे अनेक छोटे २ रा
उसको प्रणाम करते थे।

(घ) श्रीवर्माने पितृदत्त राज्य पाया। साम्राज्याभिषक्त नृ
राजाको स्वय लक्ष्मी सेवा करने लगी। सरस्वती भ
उसकी वदना करती थी। पूर्वराजाओंसे भुक्त भी पृथ्व
फल देने लगी।

(ङ) पिताके शोकसे मुक्त हुआ श्रीवर्मा पृथ्वीको जीतनेके लिये
(साधयितु) चला। सैन्यबल आगे (पुर) अनाटवि
पीछे (पश्चात्) और सामन्तबल बीचमें (मध्ये) चलता था

सुरगमोत्थ सेनारजने दिशाओंको वेष्टित किया। ध्वजाओंने सूर्यको आच्छादित किया चलनेके समय होनेवाले (गमन-कालसमुद्भव) मत्तमतंग जलने धूलिको सींचा। प्रस्थानसमय आयो पटहशब्दने पर्वतसंकट और शत्रु चित्तको व्यथित किया। नगर वासियोंने उसके दर्शन किये। शत्रु लोगोंने लड़के और स्त्रियोंको छोड़ (मुक्त्वा) अपनी रक्षाके लिये (आत्मरक्षाय) दिशाओंका आश्रय लिया।

हिन्दी अनुवाद—

सिंहचन्द्रनामा मुनिरेकदा (एकसमय) राज्ञीं वदतिस्म कि-त्वं न वेत्सि? यद् दशति स्म यदा (जब) एकः सर्पो मदीय (मेरे) पितरं, तदा (तब) एव म्रियते स्म सः। ततो (उसके बाद) भवतिस्म स सप्तजीवनस्थो गजः। स भूतपूर्वो मदीय पिता एव तपयरत मां हन्तुं (मारनेके लिये) आगच्छतिस्म एकदा। तदा अहं गजं उपदिशामिस्म यत् पूर्वं (पहिले) त्वं मदीयः पूज्य पिता वर्तसेस्म अहं च सिंहचन्द्रनामा त्वदीय (तुम्हारा) पुत्रः। अद्य (आज) पुनस्त्वं मां हन्तुं ईहसे इति (यह) महद् आश्चर्यं। इति श्रुत्वा (सुनकर) गजो निजपूर्वभवं स्मरति स्म तथा पुनः पुनश्च क्रन्दति स्म। तं तथाभूतं दृष्ट्वा गदामि स्म यत् यदि त्वं धर्मं अनुतिष्ठसि तदा कल्याणं, न अन्यथा। अतः पापानि त्यक्त्वा [छोड़कर] श्रावकव्रतानि आचरितुं (धारण करनेके लिये) अर्हसि। इदं श्रुत्वा स तानि दधते स्म।

द्वितीय पाठ।

(१) क्तप्रत्यय

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
राजा	जीवित ।	राजा	जीया।
दरिद्र	कठित ।	दरिद्रने	कष्टसे जीवन बिताया।
मूर्खः	कथित ।	मूर्खने	बकवाद किया।
पक्षिणः	कूजिताः ।	पक्षियोंने	शब्द किया।
बाला	क्रीडिता ।	लड़की	खेली।
मेघाः	गर्जिताः ।	मेघ	गर्जे।
शिशुः	ज्वरित ।	लड़केको	ज्वर आया।
अग्निः	ज्वलित ।	आग	जली।
विधिः	फलित ।	भाग्य	फला।
छात्राः	भ्रमिताः ।	विद्यार्थीने	[illegible]
पुरुषः	हृषित ।	आदमीने	[illegible]
ब्रह्मचारिणः	दीपिताः ।	ब्रह्मचारियोंने	[illegible]
विद्वान्	प्रथित ।	विद्वान्	प्रसिद्ध हुआ।
ग्रामः	प्रसित ।	गांव	बढ़ा।
राजपुत्र	[illegible] ।	राजपुत्र	गया।
अहं	व्यथित ।	मैं	व्यथित हुआ।
लोकाः	[illegible] ।	लोग	इकट्ठे हुये।
त्वं	चलित	तुम	विचलित हुये।

---

१ अकर्मक और 'गमन (जाना)' अर्थ वाली धातुओंसे भूत (बीता हुआ) कालमें 'त (क्त) प्रत्यय होता है। और उससे पहिले धातुके अन्तमें इ (इट्) लग जाता है जैसे जीव (जीना) धातुसे त (क्त) प्रत्यय किया तो जीव+त हुआ अब 'त' से पहिले धातुके अन्तमें 'इ' लगाया जीव्+इ+त=जीवित हुआ। क्त प्रत्ययान्त शब्द तीनों लिंग होते हैं। स्त्रीलिंगमें आकारान्त हो जाते हैं।

के	चलिताः।	कौन लोग	चले।
जन	मुदित।	आदमी	खुश गया।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

मुदित, व्यथितौ, वेपिता, शिञ्चित, चलिता, स्यंदित, दीपितौ, चलितौ, नदिता, प्रकाशिता। स्रदित, आच्छादित, ग्रंथितौ, लषित, चडिता, कपितौ, त्वपिता, जृंभितौ, घूर्णित, व्यसिता।

तृतीय पाठ।

(१) अनिट् क्त प्रत्यय

कर्ता		क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
बाल		स्मित॰।	लड़का	मुस्कराया।
रामः	राजा	भूतः।	राम	राजा हुआ।
सर्पाः		धृताः।	सांप	धरले।
भिक्षुक		मृत॰।	भिखारी	मरगया।
अहं	ग्राम	(२) गत।	मैं	गांवको गया।
बालक		पीन।	लड़का	बढ़ा।
त्वं	प्रतिज्ञां	(३) क्रान्त।	तुमने	प्रतिज्ञाको उल्लंघनकिया।
वीरा	अश्वान्	(४) आरूढा॰।	वीरलोग	घोड़ोंपर चढ़े।
विषाद		स्फीतः।	विषाद	बढ़ा।
भवान्	कन्या	आश्लिष्ट॰।	आपने	कन्याको आलिंगन किया।

---

१ जिन धातुओंमें 'ऋ, ओ, ई और उ' इत् है (चिह्न लगे हैं) उनसे तथा शीङ (सोना) को छोड़कर शेष स्वरान्त धातुओंसे क्त (त) प्रत्यय होनेसे इ (इट) नहीं बीचमें आता। २ इनो मनोऽ यमुङ्, नमी, गम्लृ इन धातुओंके अन्तके मकार और नकारका 'क्त' प्रत्यय परे रहते लोपहो जाता है। ३ नकारान्त और मकारान्त धातुसे क्त प्रत्यय होनेपर नकार और मकारसे पहिले स्वरको दीर्घ होता है जैसे क्रम्—क्रान्त। ४—श्लिष, ५—स्था, आस, इत्यादि धातु यद्यपि प्रत्यय होता है।

देवदत्त ग्रामं प्रस्थित । देवदत्त गाँवको गया।
शिष्य गुरुं उपासित. । शिष्यने गुरुकी उपासना की।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भूता, भूतौ, आरूढौ उपासित, भीतौ, आदिष्टा, गत, स्थितौ, गता।

शुद्ध करो—

वानरा वनं गमिता। के इमे मरिता। त्वं गुरुन् नमित। देव फलस। सर्वे कपोता तत्र प्रस्थिता। सीता प्रतिनिवर्तिता। कपोतला वृक्षं आरोहित। कुमार कन्यां आश्रियितौ। महान् कलरवो (कोलाहल) भवित।

चतुर्थ पाठ।

स्त्रीलिंग (१)—क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
बालिका	आगता।	लड़की	आई।
सा	भूता।	वह	उत्पन्न हुई।
चंद्रिका	प्रकाशिता।	चाँदनी	प्रगट हुई।
सेना	धाविता।	सेना	भागी।
निशा	अतीता।	रात्रि	गई।
वधू	शयिता।	वधू	सोगई।
अमू स्त्रियौ	उत्थिते।	वे दो स्त्रियें	उठीं
अहं	चलिता।	मैं	चली।

---

१ क्त प्रत्ययांत शब्द सर्वदा विशेषण होते हैं इसलिये वे तीनों लिंग होते हैं। इनको स्त्रीलिंग बनानेके लिये अ के बदले इस आकारकी दीर्घ आकार कर देना चाहिये।

कर्ता	क्रिया ।	कर्ता	क्रिया ।
मातरः	नन्दिता ।	मातायें	आनन्दित हुई ।
नद्यः	एधिता, ।	नदियां	बढ़ी ।
बाले	मुदिते ।	दो लड़कियां	प्रसन्न हुई ।
राजधानी	प्रथिता ।	राजधानी	विस्तृत हुई ।
पण्डिता	मृता ।	पण्डिता स्त्री	मर गई ।
सा	मुण्डिता ।	वह	मूंड़ गई ।
अमू नौका	आरूढा ।	ये स्त्रियां	नाव पर चढ़ी ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

मुण्डिता, हर्षिता, वर्द्धिता, ईर्षिता, मुदिता, प्रसिता प्रथिता ।

पंचम पाठ ।

नपुंसकलिङ्ग—क्त प्रत्यय

कर्ता	क्रिया ।	कर्ता	क्रिया ।
फल	(१) पतित ।	फल	गिरा ।
शरीर	कम्पित ।	शरीर	कंपा ।
मन	व्यथित ।	मन	दुखा ।
भूषण	त्रुटित ।	गहना	टूट गया ।
अन्न	(२) पक्व ।	अन्न	पक गया ।
आयु	समाप्त ।	आयु	खतम होगयी ।

१ पत्लृ (गिरना) धातुमें लृ लगा है इसलिये इ (इट) बीचमें न आना चाहिये था लेकिन विशेष नियमसे इ (इट) आता है। २ पच्धातुके बाद क्त प्रत्ययके स्थानमें 'व' और धातुके चकारको ककार हो जाता है।

कर्ता	क्रिया।	कर्ता	क्रिया।
नगर	शोभितं।	नगर	शोभायुक्त हुआ।
जल	स्यदित।	जल	बहगया।
गृहाणि	प्रथितानि।	घर	प्रसिद्ध हुए।
सर्वं सर्वांग	जात।	सब भया	हीयता।

संस्कृत बनाओ—

यह प्रसिद्ध हुआ। नदी जल बढ़ा। शरीर कांपगया लेकिन मन चलित नहीं हुआ। मोक्षगामी नौकर दौडे। भोजन पकगया लेकिन खानेवाले नहीं आये। वे नदी पर गये लेकिन थकी नहीं। रस्सी टूट गई लेकिन काम सिद्ध न हुआ। वे आकुलित हुई। नगर शोभित हुआ लेकिन प्रकाशित न हुआ।

हिंदी बनाओ—

अद्य (आज) जिनेंद्रदर्शनं जात, चक्षु सफलीभूत, हृदय भक्तिपूर्णं जात। राजा विरक्त। संसारस्वरूप चिंतित वर्तते। अंजना वनं वन क्रांता। सा हनुद्वीप गता। तत्र पतिवार्ता श्रुत्वा प्रसन्ना जाता। पवनंजयोऽपि व्यथित। स स्वप्रियामन्वेष्टु वन गत। राजा हनुद्वीप चलित। स धर्मं श्रुत्वा हृष्ट। स्वराजधानीं प्रति आगत।

शुद्ध करो—

पय स्रुत। सिंहा: गर्जितौ। पत्र लिखित। मित्र मिलित। लोकपालनामा कश्चित् विरक्त। चिरमभ्यस्तो भक्ति गुणान् दोष च स्मयति। मेघो दृष्टा। यूय ध्यानध्यानतपोरक्ता प्रथिता। कुसुम धन उषित। छाला व्यथित।

षष्ठ पाठ।

क्तवतु (१) प्रत्यय

पुंलिंग

अहं पुस्तकं पठितवान्।	मैंने पुस्तक पढ़ी।
आचार्यः कथां कथितवान्।	आचार्यने कथा कही।
भिक्षुकौ भिक्षां याचितवन्तौ।	दो भिक्षुकोंने भीख माँगी।
शिशवः कथं क्रन्दितवन्तः।	लड़के क्यों रोये।
गायकाः गीतवन्तः।	गायकोंने गाया।
भ्रमराः पुष्पाणि आस्वादितवन्तः।	भ्रमरोंने फूलोंको चाखा।
पुत्रविरहः तं (२) तुन्नवान्।	पुत्रके वियोगने उसको पीड़ा दी।
मृगाः पर्वतं श्रितवन्तः।	मृगोंने पर्वतका आश्रय लिया।
तरवः पुष्पाणि विकीर्णवन्तः।	वृक्षोंने फूल बिखेरे।
अहं जलं पीतवान्।	मैंने पानी पिया।
सेवकौ स्वामिनं सेवितवन्तौ।	दो सेवकोंने स्वामीकी सेवा की।
मेघः क्षेत्राणि उक्षितवान्।	मेघने खेतोंको सींचा।

१—कुछ धातुओंसे भूतकाल अर्थमें क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। शेष—इट आदिके नियम क्त प्रत्ययकी भांति समझना। २—धातुके अन्तके दकार अथवा रकारसे परे क्त और क्तवतुके तकारको और धातुके दकारको नकार आदेश हो जाता है लेकिन रकारको कुछ नहीं होता। जैसे—तुद् (पीड़ा देना) से क्त अथवा क्तवतु प्रत्यय किया ओकार इत् होनेसे मध्यमें इट नहीं आता। इसलिये तुद+त अथवा तुद+तवत् हुआ अब 'त' के स्थानमें और धातुके 'द' के स्थानमें 'न' होनेसे तुन्न तुन्नवत् हुआ। इसी तरह (कॄ+ बिखेरना) से क्त अथवा क्तवतु किया अनिट होनेसे मध्यमें इट नहीं हुआ (दीर्घ ऋकारान्त धातुके ऋकारको क्त तथा क्तवत् परे होनेसे (ईर्) हो जाता है) तो कीर्+त हुआ अब तके स्थानमें न हुआ तो कीर्ण, कीर्णवत्। नकारको णकार करनेके लिये ८८ पृष्ठकी टिप्पणी देखो।

अग्नि इंधन दग्धवान्। अग्निने ईंधनको जलाया।
गोप धेनु मुक्तवान्। ग्वालेने गायको छोड़ा।
कारारक्षक चौरं त्यक्तवान्। जेलवालेने चोरको छोड़ा।
मेघा पयांसि कु विसृष्टवन्तः। मेघोंने पानीको डाल दिया।

नीचे लिखे रूपोंको वाक्योंमें लाकर वाक्य बनाओ—

घ्रातवान्, जितवती, तर्जितवती, चलितवान्, दष्टवान्, दृष्टवत्, भूषितवान्, लज्जितवान् गर्जितवान्, भक्षितवत्, चर्चितवती चलितवती, नुतवान् आलोचितवत्, गृहीतवान्, कथितवान्, दर्शितवान्, गतवान् पठितवान्, विचारितवान्, दग्धवान् मुदितवान्, छिन्नवान् त्यक्तवान्।

सप्तम पाठ।

तवत् (क्तवतु) स्त्री लिंग (१)

भिक्षुकी मृतवती। भिक्षुकी म्रियते स्म।
नारी ग्राम गतवती। नारी ग्राम गच्छति स्म।
बालिका एधितवती। बालिका एधते स्म।
सा प्रतिमां ध्मातवती। सा प्रतिमां ध्मायति स्म।
देवदत्ता ग्राम प्रस्थितवती। देवदत्ता ग्राम प्रतिष्ठते स्म।
शिष्या काष्ठ हृतवती। शिष्या काष्ठ हरति स्म।
सेविका भार ऊढवती। सेविका भारं वहति (ते) स्म।
सिंही गर्जितवती। सिंही गर्जति।
दीने धनाढ्य श्रितवत्यौ। दीने धनाढ्यं श्रयतः स्म।
इयं मेघमाला क्षीणवती। इयं मेघमाला क्षयति स्म।

१—तवत् प्रत्ययान्त 'ई' अन्तमें लगा देनेसे स्त्री लिंग हो जाते हैं।

पुष्पमाला		ध्यानवती।	पुष्पमाला		ध्यायति स्म।
नारी	नदीं	तीर्णवती।	नारी	नदीं	तरति स्म।
सीता	पुष्प	घ्रातवती।	सीता	पुष्प	जिघ्रति स्म।
सेना	शत्रु	जितवती।	सेना	शत्रु	जयति स्म।
मन्दोदरी	वधू	तर्जितवत्यौ।	मन्दोदरी	वधू	तर्जत स्म।
वध्व		ईप्सितवत्य।	वध्व		ईप्सते स्म।
मातर	दुहित	गदितवत्य।	मातर	दुहितृ	गदति स्म।
कन्या	पति	श्रितवती।	कन्या	पति	श्रयते स्म।
शिष्या		उषितवती।	शिष्या		वसति स्म।
वत्सा		गूनवती।	वत्सा		गुवति स्म।
राज्ञी	भृत्य	तिजवती।	राज्ञी	भृत्य	तिजते स्म।
विद्या		पीनवती।	विद्या		प्यायते स्म।
सभा		वर्द्धितवती।	सभा		वर्द्धते स्म।
बाला	आत्मान	शङ्कितवती।	बाला	आत्मान	शङ्कते स्म।
का	का न (वि) भ्रष्टवती।		का	का न (वि) भ्रशते स्म।	

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

दृष्टवती, आलोकितवती, दग्धवती, ईक्षितवती ईक्षितवती, काङ्क्षितवती, गतवती, पठितवती, सेवितवत्य, धर्षितवती, तर्जितवत्यौ, हसितवत्य, मिषितवत्य कथितवत्य नयतिस्म, पिबतिस्म, पीतवती, तिष्ठति स्म, श्लाघते स्म, लिखितवती, ईक्षते स्म, शङ्कितवती, त्यक्तवती, मुञ्चति स्म, तुष्टवती, वर्द्धते स्म, भज ते स्म, काङ्क्षते स्म, सेवते स्म।

नीचे लिखे वाक्य पूरे करो—

——गुरु दृष्टवती। बाला——गतवती। पत्नी पति——।माता ——शिक्षितवती। कन्या——पठितवती।——घट स्थितवती।

——पुत्र कामितवती। पुत्रस्त्रीया——प्रार्थितवती। अपमा——मूलयता। बाला——पीतवती।——नदीं तीर्णवती।

(१) नीचे लिखी धातुओंका लङ् (लट्) [illegible]

धातुः—

[illegible], [illegible], कम्, धर, [illegible], (२) [illegible], मयेत्, [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

अष्टम पाठ।

अथ [illegible]—लङ्

भक्त	अग्नि	गाहयत्।	भक्त अग्नि	गूहति (ते) स्म।	
रूढं		रञ्जयत्।	रूढं	रजते (ति) स्म।	
मित्र	बीज	वापयत्।	मित्र	बीजं वपति (ते) स्म।	
पुष्पाणि	जनान्	लुभ्यन्ति।	पुष्पाणि	जनान्	लुभन्ति स्म।
मित्रे	पुष्प घ्रात (प) यतो।		मित्र	पुष्प	जिघ्रत स्म।
धर्म	भट	ध्यात (प) यत्।	धर्म	भट	ध्यायति स्म।
जन		भक्तयत्।	जन		लगति स्म।
चक्षुषी	आनन्द	लम्भयतो।	चक्षुषी	आनन्द	लभेते स्म।
कटुवचांसि	हृदयं	तोदयन्ति।	कटुवचांसि	हृदयं	तुदन्ति स्म।
कुसुमानि	मधु	विसीर्णयन्ति।	कुसुमानि	मधु	विसरन्ति स्म।
पगुरुणो	फलानि	विकीर्णयतो।	पगुरुणो	फलानि	विकिरत स्म।
धर्माणि	शरीराणि	कुपितयन्ति।	धर्माणि	शरीराणि	कुप्यन्ति स्म।
शरद्	चन्द्रिका	प्रसृतयत्।	शरद्	चन्द्रिका	प्रसरति स्म।
तप	मुनि	भूषितयत्।	तप	मुनि	भूषति स्म।

१ धातुपाठमें [illegible] समय [illegible] प्रत्ययको [illegible] बातोंका ख्याल ध्यान रखना चाहिये। २ [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] पढ़िये अनुसार [illegible] [illegible] पांचवां अक्षर आजाता है। [illegible]। [illegible] आदि।

नवम पाठ।

साहित्य परिचय

हिंदीमें अनुवाद करो—

जीवधर समित्रो नदी गतवान्। तत्र द्विजा एकं कुक्कुरं त्रिघति स्म। स कुमारस्त्रातु (बचानेके लिये) प्रयतते स्म परं न समर्थो जातः। अतो धर्मं उपदिष्टवान्। ततः श्वा यक्षेन्द्रो जातः। पूर्वं भवं स्मृत्वा स जीवधरसमीपमागच्छति स्म तथा कुमारं दृष्ट्वा सन् अर्चितवान् पुनः स्वर्गं गच्छतिस्म। अथ तत्र गुणमालासुरमञ्जरी-नाम्न्यौ द्वे कन्ये परस्परं चूर्णार्थं विवदेते स्म एवं या पराजिता सा स्नाता न स्यात् (हो) इति अवदितौ च चरतः स्म इति चूर्ण-परीक्षार्थं स्वे चेट्यौ सज्जनसमीपं प्रेषितवत्यौ। ते च जीवधर-समीपं आगच्छतः स्म। जीवधरो गुणमालाचूर्णं गुणवत् इति कथ्यते स्म (कथितवान्) सुरमञ्जरीचेटी तु तत् श्रुत्वा "अन्धी कृमिव भवान् अपि अज्ञावान् किं यूयं सर्वे सहपाठ (एकसाथ) पठित वन्त" इति क्रुद्धा अतो गदितवती। स्वामी जीवधरस्तु चूर्णगुण-दोषं स्पष्टं साधितवान्। ततस्ते चेट्यौ कुमारं नत्वा स्तुत्वा च प्रत्यावर्तेते स्म।

संस्कृतमें अनुवाद करो—

काष्ठांगार मरगया। जीवधर परम्परागत राजसिंहासन पर विराजे। सम्पूर्ण प्रजा प्रसन्न हुई। चारो तरफसे सामंत लोगोंने आकर सहारा लिया। महाप्रतापी जीवधरने शत्रु काष्ठांगारके कुटुम्बको भी सम्मानित किया। नन्दाढ्य नामक छोटे भाईको युवराजपद दिया। पृथिवीको बारह वर्ष तक कररहित बनाया। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको अपने पास ले आये। इस तरह यह राजा सब गुणसहित शोभित होने लगा उस समय जीवधर महाराजने अपने सुख दुखको प्रजाधीन समझा। रात्रि दिन समय विभाग द्वारा राज

कार्योंको किया। महाराजने खूब धन बांटा। कैदियोंको थोड़े दिन बांधकर (बंधा) छोड़ दिया। इसलिये सब लोगोंने उसकी प्रशंसा की। बादको विजया विरक्त हुई और "पापपुण्यका फल मैंने देख लिया" यह बात पुत्रको कहकर वनको चली गई। सुनन्दा नामक दूसरी माताने भी उसका अनुगमन किया। दोनों एक साथ दीक्षित हुई।

नीचे लिखे प्रश्नोंका उत्तर लिखो।

को मृत। जीवन्धर' किं भूपतिः स्म। के तं आश्रयन्ते स्म। कं कः संमानितवान्। को करसहितां कृतवान्। का स्वसमीपमानयति स्म। कः कथं राजते स्म। कः खलु स्वसुतं प्रजाधीनं विचारितवान्। कथं राज्यकार्यं वहते स्म। महाराज किं वितीर्णवान्। कान् बन्धनमयानन्तरं मोचितवान्। किमर्थं सर्वे तं श्लाघितवन्त। का विरक्ता जाता। का तामनुगता।

प्रश्नोत्तर बनाकर कथा पुनः लिखो——

कश्चिद् वृको (भेड़िया) मेष (मेंढा) मेकं खादितवान्। तदीयमेकमस्थि गले (गलेमें) लग्नम्। ततः आर्त्तः स उच्चैः रटन् इतस्ततो भ्रमति स्म। यं यं सत्त्वं (प्राणी) दृष्टवान् तं तं प्रति दीनतापूर्वकं प्रार्थितवान् 'महाशय! यदि मदीयं गलगतमिदमस्थि बहिः (बाहिर) करोषि (करदो) तर्हि (तो) अहं बहु पारितोषिकं (इनाम) दद्याम्"। ततः एको बकः पारितोषिकलोभवशीभूतः पुरो (सामने) गत्वा तन्मुखे (उसके मुंहमें) स्वां लम्बां ग्रीवां निवेश्य (घुसाकर) तदस्थि बहिः कृतवान्। ततो यदा बकः स्वकीयं पारितोषिकं याचितवान् तदा वृको लोहितचक्षुः सन् वदति स्म "रे! अहं कुत्रचिदपि त्वत्सदृशं मूर्खं न दृष्टवान्। त्वदीया ग्रीवा मन्मुखे (मेरे मुंहमें) वर्तते स्म तां न चर्वित्वा त्वं जीवन् मुक्तः। एतावता (इतनेसे) अपि असन्तुष्टः पारितोषिकं याचसे"

नीचे लिखे शब्दोंसे समका वचन करो—

तरुनिवह (वृत्तोंका समूह), मृगराजविदारिता, मुक्ताफलानि, पतिता रक्तलोहिता, प्रवरा मृगा, कूजितं, अजगरा, उच्चित-वाता, वानरा पर्वता, पतति, क्रीडति, सूर्यकिरणरहित, अंधकार समावृत, श्याला, वृका, घूका, गुहा।

शुद्ध करो—

स प्रतिदिन पुस्तक पठित। के अपि गुह्य राजमत्र न ज्ञाते। सूर्यपादा अत्र न पतित। विरक्ता सा दृट व्रत अध्यवसित। शोकपोडिता पक्षिण विलपत जिह्वासां समारब्धवान्। इतस्तत अन्वेषयत पतत्रिण शावकान् प्राप्त। जीवधर नदगोपपातिता जलधारां गृहीत। म तत् श्रुत्वा घोषणा निवारित। स्वामो किरातान् जित। स यथाशक्ति प्रतीकार क्षत। गुरु कायमपि वन गतवान्। काक तथाविध स्वर्ग दृष्ट। पापकर्मा त्व किं क्षत।

एक २ शब्द रखकर वाक्य पूरे करो—

परिजन (नौकर) त पश्यन्—त्यक्तवान्। अग्रत राम —तदनतर ——चलिता। तौ——गतौ। जीवधर काष्ठागार——। भिक्षु अत्र——।कुमार ——जात अह अद्य——लब्धवान्। दत्तौ कवल (ग्रास)——। कोपाग्नि शरीर——।सेना कुमारगृहं——। स्वामो तदा——गत। अद्य महानुत्सवो——। मिथ्याभाषिण न ——। यादृग् राजा तादृशी——भवति। प्रयोजन विना—न प्रवर्तते। परहितकरा ——विरला।——मनुष्य भक्षितवान्। जीवधर —गृहीतवान्। आचार्य ——उपदिष्टवान्। पक्षिण ——उड्डीनवन्त। ——सेविते स्म।——विरक्ता।—अनित्य वर्तते।——संस्कृत पठितवान्।——अजगर दृष्टवन्त। नारी—अभिलषती। चोर ——जितवान्।——पतिता।

नवम अध्याय।

भ्वादि और तुदादिगणीय धातुओंमें लृट्लकारका प्रयोग

प्रथम पुरुष परस्मैपदी धातु

प्रथम पाठ।

१ पुरुष (१) गमिष्यति।	आदमी	जायगा।
भव्य जिनं अर्चिष्यति।	धर्मात्मा	जिनको पूजेगा।
निर्धन कठिष्यति।	गरीब	दुःखसे जीवन बितावेगा।
सेनानी म्लेच्छान् क्रमिष्यति।	सेनापति	म्लेच्छोंको लांघेगा।
२ छात्रौ पुस्तकानि पठिष्यतः।	दो विद्यार्थी	पुस्तकें पढेंगे।
फले पतिष्यतः।	दो फल	गिरेंगे।
तौ जीविष्यतः।	वे दोनों	जीवेंगे।
गुणिनौ राजानौ भविष्यतः।	गुणी दो राजा	होंगे।
हस्तिनौ चलिष्यतः।	दो हाथी	चलेंगे।
३ पान्थाः चलिष्यन्ति।	मुसाफिर	चलेंगे।
श्रमो गमिष्यति।	थकान	जायेगी।
कर्माणि फलिष्यन्ति।	कर्म	फल देंगे।
पुष्पाणि स्फुटिष्यन्ति।	फूल	खिलेंगे।
सर्वे लोकाः (२) मरिष्यन्ति।	सब	लोग मरेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंको वाक्योंमें लाकर वाक्य बनाओ—

खादिष्यति, रमिष्यति, गमिष्यतः, वन्दिष्यति पठिष्यति, गदिष्यति, वदिष्यतः नटिष्यति सेविष्यति विक्रमिष्यति घटिष्यतः।

१—परस्मैपदी धातुओंसे भविष्यत् (आगे आने) कालके अर्थमें प्रथमपुरुषके एकवचनमें स्यति द्विवचनमें स्यतः और बहुवचनमें स्यन्ति प्रत्यय लगाते हैं और उसके तथा धातुके बीचमें इ (इट्) लगाया जाता है। जैसे गमॢ (गम् है) से स्यति किया तो गम+स्यति इसके बीचमें 'इ' आया तो गम्+इ+स्यति=गमिष्यति हुआ षकारके लिये ७१ पृष्ठकी टिप्पणी देखो २—धातुओंके अन्तके ऋ को अर् हो जाता है स्यति आदि प्रत्यय परे होनेसे।

संस्कृत बनाओ—

एक मत्त हाथी आवेगा। जीवधर मोक्ष जायेंगे। यह संस्कृत पढ़ेगा। मन्त्री एक पत्र लिखेगा। पापी दुःख पावेगा। घंटा बजेगा। यह तुम्हें निगल जावेगा। क्या यह मुझे याद करेगा। नहीं यह तुम्हें कभी भी (कदापि) नहीं भूलेगा (वि स्मृ)। लड़का यदि इसी तरह खेलेगा तो कुछ नहीं पढ़ेगा। जो चोरी करेगा उसको राजा दंड देगा। लड़कियां माला गूंथेंगी।

द्वितीय पाठ।

१ शिशुः दुग्धं (१) पास्यति।	बच्चा	दूध पीवेगा।
शरीरं म्लास्यति।	शरीर	नष्ट होगा।
स पुरुषः दास्यति।	वह पुरुष	दान करेगा।
राजा पुष्पाणि घ्रास्यति।	राजा	फूल सूंघेगा।
२ राजानौ (२) जेष्यतः।	दो राजा	जीतेंगे।
तौ क्षेष्यतः।	वे भी अभी	नष्ट होंगे।
३ कृषकौ भूमिं (३) कर्क्ष्यतः।	दो किसान	भूमिको जोतेंगे।
अही सर्प्स्यतः।	दो सांप	रेंगेंगे।
पितरौ पुत्रान् त्यक्ष्यतः।	माता पिता	पुत्रोंका त्याग करेंगे।
३ योषितः राजानं द्रक्ष्यन्ति।	स्त्रियां	राजाओंको देखेंगी।
दुष्कर्माणि पुण्यानि धक्ष्यन्ति।	दुष्कर्म	पुण्यकर्मोंको जलावेंगे।

१—जिन धातुओंके अंतमें (दीर्घ ऊकार ऋकार तथा शेष अकार और श्वि को छोड़कर) कोई स्वर है तथा जिनका ऋ कार (ग्रहको छोड़कर) और औकार ह्रस्व है उनसे भविष्यत् कालके स्य वा स्यति आदि प्रत्यय लगानेसे बीचमें इ (इट) नहीं आता। २ स्यति आदि प्रत्यय लगनेपर धातुके अंतके इकार ईकारके स्थानमें एकार उकारके स्थानमें ओकार, ए, ऐ, ओ, औ, के स्थानमें आ कार हो जाता है। जैसे—जि×स्यति—जेष्यति (टिप्पणी ७५ पृ० देखो) नी (लेजा)+स्यति+नेष्यति, श्रु ×स्यति श्रोष्यति, वे (बुन)+स्यति वास्यति म्लै+स्यति म्लास्यति दो (टुकड़े करना)×स्यति दास्यति। ३—स्यति आदि प्रत्यय

सर्पा अपराधिनं दक्ष्यंति। सांप अपराधीको काटेंगे।
शिशव हस्तौ मर्क्ष्यंति। लड़के दो हाथोंको धूवेंगे।
अध्यापका छात्रान् प्रक्ष्यंति। अध्यापक लोग विद्यार्थियोंको पूछेंगे।
ता गृहं (४) प्रवेक्ष्यंति। वे स्त्रियां घरमें प्रवेश करेंगी।
कुम्भकारा घटान् स्रक्ष्यंति। कुम्हार लोग घड़ोंको बनायेंगे।
राजानः रक्षाभारं वक्ष्यंति। राजा लोग रक्षाके भारको धारण करेंगे।

नीचे लिखे रूपोंको व्यवहारमें लाकर वाक्य बनाओ—

धक्ष्यंति, धाक्ष्यति, घ्रास्यति, म्लास्यति, जेष्यति, भोक्ष्यति, स्रक्ष्यंति, भक्ष्यति, दक्ष्यति, स्रक्ष्यति, कर्क्ष्यंति, पक्ष्यति, द्रक्ष्यति, धक्ष्यति, प्रक्ष्यति, म्लास्यति, प्रवेक्ष्यति, मर्क्ष्यंति, स्रक्ष्यंति।

शुद्ध करो—

शिशु दुग्धं पिबिष्यति। दन्तिन सूचिका लिखिष्यंति। अन्न विना शरीरं नूनं (निश्चयसे) म्लायिष्यति। कर्माणि किं न फलिष्यति, फलानि पतिष्यन्त। राजा शत्रुं नूनं जयिष्यति। केन ध्यायिष्यति। सुग्रीवस्य सैन्य कर्षिष्यति, वल्मीकात् सर्पा सर्पिष्यंति। को त्वां स्पर्शिष्यत। ता राजानं दर्शिष्यंति। भृत्य कार्य त्वरया मर्षिष्यत। गुरु प्रश्नं प्रच्छिष्यति, सीता अग्निं प्रवेशिष्यति। कुम्भकार कार्य घटान् सृजिष्यति। स दुग्धं पृथ्वीं वहिष्यति। अयं शिशु दंशिष्यति। ते सृजिष्यति।

संस्कृत बनाओ—

लड़का इसकी इच्छा करेगा। आग गांवको जला देगी।

होनेपर धातुके च तके व श, ह ष क स और स्यति आदि प्रत्ययके स दोनों मिलकर क्ष हो जाते हैं यदि बीचमें इट् न हो। जैसे—लप+स्यति लप्स्यति, (इसी पृष्ठकी ४ नंबरकी टिप्पणी देखो) स्पृश्+स्यति स्प्रक्ष्यति वह+स्यति वक्ष्यति, प्रच्छ+स्यति प्रक्ष्यति यज+स्यति=यक्ष्यति। जिन धातुओंके अन्तके अक्षरसे पहिले ह्रस्व—इ, उ, अथवा ऋ हैं तो उनके स्थानमें क्रमसे ए, ओ, अर, आदेश हो जाते हैं स्यति आदि प्रत्यय परे होनेसे। जैसे विश्+स्यति=वेक्ष्यति, क्षुध्+स्यति क्षोत्स्यति मृश+स्यति मर्क्ष्यति।

भिक्षुक अमचूरको भी खायेगा। मालिक नौकरको पूछेगा। मुनि लोग धर्मका उपदेश देंगे। हिरण्यगर्भ नामक मूसा स्नायुबंधनको काटेगा। वह जिन भगवान् पापोंको हरेगा। जयवर्मा शत्रुओंको दण्ड देगा। चातकको मेघ ही सन्तुष्ट करेगा। वे लोग प्रदर्शिनी (नुमाइश) देखेंगे। कुम्हार घड़ोंको बनावेंगे। लड़की एक बढ़िया (सुन्दर) गीत गावेगी। वीतरागी वीतरागका ध्यान करेगा। चाण्डाल क्या ब्राह्मणको छूवेगा? शत्रु भी इसको प्रणाम करेगा। क्रोधी मुनि इस विचारेको शाप देगा। कौन बम्बईसे (मोहमयीतः) पुस्तक लावेगा। जो ऊंचा (उच्चैः) चढ़ेगा वह अवश्य ही (अवश्यमेव) गिरेगा। दुर्जन कबतक (कदापर्यन्त) उच्च रहेगा। यह नाव इस नदीको पार कर जायगी। सैनिक घोड़ोंपर चढ़ेंगे।

तृतीय पाठ।

आत्मनेपदी धातु।

	कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१	जन		(१) ईहिष्यते।	मनुष्य		चेष्टा करेगा।
	कोऽपि	मां	ईर्षिष्यते।	कोई जन		मेरी निंदा करेगा।
	नारी	नदीं	ईक्षिष्यते।	स्त्री	नदीको	देखेगी।
२	छात्रौ		यतिष्येते।	दो विद्यार्थी		यत्न करेंगे।
	मुनी	शास्त्रं	गाहिष्येते।	दो मुनि	शास्त्रका	अवगाहन करेंगे।
	इमौ		दीक्षिष्येते।	वे दोनों		दीक्षित होंगे।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे भविष्यत्काल अर्थात् लृट्लकारमें स्यते स्येते, स्यन्ते प्रत्यय लगते हैं। शेष बाकी बातोंमें लट् भाषा आदि परस्मैपदी धातुओंके समान होते हैं।

३ एते जना प्रथिष्यन्ते । ये आदमी प्रसिद्ध हो जावेंगे।
सुराज्यानि प्रसिष्यन्ते । अच्छे राज्य बढेंगे।
सुता पितरं मानिष्यन्ते । लडके पिताका सम्मान करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

कत्थिष्यते, एधिष्यते, गर्हिष्यते, गाहिष्यते, भिक्षिष्यते, मोदिष्यते, लषिष्यते, शङ्किष्यते, आदरिष्यते, शिक्षिष्यते, प्रसिष्यते, प्रथिष्यते, मानिष्यते, यतिष्यते ।

चतुर्थ पाठ ।

कर्ता	कर्म	क्रिया ।	कर्ता	कर्म	क्रिया ।
१ नारी		(१) स्मेष्यते ।	स्त्री		मुसकरायेगी ।
स	कार्यं	प्रारप्स्यते ।	वह	काम	प्रारंभ करेगा ।
२ पितरौ	पुत्रं	स्वङ्क्ष्येते ।	माता पिता		पुत्रका आलिंगन करेंगे ।
३ भिक्षवः	फलानि	लप्स्यन्ते ।	भिक्षुक		फल पावेंगे ।
राजानः	नारीः	उद्वक्ष्यन्ते ।	राजालोग		स्त्रियोंको विवाहेंगे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्मेष्यते, लप्स्यते, त्रप्स्यते, उद्वक्ष्यते, रप्स्यते ।

संस्कृत बनाओ—

वह वहां रहेगा। विद्या प्रतिदिन बढेगी। दुर्जनसंयोग पीडा देगा। तलवारें (असि) दीप्त होंगी। लडका मुस्करायेगा। वह मुझे रोकेगा। भिखारी क्या मांगेगा। जैनलोग जिन भगवानकी वंदना करेंगे। पुत्रको देखकर (विलोक्य) पिता प्रसन्न होगा। शरणागतकी वह रक्षा करेगा।

१—इसी अध्यायके द्वितीय पाठकी टिप्पणी देखो।

पंचम पाठ।

उभयपदी धातु। (१)

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१ कृषीवल	गर्त्तं	खनिष्यते (ति)	किसान		गड्ढा खोदेगा।
भिक्षुक	धनिनम्	श्रयिष्यते (ति)	भिखारी धनी आदमीके पास जायगा।		
अतिथि	धनं	याचिष्यति (ते)	अतिथी		धन मांगेगा।
२ इमौ	वस्त्राणि	वयिष्येते (ष्यतः)	येदोजने		कपड़े बुनेंगे।
तौ	समुद्रं	श्रयिष्येते (ष्यतः)	वे दो जने	समुद्रको	जायेंगे।
३ के	दरिद्रान्	भरिष्यति (ते)	कौन		दरिद्रोंको पोषेगा।
के	इमां	सङ्हरिष्यति (ते)	कौन		इसका संहार करेगा।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भरिष्यति, याचिष्यते, श्रयिष्यन्ति, वयिष्यन्ति, खनिष्यते।

षष्ठ पाठ।

कर्त्ता	कर्म	क्रिया।	कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
१ श्रावक	जिनं	यक्ष्यते (ति)	श्रावक	जिनको	पूजेगा।
चन्द्र		त्वेक्ष्यति (ते)	चन्द्रमा		दीप्त होगा।
तस्कर	द्रव्यं	गोक्ष्यति (ते)	चोर		द्रव्य छिपायेगा।
स्वामी	सेवकान्	आदेक्ष्यति (ते)	प्रभु		सेवकोंको हुक्म देगा।
२ पाचकौ	ओदनान्	पक्ष्यतः (क्ष्येते)	दोरसोइया	भातको	पकावेंगे।
रजकौ	वस्त्राणि	रङ्क्ष्यतः (क्ष्येते)	दो धोबी		कपड़ा धोवेंगे।

---

१ पृष्ठ १६६, १७० की टिप्पणी देखो।

३ भृत्याः	गृहतलं	लेपस्यति (ते)	नौकर	घरको लीपेंगे।
कृषकाः	वृक्षान्	लोपस्यति (ते)	किसान	पेड़ोंको काटेंगे।
कृषीवलाः	क्षेत्राणि	वप्स्यति (ते)	किसान लोग	खेत बोवेंगे।
दुःखानि	हृदयं	तोत्स्यति (ते)	दुःख	हृदयको व्यथित करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

क्षेप्स्यते, भविष्यते, देक्ष्यते, कर्त्स्यति, मोक्ष्यते, लेप्स्यते, भक्ष्यते, लोप्स्यते, घोक्ष्यति।

सप्तम पाठ।

उत्तम पुरुष

(१) परस्मैपदी धातु

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ अहं	नव	अटिष्यामि।	मैं नया		घूमूंगा।
अहं	बादमान्	विकिरिष्यामि।	मैं बादाम		बखेरूंगा।
अहं	दुष्टान्	अर्दिष्यामि।	मैं दुष्टोंको		दण्ड दूंगा।
अहं	फलानि	खादिष्यामि।	मैं फल		खाऊंगा।
२ आवां		पतिष्याव।	हम दो जने		गिरेंगे।
आवां		कठिष्याव।	हम दो जने		दुःखसे जीवन बितावेंगे।
आवां	वृक्षान्	सेचिष्याव।	हम दो जने		वृक्षोंको सींचेंगे।
३ वयं	जिनं	अर्चिष्यामः।	हम लोग		जिनकी पूजा करेंगे।
वयं		हसिष्यामः।	हम		हसेंगे।
वयं	जैनग्रन्थान्	पठिष्यामः।	हम		जैनग्रन्थोंको पढ़ेंगे।
वयं	ग्रामं	गमिष्यामः।	हम		गांवको जावेंगे।
वयं	कथां	गदिष्यामः।	हम		कथा कहेंगे।

१—परस्मैपदी धातुओंके लृट् लकारमें उत्तम पुरुषमें स्यामि स्याव स्यामः प्रत्यय लगते हैं। शेष धातु० प्रथम पुरुषके समान समझना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पठिष्यावः, भविष्यामि, पतिष्यावः, वदिष्यामि, क्रमिष्यामि, खादिष्यामि, पठिष्याव, लिखिष्यामि, जीविष्याम ।

अष्टम पाठ ।

१ अहं	दुग्धं	पास्यामि ।	मैं दूध	पीऊँगा ।
अहं	पुष्पं	घ्रास्यामि ।	मैं फूल	सूँघूँगा ।
अहं		जेष्यामि ।	मैं	जीतूँगा ।
अहं		क्षेष्यामि ।	मैं	नष्ट होऊँगा ।
२ आवां	त्वां	स्प्रक्ष्यावः ।	हम दोनों	तुम्हारा स्पर्श करेंगे ।
आवां	चमूं	द्रक्ष्यावः ।	हम दोनों	सेनाको देखेंगे ।
३ वयं		मङ्क्ष्यामः ।	हम	स्नान करेंगे ।
वयं	पाठान्	ध्यास्यामः ।	हम	पाठोंका अभ्यास करेंगे ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

जेष्याम, घ्रास्याव, द्रक्ष्यामि, मक्ष्यामि, दक्ष्याम, पक्ष्याम, सक्ष्याम, वक्ष्याव, धक्ष्याव, यक्ष्यामि, प्रक्ष्याम, वेक्ष्यामि, पास्याव ।

नवम पाठ ।

उत्तम पुरुष

आत्मनेपदी धातु

१ अहं	वाराणसीं (१)	द्रक्ष्ये ।	मैं	बनारस देखूँगा ।
अहं	दुर्जनं	गर्हिष्ये ।	मैं	दुर्जनकी निन्दा करूँगा ।

१—आत्मनेपदी धातुओंसे उत्तम पुरुषमें स्ये, स्यावहे स्यामहे प्रत्यय लगते हैं [illegible] मध्यमें इट होना आदि प्रथमपुरुषके समान समझना ।

अहं	ईक्षिष्ये।	मैं	प्रयत्न करूंगा।
२ आवां	यतिष्यावहे।	हम दोनोंने	यत्न करेंगे।
आवां शास्त्रं	गाहिष्यावहे।	हम दोनों	शास्त्रका अवगाहन करेंगे।
आवां	दीक्षिष्यावहे।	हम दो जने	दीक्षित होंगे।
३ वयं गुणिनः	श्लाघिष्यावहे।	हम	गुणवानोंकी प्रशंसा करेंगे।
वयं कुशीलं	गर्हिष्यामहे।	हम सब लोग	कुशीलजनकी निंदा करेंगे।
वयं	भिक्षिष्यामहे।	हम	भिक्षा लेंगे।
वयं भिक्षून्	आदरिष्यामहे।	हम	भिक्षुओंका आदर करेंगे।
वयं	शङ्किष्यामहे।	हम	शंका करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भिक्षिष्यामहे, गर्हिष्ये, श्लाघिष्यावहे, शङ्किष्यामहे, मानिष्ये, गाहिष्यावहे मोदिष्यामहे, गाहिष्यामहे, भिक्षिष्ये, ईक्षिष्यामहे,

---

दशम पाठ।

कर्ता	कर्म	क्रिया।	कर्ता	कर्म	क्रिया।
१ अहं		(१)धोक्ष्ये।	मैं		दुध[illegible]
अहं	त्वां	स्वङ्क्ष्ये।	मैं		तुम्हारा आलिंगन करूंगा।
२ आवां		उद्वक्ष्यावहे।	हम दोनों		विवाह करेंगे।
आवां	धनं	लप्स्यावहे।	हम दोनोंने		धन पावेंगे।
३ वयं	कार्यं	आरप्स्यामहे।	हम		कार्य आरंभ करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

धोक्ष्यावहे, उद्वक्ष्यामहे, लप्स्यामहे, रप्स्यावहे, स्वङ्क्ष्यामहे।

---

१ पृष्ठ १६० टिप्पणी देखो।

एकादश पाठ।

उभयपदी धातु (१)

१ अहं जिनं श्रयिष्यामि (ये) मैं जिन भगवानकी सेवा करूंगा।

अहं महावीरं यक्ष्यामि (ये) मैं महावीर स्वामीकी पूजा करूंगा।

अहं कूपं खनिष्यामि (ये) मैं कूआ खोदूंगा।

अहं वरान् याचिष्यामि (ये) मैं वर मांगूंगा।

अहं गुणिनं श्रयिष्यामि (ये) मैं गुणीका आश्रय लूंगा।

२ आवां दरिद्रान् भरिष्यावः (वहे) हम दोनों दरिद्रोंको पालेंगे।

आवां साधून् श्रयिष्यावः (वहे) हम दोनों साधुओंको सेवेंगे।

३ वयं कूपं खनिष्यामहे (ष्यामः) हम कूआ खोदेंगे।

वयं धनं चोष्यामः (महे) हम धन छिपावेंगे।

वयं न त्वेक्ष्यामः (महे) हम दीनता छोड़ेंगे।

वयं त्वां आदेक्ष्यामः (महे) हम तुमको आज्ञा देंगे।

वयं वस्त्राणि रक्ष्यामः (महे) हम कपड़े रखेंगे।

वयं भूमिं कर्ष्यामः (महे) हम भूमि जोतेंगे।

वयं गृहं लेप्स्यामः (महे) हम घरको लीपेंगे।

वयं वृक्षान् लोप्स्यामः (महे) हम पेड़ काटेंगे।

वयं तान् तोत्स्यामः (महे) हम उनको व्यथित करेंगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ

चोष्ये, त्वेक्ष्यावः, आदेक्ष्यावः, रक्ष्यामि, कर्ष्यावहे, लेप्स्यामि, लोप्स्ये, भरिष्यामः, वक्ष्ये, मोक्ष्यामहे, भक्ष्यावहे, श्वक्ष्ये यक्ष्यामि, यक्ष्यामहे, श्रयिष्यावहे, देक्ष्ये।

१—परस्मैपदमें जब रूप चलाने हों तब परस्मैपदी धातुओंके प्रत्यय आदि लगाना। और जब आत्मनेपदमें चलाने हों तब आत्मनेपदी धातुओंके समान प्रत्यय आदि जानना।

द्वादश पाठ ।

(१)—मध्यम पुरुष

परस्मैपदी धातु

१ त्वं ग्रामं गमिष्यसि । तुम गांवको जाओगे ।
त्वं सदा पठिष्यसि । तुम सदा पढ़ोगे ।
त्वं किं वदिष्यसि । तुम क्या कहोगे ।
त्वं जिनं अर्चिष्यसि । तुम जिनकी पूजा करोगे ।
त्वं ओदनं खादिष्यसि । तुम चावल खाओगे ।
त्वं मुनिं पूजिष्यसि । तुम मुनिको पूजोगे ।
२ युवां पाठान् पठिष्यथः । तुम दो जने पाठोंको पढ़ोगे ।
युवां कथिष्यथः । तुम कथा कहोगे ।
युवां छात्रान् शिक्षिष्यथः । तुम दोनों छात्रोंको सिखाओगे ।
युवां किं पृच्छिष्यथः । तुम दोनों क्या पूछोगे ।
३ यूयं कठिष्यथ । तुम सब दुःख पाओगे ।
यूयं ग्रामं क्रमिष्यथ । तुम सब गांवको जाओगे ।
यूयं सर्वे मरिष्यथ । तुम सब मरोगे ।
यूयं जीविष्यथ । तुम सब जीओगे ।
यूयं पतिष्यथ । तुम सब गिरोगे ।
यूयं जिनान् अर्चिष्यथ । तुम लोग जिनको पूजोगे ।
यूयं कथां वदिष्यथ । तुम लोग कथा कहोगे ।
यूयं आनन्दिष्यथ । तुम आनन्द पाओगे ।
यूयं पापानि संहरिष्यथ । तुम लोग पापोंका नाश करोगे ।
यूयं क्रीडिष्यथ । तुम लोग खेलोगे ।
यूयं पत्रं लिखिष्यथ । तुम चिट्ठी लिखोगे ।

१—मध्यम पुरुषमें परस्मैपदी धातुओंसे—स्यसि स्यथः स्यथ प्रत्यय लगते हैं शेष मध्यमें इट् आना आदि प्रथम पुरुषके समान समझना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पठिष्यथ, एधिष्यसि, अर्चिष्यथ, कथिष्यथ, चरिष्यसि, चर्चिष्याव गमिष्यसि, गदिष्यथ, नदिष्यसि, व्रजिष्याव, चर्चिष्यसि, भविष्यसि।

त्रयोदश पाठ।

१	त्वं कुत्र स्थास्यसि।	तुम	कहां ठहरोगे।
	त्वं पुष्पं घ्रास्यसि।	तुम	फूल सूंघोगे।
	त्वं किं शास्त्रं म्नास्यसि।	तुम	किस शास्त्रको पढ़ोगे।
२	युवां जेष्यथः।	तुम	दोनों जीतोगे।
	युवां क्षेष्यथः।	तुम	दोनों नष्ट होओगे।
३	यूयं शिशून् स्प्रक्ष्यथ।	तुम लोग	लड़कोंको छूओगे।
	यूयं मां द्रक्ष्यथ।	तुम लोग	मुझे देखोगे।
	यूयं भक्ष्यथ।	तुम लोग	खूब खाओगे।
	यूयं कुत्र वत्स्यथ।	तुम लोग	कहां बसोगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

स्प्रक्ष्यसि, क्षेष्यसि, भक्ष्यसि, पास्यथ, घ्रास्यथ स्थास्यथ, द्रक्ष्यसि, धक्ष्यसि, मक्ष्यथ, वेक्ष्यसि, स्रक्ष्यथ, दंक्ष्यसि, मर्क्ष्यसि, वत्स्यसि, म्नास्यथ।

चतुर्दश पाठ।

(१)—आत्मनेपदी धातु।

१	त्वं किं शिक्षिष्यसे।	तुम क्या	करोगे।
	त्वं तत्र उपवनं ईक्षिष्यसे।	तुम	वहां बगीचा देखोगे।

१—आत्मनेपदी धातुओंमें मध्यमपुरुषमें स्यसे स्येथे, स्यध्वे प्रत्यय लगते हैं शेष प्रथम पुरुषके समान समझना।

त्वं मम मारयिष्यसि । [illegible] [illegible]
त्वं मम धारयिष्यसि । [illegible] [illegible]
२ युवां ताम् [illegible] । [illegible] [illegible]
युवां [illegible] । [illegible] [illegible]
युवां [illegible] । [illegible] [illegible]
३ यूयं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
यूयं [illegible](विनि)[illegible] । [illegible] [illegible]
यूयं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
[illegible] —

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] ।

पंचदश पाठ ।

१ त्वं [illegible] । [illegible] [illegible]
त्वं मां [illegible] । [illegible] [illegible]
२ युवां [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
युवां [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
३ यूयं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
१—[illegible] —
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

षोडश पाठ ।

उभयपदी धातु (१)

१ त्वं जिनं [illegible] (से) तुम जिनकी सेवा करोगे।
त्वं महावीरं यक्ष्यसि (से) तुम महावीरकी पूजा करोगे।

१—टिप्पणी देखो।

त्वं कूपं खनिष्यसि (से) तुम कुआ खोदोगे।
त्वं वरान् याचिष्यसि (से) तुम वर मांगोगे।
त्वं गुणिनं श्रयिष्यसि (से) तुम गुणीका सहारा लोगे।
२ युवां दरिद्रान् भरिष्यथ (थ्ये) तुम दोनों दरिद्रोंका पालन करोगे।
युवां साधून् श्रयिष्यथ (थ्ये) तुम दोनों साधुओंकी सेवा करोगे।
युवां धनं गोप्स्यथ (थ्ये) तुम दोनों धन छिपाओगे।
युवां सेवकं देक्ष्यथ (थ्ये) तुम दोनों सेवकको आज्ञा दोगे।
३ यूयं वस्त्राणि रक्ष्यथ (ध्वे) तुम लोग कपड़ा रखोगे।
यूयं भूमिं कर्षिष्यथ (ध्वे) तुम लोग भूमिको जोतोगे।
यूयं शिशून् आदरिष्यथ (ध्वे) तुम लोग बच्चोंका आदर करोगे।
यूयं गृहं लेप्स्यथ (ध्वे) तुम लोग घर लीपोगे।
यूयं वृक्षान् लोप्स्यथ (ध्वे) तुम लोग पेड़ काटोगे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

घोक्ष्यध्वे, लेक्ष्यसे, पदेक्ष्यध्वे रक्ष्यसे, कर्षिष्यसि, लेप्स्यसि, लोप्स्यसे, भरिष्यसि, वक्ष्यध्वे मोक्ष्यध्वे सक्ष्यसि, भक्ष्यध्वे, वप्स्यथ, मोक्ष्यसि, यक्ष्यथ, श्रयिष्यध्वे, खनिष्यसि, देक्ष्यसि।

सप्तदश पाठ।

साहित्य परिचय

हिंदीमें अनुवाद करो।

अथ नयभूषणो विक्रमवान् प्रभुः पद्मनामा शत्रून् जेतुं निर्गमिष्यति। स मार्गं गच्छन् सर्वसेनासहितस्तारामण्डलपरिवृतश्चन्द्र इव लक्ष्यते। सोऽद्वितीयां विभूतिं (शोभा) वहन् मणिकूटं नाम पर्वतं द्रक्ष्यति। तं दृष्ट्वा सेनापतिः "अत्र गतः कोऽपि जनः पीडां न अनुभवति" इति गदिष्यति। इदं श्रुत्वा नृपस्तम् आश्रयिष्यति। पुन

कतिचिद् (कुछ) दिवसानन्तरं अयायं प्रस्थास्यति। समीपग्राम-
स्थाः पद्मनाभ पार्श्वे किंचित् (कोई) गजम् दास्यन्तो दिगोऽर्पयिष्य-
न्ति, केचित् पर्वतगह्वराणि वीक्षिष्यन्ते केचित् पद्मनाभचरणमाश्र-
यिष्यन्ति, केचित् युद्ध्वा (भड़कर) यास्यन्ति, केचित् वसुतदा-
रान् धास्यन्ति। सोऽपि नृप पद्मनाभ स्वकृतान् स्वविरोधिनो विज्ञाय
कांश्चिद् यदि न ताडयिष्यति, तान् हितवचांसि एव उपदेक्ष्यति,
अतः मनुजमनांसि अपि चतुरयाति। स सन्तान् पापोज्झगणतात्प-
रान् एव क्षपयिष्यति दरिद्रान् भरिष्यति, दानादिकधर्मकार्यं प्राव-
र्तयिष्यति। अनन्तरं सर्वा प्रजा मोदिष्यते, तथा दृष्टा सत्यस्त
गुरुमिव ईक्षिष्यते, पितरमिव आदरिष्यते देवमिव अर्चिष्यन्ति।
इत्थं (इस प्रकार) स राज्यं कृत्वा शोभिष्यते मोक्षं च लप्स्यते।

हिंदी बनाओ—

मैं कहीं (कुत्रापि) नहीं जाऊंगा। तुम क्या पढ़ोगी। नौकर तुम्हारी सेवा करेगा। विद्यार्थी गुरुका सहारा लेंगे। मैं जैनेंद्र व्याकरण पढ़ूंगा। लड़के उसका सत्कार करेंगे। आग हाथको जला देगी। मुनिराज श्रावकोंको उपदेश देंगे। कुम्हार घड़े बनायेगा। वह दूध खावेगा। तुम दोनों किस वस्तुका विनिमय करोगे। अतिथि धन मांगेगा। हम ईश्वरको पूजेंगे और गुरुको नमस्कार करेंगे। पिपासाकुल पशु पानी पीवेंगे। वे यहां नहीं रहेंगे। राजा कुछ दिन बाद प्रस्थान करेगा। हम दोनों इसको नहीं चाहेंगे। मैं गुरुसे पूछूंगा। वह नदीको तर जायगी। मच्छर मुझको काटेगा। पद्मनाभ अवश्य खेलेगा। किसान खेत जोतेंगे और बीज बोवेंगे। उनको कौन छूवेगा?। लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह बात प्रसिद्ध हो जायगी। यदि तुम यत्न करोगे तो विद्वान् होजाओगे। हम पढ़ना शुरू करेंगे। दासी घर लीपेगी। रसोइया चावल पकावेगा। सूर्य चमकेगा।

शुद्ध करो—

नदी पधिष्यति। नौका मघते। अहं राजान द्रक्ष्यामि। कुलाल पात्राणि रचयते। नार्यः नगरीं प्रवेक्ष्यते। के मोदिष्यति। अहं दुग्धं पास्ये। जीवकं गुणमालां उद्वक्ष्यते। कर्माणि फलिष्यते। क इमां स्मरिष्यति। माधव जिनं अर्चिष्यते। त्वं कदा किं कार्यं प्रारप्स्यति। यूयं जीविष्यध्वे। राजानो कीर्तिं लप्स्यत। त्वं धनं पचिष्यते। पद्मनाभ रोचिष्यते। अहं धनं याचिष्यते। यूयं पुनः पुनः चेष्टिष्यामहे। वयं जैनैः पठिष्यामहे। भ्रमरः पुष्पं घ्रास्यामि। बालकाः गृहं गमिष्यावः। कृषका चेत्रं कर्षथ। ते बीजानि वप्स्यथ। विद्यार्थिन शास्त्राणि स्मास्यति। कर्म फलिष्यति। अग्नय काष्ठानि धक्ष्यसि। यूयं सपर्याम। जना देवान् मानिष्यते। गुणग्राहिण पण्डितान् कथियध्वे। सुवर्णं प्रथिष्यते। युवां कदा उदष्यते। के यशांसि लप्स्यते। निर्धना सधन ग्रथिष्यावहे। राजा कारागारवासिन मोक्ष्यते। यूयं पापकर्माणि त्यक्ष्यते। वयं लाजान् खादिष्यवे। पावकाः मोदकान् भक्ष्यध्वे। रजकः वस्त्राणि रक्ष्यते। मे बीजानि वप्स्यसे। प्रियवियोग हृदय तुदिष्यसि। कृषका बीजानि वपिष्यति। मुनय श्रावकान् आदेक्ष्यति। नौका मज्जिष्यति। कपीवल चेत्रं कर्षिष्यति। राजा प्रजा अनुरञ्जयिष्यति। जीवक गुणमालां उद्वहिष्यति। अहं अत्र वसिष्यामि। पंडिता धनानि लभिष्यति। श्वश्रू वधू लजिष्यते। सर्पं भेकं दङ्क्ष्यति। पद्मनाभ जयिष्यति। यूयं शिशून् आह्वयथ। पापकर्मा त्वं पापं न त्यजिष्यसे।

संस्कृतमें अनुवाद करो—

यहां (भरतक्षेत्रमें) चौदह मनु होंगे। अतिमममनु महापद्म नामके होंगे। उनका मुख (तस्य मुख) चन्द्रमाके समान चमकेगा। आप

शेषनागको सोतेंगे। वे विषय वासनाओंको जलायेंगे। कुबेर अयोध्याको बनावेगा। वह बहुत प्रसिद्ध होगी। वे सुंदरी नामक राजपुत्रीको विवाहेंगे। एक समय (एकदा) रानी सोलह (षोडश) स्वप्न देखेगी। फल पतिसे पूछेगी। पति शुभफल कहेगा। पुत्र जन्म होगा। देव आयेंगे। वे पुत्रको पांडुकशिला पर ले जायेंगे (नेष्यन्ति) उसका अभिषेक करेंगे, और पूजन करेंगे। लौट कर (प्रत्यागत्य) नगरोत्सव करेंगे। बहुतसे भगवान्‌की सेवा करेंगे। बाकीके (शेष) स्वर्गको चले जायेंगे।

ऊपर लिखित गद्यका संस्कृतमें अनुवाद करो।

हिन्दीमें अनुवाद करो—

श्रीमंत जीवंधर स्वामी लोकं हृष्टं पुष्टं सर्वविपद्रहितं सुखभोगी च करिष्यति। कोऽपि दुःखं न द्रक्ष्यति। नार्योऽविधवा सौभाग्यवत्यश्च भविष्यन्ति। दुर्भिक्षादिजन्यं दुःखं न स्थास्यति। चौरा कुत्रचित् अपि न वत्स्यन्ति। सर्वे धर्ममाचरिष्यन्ति, गुरून् सम्मानयिष्यन्ते, ईश्वरं अर्चयिष्यन्ति, सत्यं वदिष्यन्ति, परसुखं ईक्षिष्यन्ते। मुनयः तत्तत्र सुधर्मं उपदेक्ष्यन्ति। जना दीक्षिष्यन्ते। केचित् स्वर्गं गमिष्यन्ति केचित् च पुनरपि मनुष्या भविष्यन्ति।

प्रश्नमाला—

क च ग्रामं कीदृशो भविष्यति। के किं न द्रक्ष्यन्ति। नार्यः कीदृश्यो भविष्यन्ति। किंजन्यं किं न स्थास्यति। के न वत्स्यन्ति। के कं आचरिष्यन्ति। मुनयः किं करिष्यन्ति। जनाः कीदृशा भविष्यन्ति। कं अर्चयिष्यन्ति।

दशम अध्याय।

तुदादि और भ्वादिगणीय धातुओंके आज्ञा, आशीर्वाद अर्थक लोट् लकारके साथ प्रथमा और द्वितीया विभक्तियोंका प्रयोग

प्रथम पाठ।

प्रथम पुरुष (१)

परस्मैपदी धातु

१	स	ग्रामं	गच्छतु।	वह	गाँवको जाय।
	याचकः	साधुं	अर्चतु।	याचक	साधुको पूजे।
	इयं	पुस्तकं	पठतु।	यह स्त्री	पुस्तकको पढ़े।
	शिशुः	पुष्पाणि	विकिरतु।	लड़का	फूलोंको बिखेरे।
	सर्वे जनाः		नन्दतु।	सब लोग	प्रसन्न होवें।
	जैनेन्द्रं धर्मचक्रं सततं प्रभवतु।			जिनेन्द्र भगवानका धर्मचक्र हमेशा समर्थ रहे।	
२	यमौ		मिषताम्।	ये दो जने	स्पर्धा करें।
	बालकौ		हसताम्।	दो	बालक हँसें।
	ते		जीवताम्।	वे दो स्त्रियाँ	जीवें।
	साधू		उपदिशताम्।	दो साधु	उपदेश दें।
	शिशू	दुग्धं	पिबताम्।	दो लड़के	दूध पीवें।
३	पथिकाः		चलन्तु।	राहगीर	चलें।
	नाविकाः	नदीं	तरन्तु।	नाविक (मल्लाह)	नदीको पार करें।

१—पहिलेके अध्यायोंमें जो वर्तमान कालके प्रथमपुरुषमें 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि रूप बतलाये हैं उनके अंतके 'ति, तः, अन्ति' को क्रमसे 'तु, ताम्, अन्तु' कर देनेसे इस (लोट्) के रूप बनते हैं।

पुष्पाणि स्फुटतु। फूल खिले।
राजान दृष्टान् मर्दंतु। राजा लोग दुष्टोंका मर्दन करे।
ते गृहं गच्छतु। वे घरको जांय।
शिशव कुसुमानि जिघ्रतु। लड़के फूल सूंघे।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

गायतु, पिबतु जिघ्रतां, व्रजतु, नदताम् भषतां, घटतु भवतां, ग्लायतां, सजतु, विकिरतां, सर्पतां, दशतु, वहतां, दहतु, भ्रमतां दिशतु, तुदतां, भषतु।

संस्कृत बनाओ—

दो लड़कियां अग्नि न छूवें। वे नदी पार करें। कुम्हार घड़ा बनावे। जीवंधर जीवे। पाप नष्ट हो। पुत्र जीवे। लड़के दूध पीवें।

शुद्ध करो—

मयं शास्त्राणि पठतु। मत्तगजौ उभे मर्दंतु। मूर्खा मियतां। बालिका क्रीडतु। सा तत्र वसतु। कर्माणि फलतु। भवान् (आप) चिरं जीवतु।

हिंदी बनाओ—

निंदतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवतु (स्तुति करें) लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ट (इच्छाके अनुसार)। जन शूर सुरूप सुभगो वक्ता वा भवतु पर अर्थं विना न प्रतिष्ठां गच्छति। धनार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते। त्यक्त्वा जनयितारं (पितरं) स्वं (अपने) निःस्वं (निर्धनं) गच्छति दूरतः। भवान् कुलक्रमागतं राज्यभारमुद्वहतु। स्वकीयं पितरं मातरं गुरुजनं भवतोऽर्चतु। छात्राः सर्वदा सदाचारान् चरतु।

द्वितीय पाठ ।

(१) आत्मनेपदी धातु

१ मति एधतां ।	बुद्धि बढ़े ।
जीवकः सुरमञ्जरीं उद्वहतां ।	जीवक सुरमंजरीको ब्याहे ।
पिता पुत्रं स्वजतां ।	पिता पुत्रको आलिंगन करे ।
२ विद्यार्थिनौ शिक्षेतां ।	दो विद्यार्थी पढ़ें ।
ब्रह्मचारिणौ दीक्षेतां ।	दो ब्रह्मचारी दीक्षावें ।
एते नगरे प्रथेतां ।	ये दो नगर प्रसिद्ध हों ।
एतौ चेष्टेतां ।	ये दोनों चेष्टा करें ।
शिशू यतेतां ।	दो लड़के प्रयत्न करें ।
३ शिशवः श्रायताम् ।	लड़के सुस्तावें ।
ते साधून् कत्थन्तां ।	वे साधुओंकी प्रशंसावें ।
अमू कार्याणि आरभताम् ।	वे लोग काम शुरु करें ।
गुणिन यशांसि लभतां ।	यश प्राप्त करें ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

वर्धतां, एधेतां, वेष्टंतां, यततां, श्रायतां, आरभतां, कत्थतां, शंसतां, मोदताम्, भिक्षतां, ईक्षतां, ईजताम्, लभेताम्, सहतां, ईक्षतां ।

शुद्ध करो—

अमू मोदतां, बालका यतेतां, पण्डिता प्रथतां, शत्रव वीर्यं सहेतां, नद्य वर्धंतां, युवको उद्वहतां, विद्वांस शास्त्राणि गाहेतां ।

संस्कृत बनाओ—

लड़के लोग नदियोंको देखें । बालक पुस्तकोंका विनय करें ।

१—आत्मनेपदी धातुओंके वर्तमानकालके एधते एधेते, एधंते आदि रूपोंके अंतके 'ते' को 'तां' कर देनेसे रूप बनते हैं।

लड़के यश पावें। जीवंधर प्रसिद्ध हो। चन्द्रमा दीप्त हो। राजा दुर्जनोंको पीड़ा दे।

शुद्ध करो—

गुणवान् कीर्ति लभतु। शिशव कुसुमानि जिघ्रतां। राजधानी प्रथतु। बुद्धि वर्द्धतु। पुत्रौ जीवेतां। राजान दुष्टान् भहतां। पिता पुत्र लजतां। वृक्षा लाजान् विकिरेतां। हृदय मोदतु।

तृतीय पाठ।

(१) उभयपदी धातु

१ पाचका यवान् भृज्जतु (तां) रसोइया जौको भूंजे।
शिशु लता सिंचतु (तां) लड़का लताओंको सींचे।
राजा दरिद्रान् भरतु (तां) राजा दरिद्रोंका पोषण करे।
निर्धन धन याचतु (तां) निर्धन धन मांगे।
२ श्रावकौ जिनं यजतां (जेतां) दो श्रावक जिनकी पूजा करें।
कृषीवलौ क्षेत्रं कर्षतां (र्षेतां) दो किसान खेतको जोतें।
भृत्यौ गर्तं खनतां (नेतां) दो सेवक गड्ढा खोदें।
तन्तुवायौ वस्त्राणि वयतां (येतां) दो जुलाहे कपड़े बुनें।
३ ते त्वां तुदंतु (तां) वे तुम्हें दुःख दें।
दरिद्रा धनवंतं आश्रयंतु (तां) गरीब लोग धनवान्‌का सहारा लें।
रजका वस्त्राणि रजंतु (तां) धोबी कपड़े रंगें।
वृक्षा धवंतु (तां) वृक्ष कंपें।
सेवका वृक्षान् लुपंतु (तां) सेवक वृक्ष काटें।

१—आत्मनेपदमें जब रूप चलाना हो तब आत्मनेपदी धातुओंके समान और परस्मैपदमें चलाना हो तब परस्मैपदी धातुओंके समान चलाना।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

लिम्पतु, क्षपतां, सिंचतु, लिपतां, श्रयतां, भरतु, गूहतां, सिंचतु, भजेतां, पचतां, नयतां ।

शुद्ध करो—

सूर्यं त्विषेतां, गृहस्थ दरिद्रान् भरतु, निर्धनं धनिन भजेतां राजा कारागारवासिन मुञ्चतु, प्रभु भृत्यान् आदिशतां, नार्यं वस्त्रं लिपेतां, ब्रह्मचारिण दीव्येतां, भृत्या स्वामिन सेवताम् ।

संस्कृत बनाओ—

श्रावक लोग पापोंका संहार करें । किसान लोग खेत बोवें । गृहस्थ द्रव्य वितरण करें । सेवक भार ढोवें । पुत्रविरह हृदयको व्यथित करे । निर्धन धनियोंका सहारा ले । लड़कियां शरीर लिप्त करें । दो स्वामी सेवकोंको आज्ञा दें । मुनि धर्मका उपदेश दें । कुम्हार घड़ा बनावे । पापी पाप छोड़े । भिक्षुक गांवको जाय । गाय खेतको खावे । विद्यार्थी संस्कृत पढ़े । कोई किसीकी निंदा न करे । धनिक लोग गुणियोंका पोषण करें । राजा धर्मात्मा हो । सब लोग सुखी हों । कोई दुख न पावे ।

चतुर्थ पाठ ।

(१) उत्तम पुरुष

परस्मैपदी धातु

१ अहं जैनेंद्र पठानि ।	मैं जैनेंद्र पढ़ूं ।
अहं विद्यालय गच्छानि ।	मैं पाठशाला जाऊं ।
अहं जिनं अर्चानि ।	मैं जिनकी पूजा करूं ।
अहं विद्यां इच्छानि ।	मैं विद्याको चाहूं ।

१—वर्तमान कालके उत्तमपुरुषके वदामि वदावः, वदामः आदि रूपोंके मि, व म को क्रमसे 'नि, व, म' कर देनेसे इसके रूप हो जाते हैं।

	अहं		मिपाणि ।	मैं	कहां रहूं ।
	अहं	फल	खादानि ।	मैं	फल खाऊं ।
२	आवां		मज्जाव ।	हम दो जने	डूबें ।
	आवां	घटान्	सृजाव ।	हम दो जने	घड़ा बनावें ।
	आवां		जयाव ।	हम दोनों	जीतें ।
	आवां	ग्रामं	व्रजाव ।	हम दो जने	गांव जावें ।
	आवां	पापानि	निंदाव ।	हम दोनों	पापोंकी निन्दा करें ।
	आवां		नदाव ।	हम दोनों	आनंदित हों ।
३	वयं	ग्रामं	गच्छाम ।	हम गांवको	जावें ।
	वयं		पठाम ।	हम सब	हमेशा पढ़ें ।
	वयं	गृहं	विशाम ।	हम	घरमें प्रवेश करें ।
	वयं	समुद्रं	तराम ।	हम	समुद्रको पार करें ।
	वयं	न	क्रंदाम ।	हम न	रोवें ।
	वयं	पुष्पाणि	विकिराम ।	हम	फूल बिखेरें ।

नीचे लिखे शब्दोंके वाक्य बनाओ—

हराम, भवानि, नदाव, नदाम, पचाव, जिघ्राणि, पिबानि, दशाव, दशाम, जीवाम, इच्छाम, सृजाव, जयाम, विशानि, ।

संस्कृत बनाओ—

हम दूध पीवें । मैं पत्र लिखूं । हम दोनों चिरकाल जीवें । हम शत्रु जीतें । हम घरमें प्रवेश करें । मैं दुर्जनको निंदा करूं । हम दो जने पाठ पूछें । मैं तुमको स्पर्श करूं । हम बनारस (वाराणसी) चलें । हम फूल सूंघें । हम यहां रहें । मैं शीघ्र प्रस्थान करूं । मैं कर्म जलाऊं । हम दो जने फल खावें । हम नदी तरें । हम सत्य वाक्य बोलें । मैं पंडित होऊं । हम शास्त्र मनन करें । हम दोनों धन बांटें ।

पंचम पाठ ।

(१) आत्मनेपदी धातु

१ अहं कौरवं न्यसे । मैं इन लोगोंको भाग करूं
अहं तां वहे । मैं उसको व्याहूं
अहं सज्जनं कत्थे । मैं सज्जनकी प्रशंसा करूं
अहं गुणिनं माने । मैं गुणियोंका सम्मान करूं
अहं शङ्के । मैं शंका करूं
अहं ईहे । मैं यत्न करूं
२ आवां सेवकान् क्षमावहे । हम दोनों सेवकोंको क्षमा करें
आवां शिशून् आदरावहे । हम दोनों लड़कोंका आदर करें
आवां पठनं आरभावहे । हम दोनों पढ़ना प्रारंभ करें
आवां दुर्जनान् ईजावहे । हम दोनों दुर्जनोंकी निन्दा करें
आवां धनं ददावहे । हम दोनों धन दें
३ वयं जीवामहे । हम लोग जीवित रहें
वयं तान् स्वजामहे । हम लोग उनका आलिंगन करें
वयं दुष्टान् गर्हामहे । हम लोग दुष्टोंकी निंदा करें
वयं तां उद्वहामहे । हम लोग उससे विवाह करें
वयं श्रयामहे । हम सुस्तावें

निम्नलिखित शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

ईक्षे, श्लाघे, ईजामहे, यते, ईहे, आद्रे, गाहावहे, मनावहे, गर्हावहे, भिक्षे, लज्जे, शंकामहे, लभावहे, रभे स्वजामहे ।

शुद्ध करो—

अहं यशः लभानि । आवां कार्यं आरभाव । वयं त्वां स्वजाम ।

१—वर्तमान कालके आत्मनेपदी धातुओंके आगे लभावहे लभामहे आदिके 'ए' को 'ऐ' कर देनेसे इनके रूपमें बनते हैं ।

अहं दुर्जनान् गर्हेय। आवां सज्जनान् आद्रिये। वयं शत्रून् क्षयामि। वयं शास्त्राणि समावहि। वयं यव भिक्षाम। अहं धनं भजे।

संस्कृत बनाओ—

हम लोग यत्न करें। मैं अच्छे कार्य प्रारम्भ करूं। हम दोनों सज्जनोंकी प्रशंसा करें। हम लोग अपराधियोंको क्षमा करें। हम गुणियोंका आदर करें। मैं शोभूं। हम दो जने बटें। हम द्रव्योंका विनिमय करें। मैं शोभित होऊं। हम दोनों जीतें।

षष्ठ पाठ।

उभयपदी धातु

१ अहं ओदनं पचामि (चे) मैं भात पकाऊं।
अहं पापानि मुञ्चामि (चे) मैं पाप छोड़ूं।
अहं तं न तुदामि (दे) मैं उसको व्यथित न करूं।
अहं क्षेत्रं सिञ्चामि (चे) मैं खेत सींचूं।
अहं क्षेत्रं वपामि (पे) मैं खेत बोऊं।
अहं दुर्जनान् भरामि (रे) मैं दुर्जनोंका पालन करूं।
२ आवां धनं गूहाव (वहै) हम दोनों धन छिपावें।
आवां गुणिनम् आश्रयाव (वहै) हम दो जने गुणियोंका आश्रयण।
आवां जिनं भजाव (वहै) हम दो जने जिनभगवान्‌को भजें।
आवां अर्थं याचाव (वहै) हम दो जने धन मांगें।
आवां धर्मं उपदिशाव (वहै) हम दो जने धर्मका उपदेशें।
३ वयं दृषदः क्षिपाम (महै) हम लोग पत्थर फेंकें।
वयं वृक्षान् लुम्पाम (महै) हम वृक्षोंको काटें।
वयं वस्त्राणि वयाम (महै) हम कपड़े बुनें।
वयं दुकूलं रञ्जाम (महै) हम दुकूल (धोती दुपट्टा) रंगें।
वयं गृहं लिपाम (महै) हम घर लीपें।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

क्षपाम, भजे, वहानि, तुदामहै, सिचाम, भराणि, याचे, याजानि, भजावहै, श्रयाम, रजानि, वहावहै, नयानि ।

अर्थ करो—

अहं जिनं श्रयामहै । अहं पापं मुचाम । आवां क्षेत्रं वपामहै । वयं तां तुदै । अहं लतां सिचाम । आवां जिनं यजामहै । वयं वस्त्राणि रजाव । वयं शत्रून् क्षपावहै ।

संस्कृत बनाओ—

हम किसीको पीड़ा न दें । हम दो जने पेड़ सींचें । मैं रस्सी लाऊं । हम लोग वैरियोंको मारें । हम भगवान्का सहारा लें । हम बोझ ढोवें । हम लोग नौकरोंको आज्ञा दें । हम धोती (साटी) रंगें । मैं जौ (यव) भूनूं । हम ढेले (लोष्ठ) फेंकें ।

सप्तम पाठ ।

(१) मध्यम पुरुष ।

परस्मैपदी धातु

१ त्वं	लतां	उक्ष ।	गृ.	लता सींच ।
त्वं	कथां	गद ।	गृ.	कथा कह ।
त्वं	विद्यां	भज ।	गृ.	विद्या पढ़ ।
त्वं	धनं	वितर ।	गृ.	धन बांट ।
त्वं	मां	तर्ज ।	गृ.	इस लड़केको तंग मत कर ।

१—परस्मैपदी धातुओंके मध्यमपुरुषके आज्ञा (लोट) कालमें रूप बनाने होंगे तो वर्तमान कालके मध्यम पुरुषके उक्षसि उक्षथः, उक्षथ आदि रूपोंमें क्रमसे, सिकालोप 'थः' को 'तं' और 'थ' को 'त' कर देना चाहिये।

अहं दुर्जनान् गर्हेय । आवां सज्जनान् आदरे । वयं शत्रून् क्षमामि । वयं शास्त्राणि समाचरे । वयं धन लिखाम । अहं वस शये ।

संस्कृत बनाओ—

हम लोग यत्न करें । मैं अच्छे कार्य प्रारंभ करूं । हम दोनों सज्जनोंकी प्रशंसा करें । हम लोग अपराधियोंको क्षमा करें । हम गुणियोंका आदर करें । मैं दीप्तवान् । हम दो जने बढ़ें । हम द्रव्यका विनिमय करें । मैं शोभित होऊं । हम दोनों सोवें ।

षष्ठ पाठ ।

उभयपदी धातु

१ अहं ओदनं पचानि (चे) मैं चावल पकाऊं ।
अहं पापानि मुञ्चानि (चे) मैं पाप छोडूं ।
अहं तं न तुदानि (दे) मैं उसको व्यथित न करूं ।
अहं क्षेत्रं सिञ्चानि (चे) मैं खेत सींचूं ।
अहं क्षेत्रं वपानि (पे) मैं खेत बोऊं ।
अहं दुर्बलान् भराणि (रे) मैं दुर्बलोंका पालन करूं ।

२ आवां धनं गूहाव (वहै) हम दोनों धन छिपावें ।
आवां गुणिनं आश्रयाव (वहै) हम दो जने गुणिजनोंका आश्रय लें ।
आवां जिनं भजाव (वहै) हम दो जने जिनभगवान्‌को भजें ।
आवां अर्थं याचाव (वहै) हम दो जने धन मांगें ।
आवां धर्मं उपदिशाव (वहै) हम दो जने धर्मका उपदेश दें ।

३ वयं दृषदः क्षिपाम (महै) हम लोग पत्थर फेंकें ।
वयं वृक्षान् लुम्पाम (महै) हम वृक्षोंको काटें ।
वयं वस्त्राणि वयाम (महै) हम कपड़े बुनें ।
वयं दुकूलं रजाम (महै) हम दुकूल (धोती दुपट्टा) रंगें ।
वयं हर्म्यं लिपाम (महै) हम घर लीपें ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

क्षपाम, भजे, वहानि, तुदामहै, सिचाम, भराणि, याचे, याजानि, भजावहै, श्रयाम, रजानि, वहावहै, नयानि।

शुद्ध करो—

अहं जिनं श्रयामहै। अहं पापं मुञ्चाम। आवां चौरं वधामहै। वयं तां तुदे। अहं लतां सिचाम। आवां जिनं यजामहै। वयं वस्त्राणि रजाव। वयं शत्रून् क्षपावहै।

अनुवाद बनाओ—

हम किसीको पीड़ा न दें। हम दो जने पेड़ सींचें। मैं रस्सी लाऊं। हम लोग वैरियोंको मारें। हम भगवान्‌का सहारा लें। हम बोझ ढोवें। हम लोग नौकरोंको आज्ञा दें। हम धीली (माटी) रंगें। मैं जौ (यव) भूंजूं। हम ढेले (लोष्ठ) फेंकें।

सप्तम पाठ।

(१) मध्यम पुरुष।

परस्मैपदी धातु

१	त्वं	लतां	उक्ष।	ग	लता सींच।
	त्वं	कथां	वद।	ग	कथा कह।
	त्वं	विद्यां	पठ।	ग	विद्या पढ़।
	त्वं	धनं	वितर।	ग	धन बांट।
	त्वं	तां	तर्ज।	ग	उस लड़कीको डांट मार।

१—परस्मैपदी धातुओंके मध्यमपुरुषकी आज्ञा (लोट्) अपने रूप बनाने होंतो वर्तमान कालके मध्यम पुरुषके एकवचन उत्तम उत्तम आदि रूपोंसे क्रमसे, विसर्गलोप 'थ' को 'त' और 'थ' को 'त' कर देना चाहिये।

त्वं	पण्डित	भव।	तू	पण्डित हो।
२ युवां		जीवतं।	तुम दोनों	जीवित रहो।
युवां	पुष्पाणि	विकिरतं।	तुम दो जने	फूल बखेरो।
युवां	इमां	पश्यतं।	तुम दोनों	इस औरतको देखो।
युवां	लतां	सींचतं।	तुम दो जने	लताको सींचो।
युवां	नदीं	क्रामतं।	तुम दो जने	नदीको लांघो।
३ यूयं	कुमारीं	तर्जत।	तुम लोग	कुमारीको मारो।
यूयं	ग्रामं	गच्छत।	तुम लोग	गांवको जाओ।
यूयं	गृहं	विशत।	तुम लोग	घरमें प्रवेश करो।
यूयं	अपराधान्	मर्षत।	तुम लोग	अपराधोंको क्षमा करो।
यूयं	जिनं	यजत।	तुम लोग	जिन भगवानकी पूजा करो।
यूयं	दुग्धं	पिबत।	तुम लोग	दूध पीओ।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

भूप क्रामत लिख गदत, चर्चत, धाव, धाव्य, अर्जत, इच्छत, भवत, नमत खादत, पृच्छत, पठत, जपत, नयाम, जय जीवत, क्रीडत, लिपत।

संस्कृत बनाओ—

तुम वनको जाओ। तुम लोग पाठ पढ़ो। जिन भगवानको पूजो। तुम दो जने धन कमाओ। किसीकी निंदा न करो। तुम दो जने सर्वदा आनन्दित होओ। कपड़े बुनो। पापोंको छोड़ो। तुम लोग कोई बात पूछो। फूल बिखेरो।

अष्टम पाठ।

आत्मनेपदी धातु

१ त्वं		आयस्व। तुम	[illegible] करो।
त्वं	पथे	वेष्टस्व। तुम	पथको वेष्टित करो।
त्वं	विद्यां	ईहस्व। तुम	विद्याको चाहो।
त्वं	सुजनान्	कत्थस्व। तुम	सज्जनोंकी प्रशंसा करो।
त्वं	नदीं	ईक्षस्व। तुम	नदीको देखो।
२ युवां	तान्	श्लाघेथां। तुम दो जने	उनकी प्रशंसा करो।
युवां	शास्त्रं	लोचेथां। तुम दो जने	शास्त्रोंको देखो।
युवां	धनं	कांक्षेथां। तुम दो जने	धनकी इच्छा करो।
युवां	गंगां	गाहेथां। तुम दो जने	गंगाका अवगाहन करो।
३ यूयं	अन्नं	भिक्षध्वं। तुम सब	अन्न मांगो।
यूयं		एधध्वं। तुम सब	बढ़ो।
यूयं		शोभध्वं। तुम सब	शोभित होओ।
यूयं	नानावस्तूनि	मयध्वं। तुम सब	नाना वस्तुओंका विनिमय करो।
यूयं		शङ्कध्वं। तुम सब	शंका करो।
यूयं		दीक्षध्वं। तुम सब	दीक्षा लो।
यूयं		यतध्वं। तुम सब	यत्न करो।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अयस्व, तिजध्वं, सहस्व, ईजस्व, यतध्वं, बाधस्व, भिक्षेथां, शिक्षध्वं, ईक्षेथां।

१—आत्मनेपदी धातुओंके आज्ञा (लोट्) में मध्यमपुरुषके यदि रूप बनाने हों तो वर्तमान कालके मध्यमपुरुषके आगेके आने वाले, आगेके आखिरके 'से थे ध्वे' को क्रमसे स्व, थां और ध्वं कर देना चाहिये।

संस्कृत बनाओ—

तुम लोग ईश्वरके दर्शन करो। तुम लोग हमको क्षमा करो। तुम दो जने शास्त्रोंका अवगाहन करो। तुम मुनियोंको प्रणाम करो। तुम लोग शंका करो। तुम दुर्जनोंकी निंदा करो। तुम लोग शत्रुओंको क्षमा करो।

शुद्ध करो—

यूय पण्डितान् श्लाघस्व। त्वं जिनं कत्थध्व। युवां धन खादेथां। त्वं गंगां ईक्षस्व। यूय द्रव्यजातानि भयस्व। युवां मां तिजतं। यूय पुष्पाणि किरस्व।

नवम पाठ।

उभयपदी धातु

१ त्वं भार वह (स्व) तुम भार ढोओ।
त्वं भृत्यं आदिश (स्व) तुम नोकरको आज्ञा दो।
त्वं ईश्वरं भज (स्व) तुम भगवान्‌को सेवो।
त्वं धनानि गूह (स्व) तुम धन छिपाओ।
त्वं आम्रं चूष (स्व) तुम आमको चूसो।
त्वं लिप (स्व) तुम भीत लीपो।
२ युवां दरिद्रान् भरतं (ेथां) तुम दो जने दरिद्रोंका पालन करो।
युवां शत्रून् पपतं (ेथां) तुम दो जने शत्रुओंको मारो।
युवां जिनान् यजतं (ेथां) तुम दोनों जिनकी पूजा करो।
युवां राजतं (ेथां) तुम दो जने शोभित होओ।
युवां क्षेत्रं वपतं (ेथां) तुम दो जने खेत बोओ।
३ यूयं ईश्वरं श्रयत (ध्वं) तुम लोग भगवानका सहारा लो।

यूयं पत्रं सृजत (ध्व) तुम लोग पत्र बनाओ।

यूय गात्र लिपत (ध्व) तुम लोग शरीर लिप करो।

यूय तरुन् लु'पत (ध्व') तुम लोग पेड़ काटो।

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

यज, आदिशेथा, भजस्व, गृहध्व, सु'चत, आश्रयेथा, याचत, सि'चत, भरध्व, तुद, कर्षस्व, क्षपध्वं खनेथां।

यह करो—

त्वं भृत्य आदिशध्व। युवां तान् तुद। यूय त यजत। त्व लता लु'पत। यूय इधन आहर। युवा चैत्र सिंचध्व।

संस्कृत बनाओ—

तुम कपड़े रंगो। तुम सब लोग सच्चे धर्मका सहारा लो। तुम दो जने विद्या मांगो। तुम किसीको दुख न दो। तुम लोग भी भूलो। तुम शत्रुओंको मारो। तुम लोग दुर्जनोंको काटदो। तुम दो जने इस निरपराधीको छोड़ दो। तुम लोग कूआं खोदो। तुम बीज बोओ। तुम दोनों खेत जोतो।

परिशिष्ट।

(१) संबोधन प्रणाली

स्वरांत पुलिंग (२) अकरांत

१ भो कृषक! इदं स्वास्थ्य नाम न भवति। हे कृषीवल (किसान) यह स्वास्थ्य नहीं है।

१—दूसरे वाक्यमें लगे हुए आदमीको अपनी तरफ सम्मुख करनेके लिये जो वाक्य बोला जाता है उसे संबोधन कहते हैं। शब्दोंकी कर्ता (प्रथमा) के रूप जो पहिले बत लाये गये हैं वही संबोधनके भी समझना। परंतु एक वचनमें भेद होता है। २ अकारांत शब्दोंके संबोधनके एक वचनमें विसर्ग नहीं होते।

हे बाल ! त्वं किमर्थं दर्पं कृतवान्—हे बच्चे ! तूने किसलिये घमंड किया।

हे पुत्र ! त्वं कुत्र गत—हे पुत्र ! तू कहाँ गया।

भो विद्याधर ! त्वं किमिच्छसि—हे विद्याधर ! तू क्या चाहता है।

२ भो पथिकौ ! युवां कुत्र गच्छथ—हे रास्तागीरो ! तुम दोनों कहाँ जाते हो।

भो महाभागौ ! युवां कुत्रत्यौ—हे महाभागो ! तुम दोनों कहाँके रहने वाले हो।

भो विप्रौ ! किं युवां मदिरां पिबथ भो ब्राह्मणो ! क्या तुम दोनों मदिरा पीते हो।

३ भो सज्जनाः ! यूयं किं विषण्णाः—हे सज्जनो ! तुम क्यों खेद खिन्न हो।

भो पण्डिताः ! यूयं किं पठथ—हे पण्डितो ! तुम लोग क्या पढ़ते हो।

भो छात्राः ! युष्मान् अहं पृच्छामि—हे विद्यार्थियो ! तुम लोगोंसे मैं पूछता हूं।

(१) इकारांत

१ भो कवे ! त्वं किं रचयसि—हे कवि ! तुम क्या रचते हो।

भो मुने ! त्वं अपराधिनं क्षमस्व—हे मुनि ! तुम दोषीको क्षमा करो।

भो अग्ने ! त्वं बालं किं दहसि—हे अग्नि ! तू बालकको क्यों जलाता है।

भो (२) सखे ! मां रक्ष—मित्र ! मेरी रक्षा करो।

२ भो अग्नी ! युवां किं वनं दहथ—हे अग्नियो ! तुम दोनों क्यों वनको जलाते हो।

भो ऋषी ! युवां किं गृहं गच्छथ—हे ऋषियो ! तुम दोनों क्यों घरको जाते हो।

भो अतिथी ! युवां किं धनमिच्छथ—हे अतिथियो ! तुम दोनों क्यों धन चाहते हो।

---

१ इकारांत शब्दके एक वचनमें 'इ' के स्थानमें 'ए' और विसर्गका लोप हो जाता है।

२—सखि शब्दके द्विवचन बहुवचनके सब रूप (प्रथमा) के समान होंगे।

३ भो अरयः ! यूयं अस्मान् तितिक्षध्वं—अयि शत्रुओ ! तुम लोग हमको क्षमा करो।

भो नृपतयः ! यूयं प्रजाः रक्षत—हे राजाओ ! तुम लोग प्रजाकी रक्षा करो।

भो रवयः ! युष्मान् वयं अर्चाम—ए सूर्यो ! तुम्हें हम लोग पूजते हैं।

(१) उकारांत

१ भो साधो ! त्वामहं प्रणमामि—हे साधु ! मैं तुमको प्रणाम करता हूं।

भो इन्दो ! त्वं किरणं विकिर—हे चंद्र ! तू किरणोंको फैला।

भो (२) क्रोष्टो ! त्वं किं क्रंदसि—हे शृगाल ! तू क्यों रोता है।

भो प्रभो ! त्वं सेवकं तितिक्षस्व—हे स्वामी ! तुम सेवकको क्षमा करो।

२ भो शिशू ! युवां किं प्रलपथः—हे लड़को ! तुम दोनों क्यों प्रलाप करते हो।

भो गुरू ! युवां छात्रान् पृच्छथः—हे गुरुओ ! तुम दोनों छात्रोंको पूछो।

भो विभावसू ! युवां दुर्जनान् दहथः—हे अग्नियो ! तुम दोनों दुर्जनोंको जलाओ।

३ भो बान्धवाः ! यूयं ईश्वरं अर्चत—हे भाइयो ! तुम लोग ईश्वरको पूजो।

भो तरवः ! यूयं छायां वितरत—हे वृक्षो ! तुम छायाको देओ।

भो प्रभवः यूयं दोषिणः तितिक्षध्वं—हे प्रभुओ ! तुम लोग दोषियोंको क्षमा करो।

(२) ऋकारांत

१ भो उद्गातः ! दातारं अर्च (४)—हे यज्ञ करानेवाले ! तू दाताको पूज।

भो दातः ! त्वं धनं वितर—हे दाता ! तू धन दे।

१—संबोधनके एक वचनमें उकारांत शब्दोंके अन्तके उकारको ओकार और विसर्गों का लोप हो जाता है। २ क्रोष्टु के द्विवचन बहुवचन प्रथमाके समान होंगे ३ ऋकारान्तोंके अन्तके ऋकारको जगह 'अ' हो जाता है। ४—युष्मद अस्मद शब्दका प्रयोग न करनेपर भी उनका अर्थ रहने मात्रसे ही मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुषकी क्रिया व्यवहारमें लाई जाती है।

भो श्रोतः ! त्वं किं पृच्छसि—हे श्रोता ! तू क्या पूछता है।

२ भो जेतारौ ! युवां मत्कुन् अर्दत—हे जीतनेवाले ! तुम दोनों मत्कुणोंको पीड़ा दो।

भो दोग्धारौ ! युवां कुत्र गच्छथ—हे दुहनेवाले ! तुम दोनों कहां जाते हो।

भो वक्तारौ ! युवां किं वदथ—हे कहनेवाले ! तुम दोनों क्या कहते हो।

३ भो ज्ञातारः ! यूयं किं उपदिशथ—हे जानने वाले ! तुम लोग क्या उपदेश देते हो।

भो हन्तारः ! यूयं किं तान् हतवंत—हे हि सको ! तुम लोगोंने क्यों उनको मारा।

भो कुमारः ! यूयं किमीहध्वे—हे कुमारो ! तुम लोग क्या प्रयत्न करते हो।

हिंदी बनाओ—

कुमार ! तातो (पिता) मां बाधयति। सुनन्द ! किमर्थमिह (यहां) आगमनं। हा पुत्र शंखचूड ! कथमद्य (आज) त्वां म्रियमाणमहं द्रक्ष्यामि। सुभग ! पितरौ ते (तुम्हारे) मातौ। भो फणिपते (सांप) किमिवमुद्विग्नोऽसि (हो)। भो पक्षिराज ! (गरुड़) तूष्णीं (चुप) तिष्ठ क्षणमेकं, यावत् (जबतक) पतौ स्वपितरौ प्रणमामि। वत्स ! आगच्छ आगच्छ, परिष्वजस्व माम्। हा शंखचूडहतक ! (दुष्टशंखचूड) कथं त्वं गर्भस्थ एव न मृत यस्त्वमेव प्रतिपक्ष मृत्युसदृशं दुःखमनुभवसि। हा आर्यपुत्र ! (पतिकेलिये सम्बोधन) अतिदुष्कृतकारिणो खलु (निश्चयसे) अहं। या ईदृशं (ऐसे) आर्यपुत्र (पति) पश्यंती अपि जीवितं न परित्यजामि। साधो ! साधु (अच्छा) खलु इदं, अनुमोदामहे वयं। सर्वथा (सबतरहसे) सावधानो भव। शंखचूड ! त्वमपि इदानीं (इससमय) स्वगृहं गच्छ। हा सुत ! हा वत्स ! हा गुरुजनवत्सल ! ददस्व प्रतिवचनं (उत्तर)। हा प्रणयि (प्रेमो)

तनयवत्सल (प्रिय) हा सर्वगुणनिधे! त्वं कुत्र गतः। तनय! (पुत्र) त्वमद्य परलोकं गतोऽतो धैर्यं निराधारं जातं, अशरणो (शरणरहित) विनयः क्व शरणं गच्छतु, क्षमां वोढुं (धारण करनेके लिये) कोऽन्यः क्षमः (समर्थ) हत सत्य सत्य, व्रजतु च कृपा क्व (कहां) पश्य अपथा (दीन विचारी) जगत् शून्यं जातं। महाराज! जीमूतकेतो! मा एव माचर।

संस्कृत बनाओ—

पिता! मुझे आज्ञा दो। भाई! ऐसा काम न करो। उपदेशको! अधर्मका उपदेश न दो। भर्तारो! अपनी अपनी प्रजाका पालन करो। साधुलोगो! वीतराग हो जाओ। भिक्षुको! भिक्षा वृत्ति अच्छी नहीं है। विद्यार्थियो! परिश्रम करो। लड़को! पढ़ो। भाई! क्यों रोते हो। ज्ञाताओ! मूर्खों को उपदेश दो।

नोट—पृष्ठ १९९के परिशिष्टमें दिये गये दीर्घ ईकारांत ऐकारांत ओकारांत औकारांत शब्दोंके रूप संबोधनमें कर्ता (प्रथमा) के समान ही होते हैं।

(१) व्यञ्जनांत पुल्लिंग

चकारांत—हे जलमुक्! जलं किं न मुञ्चसि—हे बादल! तू पानी क्यों नहीं छोड़ता है।

जकारांत—भो सम्राट्! प्रजा रक्ष—अयि चक्रवर्ती! प्रजाकी रक्षा कर।

जकारांत—भो भिषक्! प्रणमामि त्वा—हे वैद्य! मैं तुमको प्रणाम करता हूं।

तकारांत—भो भूभृत्! नीतिज्ञो भव—ऐ! राजा! तू नीतिका ज्ञाता हो।

मत्भागांत—भो धीमन्! (२) धर्ममनुतिष्ठ—ऐ! बुद्धिमान! तू धर्म कर।

म (व) त् भागांत—भो धनवन्! दरिद्रान् भर—हे धनाढ्य! गरीबोंकी रक्षा कर।

१—व्यञ्जनांत शब्दोंके संबोधनके द्विवचन बहुवचनके रूप कर्ता (प्रथमा) के समान होते हैं। २—मत् (वत्) भागांतोंके संबोधनके एकवचनमें अन्तके अक्षरसे पहिले अक्षरको दीर्घ नहीं होता।

अत् (शतृ)—भो गायन् ! त्वं किं गदसि—हे गाते हुए ! तू क्या कहता है।

ऋकारांत—भो सुहृत् (द्) त्वं मां रक्ष—हे मित्र ! तू मेरी रक्षा कर।

अन्भागांत—भो (१) राजन् ! त्वं किमितिमुदितो भवसि—हे राजा ! तू ऐसा क्यों प्रसन्न होता है।

अन्भागांत—भो शर्मन् ! त्वं किं न पठसि—हे ब्राह्मण ! तू क्यों नहीं पढ़ता।

इन्भागांत—भो तपस्विन् ! त्वं सत् तपः आचर—हे तपस्वी ! तू तपश्चरण कर

अस्भागांत—भो (२) चंद्रमः ! त्वं प्रकाशस्व—हे चंद्र ! तू प्रकाशित हो।

वस्भागांत—भो विद्वन् ! त्वां गुरुः किमादिदेश—हे विद्वान् ! गुरुने तुम्हें क्या आज्ञा दी।

ईयस् भागांत—भो गरीयन् ! त्वं किं तान् निंदसि—हे बड़े आदमी ! तू उनकी क्यों निंदा करता है।

सं० करो—

भो बुद्धिमान् बालक। भो कपटी मुने। भो धनवती युवक। भो मायाचारिणि माधवी। भो गर्वित दास। भो माननीय भूपती। भो विद्वान् राजा। भो प्रकाशक चन्द्रमा। हे दुष्ट चलौका (जगली) भो दयालु स्वामी। भो निर्दयी यक्षन्। भो शिक्षित सभासदो।

(२) स्त्रीलिंग शब्द

आकारांत—हे बालिके ! त्वं किं न पठसि—लड़की ! तू क्यों नहीं पढ़ती।

१—नकारांत शब्दोंके संबोधनके एक वचनमें कुछ अन्तर नहीं होता पद शब्द ही रहते हैं। २—असकारांत शब्दोंके अन्तके अक्षरसे पहिले अक्षरको दीर्घ नहीं होता। और शेष रूप प्रथमाके एक वचनका सा ही होता है। ३—संबोधनके एक वचनमें ही (प्रथमा) कर्तासे रूपमें भेद होता है द्विवचन बहुवचनमें नहीं इसलिये एकवचनके ही उदाहरण दिये गये हैं।

इकारांत—हे बुद्धे ! कथं त्वं सन्मार्गं न गच्छसि—री बुद्धि ! तू क्यों अच्छे मार्गमें नहीं जाती।

ईकारांत—हे (१) कुमारि ! किं त्वं नदीं व्रजसि—हे कुमारी ! क्यों तू नदीको जाती है।

उकारांत—हे धेनो ! त्वं वत्सं किं मुञ्चसि—हे गाय ! तू बछड़ेको क्यों छोड़ती है।

ऊकारांत—हे (२) श्वश्रु ! त्वं वधूं किं तर्जसि—हे सास ! तू बहूको क्यों डाटती है।

ऋकारांत—हे मातः ! मां रक्ष—हे माता ! मेरी रक्षा कर।

चकारांत—हे जिनवाक् ! मूर्खान् किं न उपदिशसि—हे जिनवाणी ! तू मूर्खों को क्यों नहीं उपदेश देती।

दकारांत—हे संपत् (द्) ! त्वं किं चपला—हे संपत् ! तू क्यों चपल है।

धकारांत—हे क्षुत् ! त्वं मानवान् किं तुदसि—हे भूख ! तू मनुष्योंको क्यों पीड़ा देती है।

तकारांत—हे योषित् ! त्वमिदं किं कृतवती—री औरत ! तूने यह क्या किया।

इर्भागांत—हे गीः ! त्वं जनान् भव—हे वाणी ! तू लोगोंको संतुष्ट कर।

उर्भागांत—हे पूः ! त्वमधिकं शोभसे—हे नगरी ! तू अच्छी तरह शोभती है

भकारांत—हे ककुभ् (प्) त्वमद्य किं निर्मला—हे दिशा ! तू आज क्यों निर्मल है।

शुद्ध करो—

भो गुणवती कन्ये ! भो बुद्धिमति सुशीला ! हे अम्बे (३) !

---

१ २ ३ अम्बा (माता) के अर्थ को कहनेवाले दो स्वरवाले अम्बा आदिक दीर्घ आकारांत, तथा स्त्रीलिंग दीर्घ ईकारांत और ऊकारांत शब्दोंके अन्तका स्वर संबोधनके एक वचनमें ह्रस्व हो जाता है।

भो तपस्विन्यौ योषित्! भो गर्विता वधू ! हे लघ्वी धेनु ! हे दयावती दुहिता। हे विपद ! हे आधि जननी !

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पिपीलिके, अम्ब, औषधे, तरी, नदी, पटीयस्यौ, रेणी, रज्जव,, वधु, श्वश्रौ, ननान्दः, मातर, कविवाक्, परिषत्, क्षुत्, सरित् स्त्री, (१) भाव, स्वस, अम्बिके।

हिन्दी बनाओ—

हे सखि! आपदं मा (मत) भजस्व। हे दासि! कामो मामस सुदति। हे मृगीनयने। त्वं किमिदमाचरसि। प्रिये! इमां शोभां पश्य। हे सुमुखि! पुनः पुनस्त्वामहं वदामि। हे योषित्! त्वमतिकठोरा वर्तसे।

नपुंसकलिंग

अकारांत—हे पुष्प! त्वं कथं सुगंधं न वितरसि—हे फूल! तू क्यों सुगंधि नहीं देता।

इकारांत—हे वारि (रे) त्वं भूमिं उक्ष—हे जल! पृथिवीको सींच।

उकारांत—हे मधु (धो) त्वं महत् पापं वितरसि—हे मद्य! तू बड़ा पाप देता है।

ऋकारांत—हे कर्तृ (र्त) त्वं साधु कार्यं अनुतिष्ठ—हे कर्ता! तू अच्छे काम कर।

(नोट—शेष व्यंजनांत शब्दोंके रूप कर्ता (प्रथमा) के समान ही सब वचनोंमें होते हैं। इसलिये यहां नहीं लिखे गये हैं।)

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अक्षि, पद्म, कुले, अगुरो, वस्तु, कर्तृ, गुणवत्, वेश्मन्, (२) चर्मन्, पय मन हवि, चक्षु, धनु।

१—स्त्री आदि एक स्वरवाले दीर्घ ईकारांत—ऊकारांत शब्दोंको ह्रस्व नहीं होता।

२—नकारांत शब्दोंके नपुंसक लिंगमें संबोधन एक वचनके रूप दो प्रकारके होते हैं एक तो उनके अन्तके नकारका लोप होनेसे। जैसे—वेश्म आदि। दूसरे पुंलिंगके समान नकारका लोप न होनेसे जैसे वेश्मन्, चर्मन् आदि।

प्रश्न वरो—

भो मधवत् पुष्प। हे नीच पीत। विशाल अगुरुः। भो समधुर मधु। हे अधर्म चक्षु। हे अकार्यकारि कर्ता। हे सुपय, सरसी।

साहित्य परिचय

संस्कृत बनाओ—

किसी समय राजगृह नगरमें (राजगृहे) एक विशाल बौद्ध-साधुसंघ आया। यह बात महाराज श्रेणिकने भी जानी। श्रेणिक रानी चेलनाके पास गये और साधुओंकी प्रशंसाकी कि—"हे प्यारी! बौद्ध गुरु अतिज्ञानी हैं। उत्कृष्टतपका आचरण करते हैं समस्त संसारको देखते हैं। यदि कोई (कश्चित्) उनसे कुछ पूछता है तो वे सब सत्य बातें कहते हैं। आत्माको ध्याते हैं उसे मोक्षको ले जाते हैं (नयति) एवं यथार्थपदार्थोंका उपदेश देते हैं। उनका शरीर देदीप्यमान है।" रानी चेलनाने कहा—प्राणनाथ! यदि वे साधु ऐसे पवित्र और ध्यानी हैं तो मैं भी उनके दर्शन करूंगी। महाराज! आप यह बात सत्य मानिये कि यदि वे साधु ऐसे हो सच्चे होंगे तो मैं बौद्ध धर्मको स्वीकार करूंगी (स्वीकरिष्यामि) मैं आग्रह नहीं करती कि जैन धर्मको ही धारण करूं परंतु बिना परीक्षाके मैं इसे नहीं छोडूंगी। क्योंकि वे मनुष्य मूर्ख हैं जो हेयोपादेयको नहीं जानते। तत्पश्चात् राजाने नौकरोंको आज्ञा दी कि (यत्) एक मंडप बनाओ। सेवकोंने मंडप बनाया। बौद्ध साधुओंने वहां ध्यान प्रारम्भ किया। रानी भी वहां शीघ्र ही आई और बौद्ध गुरुओंसे पूछने लगी। समीपस्थित एक ब्रह्मचारीने कहा कि—हे माता! समस्त साधु ध्यान कर रहे हैं। मोक्ष स्थित हैं देह सहित भी सिद्ध हैं इसलिये ये उत्तर नहीं देते हैं। रानी चेलना कुछ न बोली बाहर आकर

भो तपस्विन्यो योषित्! भो गर्विता वधू ! हे कृष्णो धेनु! हे दयावता दुहता ! हे विपद ! हे साध्वि जननी!

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

पिपीलिके, अम्ब, धोवधे, तरी, नदी, पटोयस्यो, रैयो, रज्जव वसु, भार्यो, ननांद, मातर, वधिवाक्, परिषद्, युत्, सरित्, द्यो, (१) पाप, सुप, पत्रिके।

हिन्दी बनाओ—

हे सखि! ध्यायध मा (मत) मलस्व। हे दासि! कामो मामस सुदति। हे भगोरथने। त्व किमिदमाचरसि। प्रिये! इमां शोभा पश्य। हे सुमुखि! पुन पुनस्त्वामह वदामि। हे योषित्! त्वमतिकठोरा वर्तसे।

नपुंसकलिंग

अकारांत—हे पुष्प! त्व कथ सुगध न वितरसि—हे फूल! तू क्यों सुगंधि नहीं देता।

इकारांत—हे वारि (हे) त्वं भूमि सच—हे जल! पृथिवीको सींच।

उकारांत—हे मधु (धो) त्व महत् पाप वितरसि—हे मधु! तू बड़ा पाप देता है।

ऋकारांत—हे कर्तृ (त) त्वं साधु कार्यं अनुतिष्ठ—हे कर्ता! तू अच्छे काम कर।

(नोट—शेष व्यंजनांत शब्दोंके रूप कर्ता (प्रथमा) के समान ही सब वचनोंमें होते हैं। इसलिये यहां नहीं लिखे गये हैं।)

नीचे लिखे शब्दोंसे वाक्य बनाओ—

अक्षि, पद्म, कुले, मधुरो, वस्तु, कर्तृ, गुणवत् वेश्मन, (२) वर्मन, पथ मन हवि, चक्षु, धनु।

१—ओ औ आदि एक स्वर वाले दीर्घ ईकारांत—ऊकारांत शब्दोंको ह्रस्व नहीं होता।
२—नकारांत शब्दोंके नपुंसक लिंगमें संबोधन एक वचनके रूप दो प्रकारके होते हैं एक तो उनके अन्तके नकारका लोप होनेसे। जैसे—वेश्म आदि। दूसरे पुंलिंगके समान नकारका लोप न होनेसे जैसे वेश्मन, कर्मन् आदि।

(बहिरागत्य) मण्डपको आग द्वारा जला दिया तथा दूर खड़ी हो गई। पश्चात् राजमन्दिरमें चली गई।

हिंदी समाप्ती—

राज्ञी चेलना वदतिस्म श्रेणिकं प्रति। भो नरनाथ! तिष्ठत्व मा, अहमेकां विचित्रामाख्यायिकां (कहानी) गदामि। तां श्रुत्वा मदीयमपराधं निर्णय। नाथ! अत्र भरतदेशस्था कौशाम्बी नाम्नी (२) राजते स्म नगरी काचित्। वसुपालो नृपो रक्षति स्म ताम्। तत्र श्रेष्ठिनौ सागरदत्तसुभद्रदत्तनामानौ वैश्यौ परस्परं महतीं मित्रतामुपगतौ। एकदा एकस्थानस्थितौ तौ अन्योन्य—स्नेहवर्धिकाः (परस्परके प्रेमको बढानेवाली) अनेका वार्ता वदतः स्म। स्नेहपराकाष्ठां (प्रेमकी हद दर्जा) दर्शयितुकामः (दिखाने की इच्छा वाला) सुभद्रदत्तः सागरदत्तं गदति स्म। 'प्रिय सागरदत्त! यदि भाग्यवशतो अहं पुत्रं लप्स्ये त्वं च पुत्रीं लप्स्यसे तदा स पुत्रः तां पुत्रीमेव उद्वक्ष्यते न अन्यां, यदि त्वं पुत्रमहं च पुत्रीं तदापि तथा एव भविष्यति, इति। इदं श्रुत्वा सागरदत्तो भणति स्म "भवत्कथनमहमवश्यमेव करिष्यामि" इति। अथ श्रेष्ठिसागरदत्तभार्या वसुमती दैववशतः सर्पाकृतिधारकं भयावहं (डरावने वाला) पुत्रमेकं सूतवती (पैदा करती हुई)। तन्नाम (उसका नाम) वसुमित्रो भवतिस्म एवं सुभद्रदत्तधर्मपत्नी सागरदत्ता चन्द्रवदनां (१) मनोहराङ्गीं सुवर्णवर्णां नामागुण—आकारां (खान) नागदत्ताभिधां (२) सुतामुत्पादयामास (उत्पन्न करती हुई) क्रमशः कुमारो कुमारी च युवावस्थामधिगतौ। वसुमित्रो नागदत्तामुद्वहते स्म। ततस्तौ सांसारिकसुखमिन्द्रियजन्यमनुभवतः स्म। कदाचित् सागरदत्ता सर्वोत्तमभूषणभूषितां चन्द-

१—चन्द्रमाके समान मुखवाली। २—अभिधा नाम।

शब्द अर्थ

तड़ाग (पु०) तालाब।
तंडुल (पुं०) चावल।
तृष्णा (स्त्री०) चाह, प्यास।

द

दावानल (पु०) वनकी आग।
दुरन्त (त्रि०) अन्तमें दुःख देने वाला।
दैवज्ञ (पुं०) पुरोहित।
दोग्धृ (पु०) दुहनेवाला।

ध

धूसर (त्रि०) मटीला कीके रंगका।
धृत (त्रि०) धारणकिया हुआ। पकड़ा गया।
धौत (त्रि०) धोया गया, पवित्र।

न

नद (पुं०) तालाब।
नरपुंगव (पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य।
नव (त्रि०) नया, नवीन।
नवोढा (स्त्री०) नई विवाहित।
निरूपयन्ती (स्त्री) देखती हुई।
निर्बोध (त्रि०) मूर्ख।
नीड (पु०) घोसला।
नृशंस (त्रि०) क्रूर, मनुष्य घातक।

शब्द अर्थ

प

पयस्विनी (स्त्री०) दूध या पानी वाली।
पर (त्रि०) दूसरा, तत्पर।
परशु (पु०) फरसा।
परायण (त्रि०) तत्पर।
पलायमान (त्रि०) भागता हुआ।
पानमत्त (त्रि०) पीनेमें लगा हुआ।
प्रचेतस् (पु०) वरुण, उदार चित्त।
प्रवीण (त्रि०) चतुर, हुशियार।
प्रसविनी (स्त्री०) उत्पन्नकरने वाली।
प्रकृति (स्त्री०) स्वभाव।
प्रांशु (पु०) तेजस्वी।

ब

बोद्धृ (पु०) जाननेवाला।

भ

भविनी (स्त्री०) होनेवाली।
भव्य (पु०) धर्मात्मा, श्रेष्ठ।
भेक (पु०) मेंढक।

म

मरीचिमालिन् (पु०) सूर्य।

शब्दकोष ।

शब्द अर्थ

अकुलीन (वि०) नीचकुलका ।
अनगारिन् (पु०) घररहित ।
अनन्यवृत्ति (वि०) जिसका चित्त एक स्थानमें लगा हो ।
अनुज (वि०) छोटा भाई, पिछाड़ी पैदा होनेवाला ।
अभिभूत (वि०) तिरस्कृत ।
अपेय (वि०) पीनेके अयोग्य ।
अयत्नरमणीय (वि०) स्वभावसे मनोहर ।
अर्हणा (स्त्री०) पूजा, सत्कार ।
आगन्तुक (वि०) आनेवाला अतिथि ।

इ

इन्दु (पु०) चन्द्रमा ।

उ

उद्भिद् (पु०) पेड़, वनस्पति ।
उन्मनस (वि०) पागल ।
उपदेष्टृ उपदेशक ।

ऋ

ऋजु (वि०) सरल, सीधा ।
एतावत् (वि०) इतना ।
कपोत (पु०) कबूतर, परेवा ।

शब्द अर्थ

क

कर्मकृत् (वि०) काम करनेवाला ।
कंसपरिमृज् (पु०) कृष्ण, कांसेको साफ करनेवाला, कसेरा ।
कारु (पु०) बढ़ई ।
कुटीर (पु०) झोपड़ी ।
कोट्टपाल (पु०) कोतवाल ।
क्रय (पु०) बेचना, बिक्री ।

ख

खनित्र (न०) फावड़ा, जमी खोदनेका शस्त्र ।

ग

गगन (न०) आकाश ।
गरिमन् (पु०) बड़प्पन ।
गोत्रभिद् (पु०) इन्द्र ।

च

चटिका (स्त्री०) एक तरहका पक्षी ।
चारु (वि०) सुन्दर, अच्छा ।

ज

ज्योत्स्ना (स्त्री) चांदनी ।

त

तक्ष (भ्वा० धा०) छीलना ।

शब्द — अर्थ

तडाग (पु०) तालाब।

तण्डुल (पु०) चावल।

तृष्णा (स्त्री०) चाह, प्यास।

द

दावानल (पु०) वनकी आग।

दुःसह (त्रि०) सहनेमें दुःख देने वाला।

दैवज्ञ (पु०) पुरोहित।

दोग्धृ (पु०) दुहनेवाला।

ध

धूसर (त्रि०) मटीला फीके रंगका।

धृत (त्रि०) धारणकिया हुआ। पकड़ा गया।

धौत (त्रि०) धोया गया, पवित्र।

न

नद (पु०) तालाब।

नरपुंगव (पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य।

नव (त्रि०) नया, नवीन।

नवोढा (स्त्री०) नई विवाहित।

निरूपयती (स्त्री) देखती हुई।

निर्बोध (त्रि०) मूर्ख।

नीड (पु०) घोसला।

नृशंस (त्रि०) क्रूर, मनुष्य घातक।

प

पयस्विनी (स्त्री०) दूध या पानी वाली।

पर (त्रि०) दूसरा, तत्पर।

परशु (पु०) फरसा।

परायण (त्रि०) तत्पर।

पलायमान (त्रि०) भागता हुआ।

पानमत्त (त्रि०) पीनेमें लगा हुआ।

प्रचेतस् (पु०) वरुण, उदार चित्त।

प्रवीण (त्रि०) चतुर, हुशियार।

प्रसविनी (स्त्री०) उत्पन्नकरने-वाली।

प्रसूति (स्त्री०) सतान।

प्रांशु (पु०) तेजस्वी।

ब

बोद्धृ (पु०) जाननेवाला।

भ

भवित्री (स्त्री०) होनेवाली।

भव्य (पु०) धर्मात्मा, श्रेष्ठ।

भेक (पुं०) मेंडक।

म

मरीचिमालिन् (पु०) सूर्य।

मलीमस (वि०) मैला।
मागध (वि०) मगधदेशका।
मानस (पु०) एक तालाब।
मृगराज (पु०) सिंह।
मृदु (वि०) कोमल।
मेध्य (वि०) पवित्र।
मैथिल (वि०) मिथलादेशका।

य

यशस्कर (वि०) कीर्तिको करने वाला।
युगल (न०) जोडा दो।

र

रजत (न०) चांदी।
रज्जु (पु०) रस्सी।
रवि (पु०) सूरज।
राजमार्ग (पु०) सडक।
रुद्ध (वि०) रुका हुआ।

व

वपुष्मत (वि०) प्राणी, मोटे शरीर वाला।
वसन (न०) कपडा।
वाष्प (न०) भाफ।
विधि (पु०) भाग्य, ब्रह्मा।
विपन्न (वि०) दुखी।
विपुल (वि०) बहुत
विभावसु (पु०) अग्नि

श

शयालु (वि०) सोनेवाला।
शशिन् (पु०) चांद, चंद्रमा।
शाल्मलि (पु०) सेमरका पेड।
शुभ्र (वि०) सफेद, श्वेत।
श्यामल (वि०) हरी, नीली।
श्यामायमान (वि०) नीला होता हुआ।

स

सन्मति (पु०) महावीरस्वामी, (वि०) श्रेष्ठबुद्धिवाला।
सलिल (न०) जल।
सन्निभ (वि०) तुल्य, बराबर।
संभव (वि०) उत्पन्न हुआ, उत्पत्ति।
सुतीक्ष्ण (वि०) बहुत तीखा, तेज।
सूपकार (पु०) रसोइया।
स्थविष्ठ (वि०) अतिस्थूल, मोटा।
स्थास्नु (वि०) अचल, एक
स्थिति
स्वैर
[illegible]